क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1	सामाजिक समूह कार्य का अर्थ, परिभाषा, उदेश्य एवं तत्व	1-6
2	सामाजिक समूह कार्य का समाज कार्य से संबंध	7-9
3	सामाजिक समूह कार्य में निपुणता	10-14
4	स्व-समूह कार्य की अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त	15-17
5	सामाजिक समूह कार्य के प्रारूप	18-24
6	सामाजिक समूह कार्य में कार्यक्रम नियोजन एवं विकास	25-31
7	सामाजिक समूह कार्य में कुशलता प्राप्ति	32-40
8	सामूहिक प्रक्रियाएँ	41-50
9	सामाजिक समाज कार्य में कार्यकर्ता की भूमिका	51-55
10	सामाजिक समूह कार्य में समूह की भूमिका	56-59
11	सामाजिक समूह कार्य में संस्था की भूमिका	60-66
12	सामाजिक समूह कार्य में टीम नर्माण	67-70

AEOI

पुस्तक के बारे में.....

सामाजिक समूह कार्य समाज कार्य की लोकतांत्रिक प्रणाली है। इसमें समूह के सदस्यों में रचनात्मक संबंध स्थापित करने का प्रयास दिया जाता है। समूह के सदस्यों में आत्मनिर्देशन की क्षमता का विकास किया जाता है। सामाजिक समूह कार्य से संबंधित अवधारणाओं, सिद्धान्तों, उद्देश्य, प्रणालियों इत्यादि के संबंध में प्रकाश डालना हो प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य है। प्रस्तुत पुस्तक में सोलह अध्यायों का समावेश हैं जिसमे सामाजिक समूह कार्य के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों के संबंध में प्रकाश डाला गाया है।- सामाजिक समूह कार्य का अर्थ, परिभाषाएँ, उद्देश्य एवं तत्व, सामाजिक समूह कार्य का सामाजकार्य से संबंध, समूह कार्य का उद्‌भव, सिद्धान्त, निपुणताएँ, स्व-समूह कार्य समूह कार्य के प्रारूप, कार्यक्रम नियोजन एवं विकास, समूह कार्य में कुशलता प्राप्ति, सामूहिक प्रकियाएँ, कार्यकर्ता की भूमिका। समूह की भूमिका, संस्था की भूमिका। टीम निर्माण, विभिन्न प्रणालियों में अंत संबंध इत्यादि ।

सामाजिक समूह कार्य की विभिन्न पक्षों को समायोजिक करके एक सारगर्मित अध्ययन सामग्री का संकलन ही इस पुस्तक के लेखन का प्रमुख लक्ष्य है ।

AEOI

अध्याय 1

सामाजिक समूह कार्य का अर्थ, परिभाषा, उदेश्य एवं तत्व

(Meanlgn, Definitions, Alms and Elements of Social Group work)

सामूहिक जीवन का आधार सामाजिक संबंध है। मॉटेस्वक्यू के अनुसार सामाजिक सम्बन्धों का तरीका जैविकीय निरंतरता है। सामूहिक जीवन व्यक्ति के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसकी भौतिक आवश्यकताएँ महत्वपूर्ण है। जहाँ सामाजिकता में मनुष्य को अस्तित्व प्रदान किया है, वहीं पर दरिद्रता, निर्धनता, बेरोजगारी, स्वास्थ्य, विचलन, समायोजन सम्बंधी समस्याओं का विकास हुआ, जिसके फलस्वरूप समाज ने अनेक प्रकार के सुरक्षात्मक कदम उठाए। जब सामूहिक जीवन में कोई व्यवधान उत्पन्न हो जाता है तो व्यक्ति अस्त-व्यस्त तथा विघटित हो जाता है। सामाजिक सामूहिक कार्य इस प्रकार की समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करता है। सामाजिक समूह कार्य द्वारा सामाजिक जीवन-धारा में भाग लेने के मार्ग में व्यवधान उत्पन्न करने वाले तत्वों को सामूहिक प्रकिया के प्रभावकारी प्रयोग द्वारा नियंत्रित किया जाता है ।

सामाजिक समूह कार्य का अर्थ (Meaning of Social Group Work)

सामाजिक समूह कार्य समाज कार्य की एक प्रणाली है जो सामूहिक क्रियाओं द्वारा रचनात्मक सम्बंध स्थापित करने की क्षमता का विकास करता है। इसमें समूह ही सेवार्थी हुआ करता है। समाज कार्य की अन्य पद्धतियों की भाँति इस पद्धति में प्रधानत: ध्यान पूरे समूह की स्थिति और विकास पर रखा जाता है। किन्तु यह स्वभावत: तभी संभव होता है जब कि उसके निर्माता अवयव व्यक्ति की स्थिति और विकास पर भी ध्यान रखा जाता है और प्रयास किया जाता है कि इन दोंनो का पारस्परिक विधायी सहयोग हो ।

सामूहिक कार्य समूह के माध्यम से व्यक्ति की सहायता करता है। समूह द्वारा ही व्यक्ति में शरीरिक, बौद्धिक तथा सांस्कृति विशेषताओं को ग्रहण कर समायोजन के योग्य बनाया जाता है।

सामाजिक समूह कार्य की परिभाषाएँ (Definitions of Social Group work) -

सामाजिक समूह कार्य को व्यवस्थित ढंग से समझने के लिए कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित है-

न्यूज टेट्र (1935)-'' स्वैच्छिक संघ द्वारा व्यक्ति के विकास तथा सामाजिक सामायोजन पर बल देते हुए तथा एक साधन के रूप इस संघ का उपयोग सामाजिक इच्छित उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षा प्रक्रिया के रूप में सामूहिक कार्य को परिभाषित किया जा सकता है।''

क्वायल, ग्रेस (1939)-''सामाजिक समूह कार्य का उद्देश्य सामूहिक परिस्थितियों में व्यक्तियों की अन्त: क्रियाओं द्वारा विकास करना तथा ऐसी सामूहिक स्थितियों को उत्पन्न करना जिसमे समान उद्देश्यों के लिए एकीकृत, सहयोगिक सामूहिक क्रिया संपन्न हो सके।''

विल्सन एण्ड राइलैण्ड (1949)- ''सामाजिक समूह सेवाकार्य एक प्रक्रिया और एक प्रणाली है, जिसके द्वारा सामूहिक जीवन एक कार्यकर्त्ता द्वारा प्रभावित होता है जो समूह की परस्पर संबंधी प्रक्रिया को उद्देश्य प्राप्ति के लिए सचेत रूप से निर्देशित करता है जिससे प्रजातान्त्रिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके ।''

कोनोप्का- सामाजिक समूह कार्य समाज कार्य की एक प्रणाली है जो व्यक्तियों की सामाजिक कार्यात्मकता बढ़ाने में सहायता प्रदान करती है। उद्देश्यपूर्ण सामूहिक अनुभव द्वारा व्यक्तिगत, सामूहिक और सामुदायिक समस्याओं को प्रभावकारी ढंग से सुलझाने में सहायता प्रदान करती है।''

ट्रैकर- '' सामाजिक समूह कार्य एक प्रणाली है जिसके द्वारा व्यक्तियों की सामाजिक संस्थाओं के अन्तर्गत के समूहों में एक कार्यकर्ता द्वारा सहायता की जाती है। यह कार्यकर्ता कार्यक्रम संबंधी क्रियाओं में व्यक्तियों के परस्पर संबंध प्रक्रिया का मार्गदर्शन करना है जिससे वे एक-दूसरे से संबंध स्थापित कर सके और वैयक्तिक, सामूहिक एवं सामुदायिक विकास की दृष्टि से अपनी आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के अनुसार विकास के सुअवसरों को अनुभव कर सकें ।''

हैमिल्टन (1949)- '' सामाजिक समूह कार्य एक मनोसामाजिक प्रक्रिया है जो नेतृत्व की योग्यता और सहकारिता के विकास से उतनी ही संबन्धित है, जितनी सामाजिक उद्देश्य के लिए सामूहिक अभिरूचियों के निर्माण से है।''

कर्ले, आड्म (1950)- '' सामूहिक कार्य के एक पक्ष के रूप में, सामूहिक समाज कार्य का उद्देश्य, समूह के अपने सदस्यों के व्यक्तित्व परिधि का विस्तार करना और उनके मानवीय सम्पर्कों को बढाना है। यह एक ऐसी प्रणाली है जिसके माध्यम से व्यक्ति के अन्दर ऐसी क्षमताओं का विकास किया जाता है, जो उसके अन्य व्यक्तियों के साथ सम्पर्क बढ़ाने की ओर निर्देशित होती है ।''

सामाजिक समूह कार्य की विशेषताएँ:- (Characteristics of Social Group Work):-

उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण के आधार पर सामूहिक सेवा कार्य की निम्नलिखित विशेषताएँ है-

1- वैज्ञानिक ज्ञान, प्रविधि, सिद्धान्त एवं कुशलता पर आधारित प्रणाली ।

2- समूह में व्यक्ति का महत्व ।

3- किसी कल्याणकारी संस्था के निर्देशन में किया जाता है।

4- व्यक्ति की सहायता समूह के माध्यम से प्रदान की जाती है।

5- सेवा संबंधी क्रियाकलाप में समूह स्वयं एक उपकरण होता है।

6- इससे प्रशिक्षित कार्यकर्ता कार्यक्रमों संबंधी क्रियाकलापों में समूह के अन्दर अत: क्रियाओं का मार्गदर्शन करने में अपने ज्ञान, कुशलता व अनुभव का प्रयोग करता है।

7- सामूहिक समाज कार्य के अन्तर्गत समूह में व्यक्ति व समुदाय के अंश स्वरूप का समूह केन्द्रबिन्दु होता है।

8- सामूहिक समाज कार्य के अभ्यास में केन्द्रीय या मूल तत्व सामूहिक संबंधो का सचेत व निर्देशित प्रयोग है।

सामाजिक समूह कार्य के उद्देश्य (Aims of Social Group work):-

सामूहिक समाज कार्य का प्रमुख उद्देश्य समूह के माध्यम से व्यक्तियों में आत्मविश्वास आत्मनिर्भरता एवं आत्मनिर्देशन का समुचित विकास करना है। सामाजिक कार्यकर्ता सेवार्थियों में सामंजस्य को बढ़ाने और सामूहिक उत्तरदायित्व एवं चेतना का विकास करने में योगदान देता है। सामूहिक समाज कार्य द्वारा व्यक्तियों में इस प्रकार की चेतना का विकास किया जाता है। जिसमें वे समूह और समुदायों के क्रियाकलापों में बुद्धिमत्तापूर्वक भाग ले सकते है। उन्हें अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओ, भावनाओ, आदि की अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है।

सामाजिक समूह कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य है-

1- जीवनोपयोगी आवश्यकताओं की पूर्ति करना - सामूहिक कार्य का प्रारम्भ आर्धिक समस्याओं का समाधान करने से हुआ है। परन्तु समय के साथ-साथ यह अनुभव किया गया कि आर्थिक आवश्यकता का समाधान सभी समस्याओं का समाधान नहीं है। स्वीकृति, प्रेम सामूहिक अनुभव, सुरक्षा आदि ऐसी आवश्वकताएँ हैं जिनकी पूर्ति आवश्यक है। इस आधार पर अनेक संस्थाओं का विकास हुआ जिन्होंने इन आवश्यकताओं की पूर्ति का कार्य प्रारम्भ किया। आज समाज कार्यकर्ता समूह में व्यक्तियों को उनके एकाकीपन की समस्या का समाधान करता है, भागीकरण को प्रोत्साहन देता है तथा सुरक्षा की भावना का विकास करता है।

2. सदस्यों को महत्व प्रदान करना - आधुनिक युग में बढ़त भौतिकतावाद के कारण व्यक्ति का कोई महत्व न होकर धन, मशीन तथा यन्त्रों का महत्व हो गया है। इसके कारण व्यक्ति में निराशा तथा हीनता के लक्षण अधिक प्रकट होने लगे हैं। प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि उसका कुछ महत्व हो तथा समाज में सम्मान हो सामूहिक कार्यकर्ता समूह के सभी व्यक्तियों को समान अवसर सुलभ करता है तथा उन्हें उचित स्थान व स्वीकृति देता है।

3. सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता का विकास करना - व्यक्ति की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यता सामंजस्य प्राप्त करने की होती है । व्यक्ति इससे जीवन रक्षा के अवसर प्राप्त करता है तथा बाह्य पर्यावरण को समझ कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति के जीवन काल में अनेकानेक समस्याऐं घेरे रहती है और समायोजन स्थापित करने के लिए प्रेरित करती है। सामूहिक कार्यकर्ता सामूहिक अनुभव द्वारा व्यक्ति की सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता प्रदान करता है।

सामाजिक समूह कार्य के तत्व (Elements of Soocial Group Work)

सामूहिक समाज कार्य एक प्रणाली है जिसके द्वारा सेवा प्रदान करता है, जिससे उसके व्यक्तित्व का संतुलित विकास संभव होता है। इस प्रकार सामूहिक समाज कार्य में निम्नलिखित तीन तत्व/अंग प्रमुख है। -

(1) **कार्यकर्ता (Worker)** - सामाजिक सामूहिक कार्य में कार्यकर्ता एक ऐसा व्यक्ति होता है जो उस समूह का सदस्य नहीं होता है जिसके साथ वह कार्य करता है। इस कार्यकर्ता में कुछ कुशलताएँ होती हैं, जो व्यक्तियों की संधियों व्यवहारों तथा भावनाओं के ज्ञान पर आधारित होती है। उसमें समूह के साथ कार्य करने की क्षमता होती है, तथा सामूहिक स्थिति से निपटने की क्षमता एवं सहनशीलता होती है। उसका उद्देश्य समूह को आत्म-निर्देशित तथा आत्म-संचालित करना होता है तथा वह ऐसे उपाय करता है जिससे समूह का नियंत्रण समूह सदस्यों के हाथ में रहता है। वह सामूहिक अनुभव द्वारा व्यक्ति में परिवर्तन एवं विकास लाता है। कार्यकर्ता को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है -

1. समुदाय की स्थापना ।
2. संस्था के कार्य तथा उद्देश्य।
3. संस्था के कार्यक्रम तथा सुविधाएँ।
4. समूह की विशेषताएँ।
5. सदस्यों की संधियॉ, आवश्यकताएँ तथा योग्यताएँ।
6. अपनी स्वयं की कुशलताएँ तथा क्षमताएँ ।
7. समूह की कार्यकर्ता से सहायता प्राप्त करने की इच्छा ।

सामूहिक कार्यकर्ता अपनी सेवाओं द्वारा सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रायास करता है। वह व्यक्ति की सकारात्मक विकास तथा के लिए
करता है। सामाजिक संबधों की आधार मानकर शिक्षात्मक तथा विकासात्मक
का आयोजन व्यक्ति की समस्याओं के समाधान के लिए करता है ।

(2) **समूह (Group)**- सामाजिक सामूहिक कार्यकर्ता अपने कार्य का प्रारम्भ समूह के साथ करता है। और समूह के माध्यम से ही उद्देश्य की और अग्रसर होता है। वह व्यक्ति को समूह के सदस्य के रूप में स्वीकारता है तथा विशषताओं को पहचानता है।

समूह एक आवश्यक साधन होता है, जिसको उपयोग में लाकर सदस्य अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते है। जिस प्रकार का समूह होता है, कार्यकर्ता को उसी प्रकार की भूमिका का निर्वाह करना पडता है। सामान्य गति से काम करने के लिए समूह के सदस्यों में कुछ सीमा तक संधियों, उद्देश्यों, बौद्धिक स्तर, आयु तथा इच्छाओं में समानता होनी आवश्यक होती है।

इसी समानता पर यह निश्चित होता है कि सदस्य समूह में समान अवसर कहाँ तक प्राप्त कर सकेंगे तथा कहाँ तक उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा। समूह तथा कार्यकर्ता सामाजिक मनोरंजन तथा शिक्षात्मक क्रियाओं को अन्य सदस्यों के साथ सम्पन्न करते है तथा इसके द्वारा वे अपनी कुशलताओं का विकास करते है। लेकिन सामूहिक कार्य इस बात में विश्वास रखता है कि समूह का कार्य निपुणता प्राप्त करना नहीं है बल्कि प्राथमिक उद्देश्य प्रत्येक सदस्य का समूह में अच्छी प्रकार से समायोजन करता है। व्यक्ति समूह के द्वारा अनेक प्रकार के सामूहिक अनुभवों को प्राप्त करता है, जो उसके लिए आवश्यक होते हैं। समूह द्वारा वह मित्रों तथा संबंधियों का भाव सदस्यों में उत्पन्न करता है, जिससे सदस्यों की महत्वपूर्ण आवश्यकता ''मित्रों के साथ रहने की'' पूर्ति होती है।

वे माता-पिता के नियंत्रण से अलग होकर अन्य लोगों के साथ सामंजस्य करना सीखते हैं तथा निपुणता व विशेषीकरण प्राप्त करते है।

(3) **अभिकरण या संस्था (Agency or Institution)**- सामाजिक सामूहिक कार्य में संस्था का विशेष स्थान होता है, क्योंकि सामूहिक कार्य सस्थाओं के माध्यम से उत्पन्न हुआ है। संस्था की प्रकृति एवं कार्य, कार्यकर्ता की भूमिका को निश्चित करता है। सामूहिक कार्यकर्ता अपनी कुशलताओं का उपयोग संस्था के प्रतिनिधि के रूप में करता है, क्योंकि समुदाय संस्था के महत्व को समझता है तथा कार्य करने की स्वीकृति प्रदान करता है। अत: कार्यकर्ता के लिए आवश्यक होता है कि वह संस्था के कार्यो से भली-भांति परिचित हो। समूह के साथ कार्य प्रारम्भ करने से पहले कार्यकर्ता को संस्था की निम्न बातों को समझना जरूरी है-

1. कार्यकर्ता को संस्था के उदेश्यों तथा कार्यो का ज्ञान होना चाहिए, अपनी रूचियों की उन कार्यो से तुलना करके कार्य करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।
2. संस्था की सामान्य विशेषताओं, से अवगत होना तथा उसके कार्य क्षेत्र की जानकारी होनी चाहिय ।
3. उसकी इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि किस प्रकार संस्था समूह की सहायता करती है तथा सहायता के कौन-कौन से साधन व स्त्रोत है।
4. संस्था में सामूहिक संबंध स्थापना की दशाओं का ज्ञान होना चाहिए ।
5. संस्था के कर्मचारियों से अपने संबंध की जानकारी होनी चाहिए ।
6. कार्यकर्ता की जानकारी होनी चाहिए कि ऐसी संस्थाएँ तथा समूह कितने है जिनमें किसी समस्याग्रस्त व्यक्यिों को सन्दर्भित किया जा सकता है ।
7. संस्था द्वारा समूह के मूल्यांकन की पद्वति का पता होना चाहिए ।

सामाजिक संस्था के माधम से ही समूह के सदस्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं तथा विकास की ओर अग्रसर होते हैं।

AEOI

अध्याय 2

सामाजिक समूह कार्य का समाज कार्य से संबंध (Relationship Between Social Group work With Social Work)

सामाजिक समूह कार्य सामाजिक कार्य की एक प्रणाली के रूप में सामूहिक क्रियाओं द्वारा व्यक्तियों में रचनात्मक संबंध स्थापित करने की योज्ञता का विकास करता है। व्यक्तित्व के विकास के लिए व्यक्ति की सामूहिक जीवन संबंधी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। जहाँ एक ओर सामूहिक सहभागिता व्यक्ति के लिए अवश्यक होती है, वहीं दूसरी ओर सहभागिता से समुचित लाभ प्राप्त करने के लिए सामूहिक जीवन में भाग लेने, अपनत्व की भावना का अनुभव करने, अन्य व्यक्तियों से संबंध स्थापित करने, मतभेदों को निपटाने तथा अपने हितों तथा समूह के हितों को ध्यान में रखकर कार्यक्रम नियोजित तथा संचालित करने की योग्यता होनी चाहिए।

समाज कार्य एक व्यवसायिक सेवा है जिसका आधार मानव संबंधो के ज्ञान व संबंधों की कुशलता पर है और जिसका संबंध आभ्यान्तर, वैयक्तिक अथवा आन्तर, वैयक्तिक समायोजन संबंधी समस्याओं से है जो अपूर्ण वैयक्तिक सामूहिक और सामुदायिक आवश्यकताओं से उत्पन्न होती है। इसका उद्देश्य व्यक्ति, समूह तथा समुदायों को विकसित उन्नत तथा समृद्ध करना है।

समाज कार्य के उद्देश्यों की पूर्ति उसकी विभिन्न प्रणालियों द्वारा की जाती है जिनमें वैयक्तिक सेवा कार्य, सामूहिक सेवा कार्य तथा सामुदायिक संगठन मुख्य हैं।

(1) सिद्धान्त के आधार पर संबंध - समाज कार्य की विभन्न प्रणालियों में लगभग समान सिद्धान्तों का उपयोग होता है तथा मूलरूप से इनमें मानवतावादी सिद्धान्त प्रमुख होता है। वैयक्तिक समाज कार्य सेवार्थी समाज सामान्य व्यक्ति होता है। सामुहिक कार्य में समूह की इच्छा से कार्य किया जाता है। समूह के सदस्य प्रथम चरण से लेकर अन्तिम चरण तक महत्व पूर्ण होते हैं। समूह में होने वाली समस्त अन्त:क्रियाएँ जैसे समूह निमार्ण, उद्देश्यों का निर्धारण, कार्य प्रणाली, कार्यक्रम नियोजन एवं निधारण संचालन, नेतृत्व तथा निर्णय आदि सदस्यों द्वारा ही प्रेरित होते हैं। कार्यकर्ता

केवल बाहर के निर्देशन करता है। सामुदायिक संगठन में भी लगभग इन्हीं सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाता है। व्यक्ति और समूह की तरह समुदाय की इसी स्थिति में स्वीकार किया जाता है जिस स्थित में वह होता है। समुदाय की उपयुक्तता के अनुसार साथ-साथ कार्य इस आधार पर होता है। कि समुदाय की स्वयं अपनी समस्या का हल करने में समर्थ बन सके।

(2) प्रक्रिया के आधार पर संबन्ध - सामाजिक समूह कार्य, वैयक्तिक सेवा कार्य तथा समुदायिक संगठन प्रणालियों में यह प्रयत्न किया जाता है। कि व्यक्ति समूह तथा समुदाय स्वयं अपनी समस्याओं के निराकरण में समर्थ बन सके। आत्मविश्वास की भावना का विकास हो तथा क्षमता में वृद्धि हो। वैयवितक सेवा कार्य में व्यक्ति पर विशेष बल दिया जाता है। व्यक्ति स्वयं कार्यकर्ता के समक्ष अपनी समस्या का निरूपण करता है तथा सहायता की इच्छा प्रकट करता है। कार्यकर्ता वार्तालाप के माध्यम से सेवार्थी की समस्या को समझता है। तथा उपचार और निदान की प्रक्रिया संचालित करता है। सामूहिक समाज कार्य में कार्यकर्ता या तो स्वयं समूह का निर्माण करता है। अथवा पहले से संगठित समूह के साथ कार्य करता है। वह समूह को अधिकार देता है कि वही कार्यक्रम का क्रियान्वयन करे तथा अभिष्ट उद्देश्य प्राप्त करें। वह केवल अन्त:क्रिया का निर्देशन तथा मूल्यांकन करता है। सामुदायिक संगठन में पुरे सदस्यों के हितों के लिए कार्य होता है। कार्यकर्ता मनोवैज्ञानिक आधार के स्थान पर सामाजशास्त्रीय आधार को अधिक महत्व प्रदान करता है।

(3) उद्देश्य के आधार पर संबन्ध - समाज कार्य की सभी विधियों का उद्देश्य व्यक्ति की अधिक से अधिक सहायता करना है जिससे वह अपनी समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बन सके तथा विकास की गति में वृद्धि ला सके। सामुहिक कार्य में कार्यकर्ता व्यक्ति की सहायता समूह के माध्यम से करता है। यद्यपि सामूहिक कार्य में केन्द्रबिन्दु समूह होता है। परन्तु व्यक्तियों के हितों का पूरा ध्यान रखा जाता है। आवश्यकता पढने पर वैयक्तिक सेवा कार्य की सहायता ली जाती है। इसी प्रकार वैयक्तिक सेवा कार्य तथा सामुदायिक संगठन का उद्देश्य भी व्यक्ति की सहायता करना है जिससे वह अपना विकास तथा उन्नति कर सकने में सक्षम बन सके। इस प्रकार हम देखते हैं कि इन समस्त विधियों का उद्देश्य व्यक्ति की इस प्रकार सहायता करना है जिससे वह स्वयं समर्थ हो सके। कार्यकर्ता को केवल उसकी आवश्यकता के अनुकूल सहायता करता है।

(4) कार्यक्रम के विकास के आधार पर संबंध - समाज कार्य में कोई भी कार्यक्रम पहले से निश्चय नहीं किया जाता है। जब समूह में अंत:क्रिया का संचार तो कार्यक्रम स्वत: उत्पन्न हो जाते हैं। वैयक्तिक सेवा कार्य में प्रथमत: सेवार्थी तथा कार्यकर्ता के मध्य संबंध स्थापित होता है। फिर अन्त:क्रिया का संचार होता है और

तब कार्यात्मक उपचार का रास्ता तैयार होता है। सामूहिक समाजकार्य में पहले कार्यात्मक संबंध स्थापित होता है फिर कार्यक्रम का विकास होता है।

(5) कार्य की रूपरेखा निश्चित करने के आधार पर संबंध - समाज कार्य की तरह सामूहिक समाज कार्य में यह विशेषता है कि कोई भी कार्य सेवार्थी पर दबाब डालकर नहीं कराया जाता वे जिस प्रकार और जैसा कार्य करने की इच्छा रखते हैं वैसे ही कार्य किया जाता है। वैयक्तिक सेवाकार्य में सेवार्थी का अपने उपाय तथा उपचार के चुनाव की पूरी छूट होती है। यद्यपि कार्यकर्ता सम्पूर्ण विवरण तथा उपचार प्रक्रिया प्रस्तुत करता है। सामूकि कार्य में भी समूह सदस्य स्वयं कार्यक्रम का चुनाव करते तथा निर्णय में भाग लेते हैं। सामुदायिक संगठन में कार्यकर्ता केवल आंतरिक समस्याओं को प्रस्तुत करता है और संभव उपायों को स्पष्ट करता है और इसे समुदायपर छोड देता है कि समस्या समाधान का कौन सा तरीका उसे पसन्द है।

(6) व्यक्ति के ज्ञान के आधार पर संबंध-समाज कार्य के सिद्धांतो में व्यक्ति के ज्ञान पर विशेष बल दिया जाता है। सबसे पहले व्यक्ति के विषय में संपूर्ण जानकारी प्राप्त की जाती है तथा समस्या का निदान वैयक्तिक अध्ययन के आधार पर किया जाता है। वैयक्तिक समाज कार्य में सेवाकर्ता सेवार्थी के जीवन से संबद्ध समस्त घटनाओं का अभिलेखन करता है, उसी अनुसार उपचार प्रक्रिया अपनाता है। सामूहिक कार्य में यद्यपि कार्यकर्ता का ध्यान समूह पर केन्द्रित होता है, परन्तु वह वैयक्तिकरण का सिद्धान्त अवश्य अपनाता है। प्रत्येक सदस्य की आदतों, रूचियों मनोवृत्तियों आदि का ज्ञान रखता है। सामुदायिक संगठन में व्यक्ति विशेष के विषय में जानकारी रखना कठिन होती है। लेकिन कार्यकर्ता समूह के माध्यम से कोशिश करता है। वह वैयक्तिक सम्पर्क भी रखता है।

(7) प्रत्यय के आधार पर संबंध -वैयक्तिक सेवा कार्य तथा सामूदायिक संगठन में लगभग समान प्रत्यय होते हैं कार्यकर्ता इन विधियों में विभिन्न रूपों से कार्य करता है तथा जब वह देखता है कि व्यक्ति समूह या समुदाय स्वयं उचित कदम नहीं उठा सकते तो वह अधिनायक या सत्तावादी हो जाता है तथा अन्य उसके आदेशों का पालन करते हैं। कभी-कभी वह स्वयं आदर्श बन जाता है और व्यक्ति साधनों को पहचान नहीं पाते हैं। वह समूह में भाग लेने तथा कुशलताओं तथा अभिवृत्तियों के विकास में सहायता प्रदान करता है। तथा सामंजस्य स्थापित करने में सहयोग प्रदान करता है। समूह या समुदाय के साथ कार्य करते हुए वैयक्तिक संबंध भी कायम रखता है।

अध्याय 3

सामाजिक समूह कार्य में निपुणता (Skills in Social Group Work)

किसी भी व्यवसाय के लिए निपुणताओं का होना उसके स्वरूप व महत्व को स्पष्ट करता है। समाज कार्य की उन्नति एवं विकास में निपुणताओं का विशेष महत्व है, क्योकि यह मानव व्यवहार के विकास से संबंधित है औ वे समस्यायें तब तक दूर नहीं हो सकतीं जब तक उसमें विशेष कौशल और विशेष योग्यता का विकास नही होता ।

निपुणता का अर्थ (Meaning of Skills) ट्रैकर के अनुसार ''निपुणता कार्यकर्ता की विशेष परिस्थितियों में ज्ञान एवं समय के उपयोग की क्षमता है।'' विरजाइना रॉबिन्सन के अनुसार, ''निपुणता का अर्थ विशिष्ट वस्तु के नियंत्रण तथा कार्यरूप में परिणत करने की क्षमता है जिससे वस्तु में होने वाला परिवर्तन उसकी उपयोगिता तथा गुण उसकी क्षमता से प्रभावित होता है।

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति निपुणताओं की प्राप्ति ज्ञान वृद्धि एवं कार्य अनुभव से करता है। जब वह किसी कार्य में लगातार कार्यरत रहता है, तो निपुणताएँ स्वतः आ जाती हैं। कार्यकर्ता को अपने समूह एवं मनोवैज्ञानिक प्रत्ययों का ज्ञान होना आवश्यक है तथा इन प्रत्ययों को समूह में किस प्रकार प्रयोग में लाए, इसका भी ज्ञान होना आवश्यक होता है।

सामाजिक समूह कार्य की आवश्यक निपुणताएँ (Important Skills in social group work) - ट्रेकर ने सामूहिक कार्य कों निम्न निपुणताओं का उल्लेख किया है -

1. उद्देश्यपूर्ण संबंध स्थापित करने की निपुणता
2. समूह परिस्थिति विश्लेषण की निपुणता,
3. समूह के साथ भाग लेने में निपुणता
4. समूह की भावनाओं से निपटने में निपुणता
5. कार्यक्रम के विकास में निपुणता
6. संस्था और सामुदायिक साधनों के उपयोग में निपुणता
7. मूल्यांकन में निपुणता

निपुणता के अंग - निपुणता के तीन प्रमुख अंग है-

1. ज्ञान
2. भावना
3. क्रिया

फिलिप्स ने सामूहिक समाज कार्य की चार प्रमुख निपुणताओं का उल्लेख किया है

1. संस्था के कार्यों के प्रयोग की निपुणता,
2. भावनाओं के संचार की निपुणता,
3. वर्तमान की वास्तविकता के उचित प्रयोग की निपुणता
4. सोमूहिक संबंधों को उत्तेजित करने की तथा उपयोग करने की निपुणता।

उपरोक्त निपुणताओं के अन्तर्गत संस्था के प्रयोग में आने वाली निम्न आवश्यक निपुणताएँ हैं-

संस्था के कार्यों के प्रयोग की निपुणता-

1. अन्तर्गाही निपुणता,
2. समूह का संस्था से संबंध स्थापित करने की निपुणता,
3. समूह कार्य प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति की सहायता की निपुणता,
4. सामुहिक क्रियाओं के अतिरिक्त या बाहर व्यक्ति को समझने तथा सहायता करने की निपुणता,
5. संदर्भित करने की निपुणता ।

भावनाओं के संचार की निपुणता -

1. कार्यकर्ता को अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रण रखने तथा उपयोग करने की निपुणता,
2. समूह सदस्यों की भावानाओं के समझने तथा उनसे निपटने की निपुणता,
3. सामूहिक भावनाओं को संचार की निपुणता।

वर्तमान वास्तविकता के उपयोग की निपुणता -

1. सामूहिक रूचि का उद्देशीय क्रियाओं के लिए उपयोग करने की निपुणता,
2. समूह को उत्तरदायी निर्णय लेने में सहायता देने की निपुणता।

समूह संबंधों को उत्तेजित करने तथा उपयोग करने की निपुणता -

1. सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए कार्यक्रमों के उपयोग की कुशलता

इस प्रकार सामुहिक सेवाकार्य में कार्यकर्ता उपरोक्त निपुणताओं के माध्यम से निरंतर संस्था के कार्यो की व्याख्या एवं पुनर्व्याख्या करता है तथा अपनी भूमिका का भी विश्लेषण करता है।

सामाजिक समूह कार्य में सामूहिक प्रक्रिया (Group Processes in Social Group Work -सामाजिक समेह कार्य अभ्यास से व्यक्तित्व परिवर्तन प्रगति एवं विकास का प्राथमिक साधन है, तथा समूह के सदस्यों के बीच एक गतिशील अन्तःक्रिया का प्रमुख सिद्धांत है।

स्लेवसन के अनुसार, ''समूह के सदस्यों व नेताओं के बीच प्रजातांत्रिक सहभागिता के फलस्वरूप अन्तः क्रियाएँ जन्म लेती हैं जिससे मानवीय संबंधों का विकास होता है।''

डोरोथी स्पेलमेन के अनुसार,''सामुहिक प्रक्रिया तथा सामुहिक सेवाकार्य प्रक्रिया की अवधारणाएँ अलग-अलग होती हैं। सांमूहि सेवाकार्य में अन्तःक्रिया का निर्देशन कार्यकर्ता करता है। इस प्रकार कार्यकर्ता गतिशील अन्तःक्रिया के साथ ही कार्यक्रम के माध्यम से उपलब्ध विषय वस्तु का प्रयोग करता है।''

स्लेवसन के अनुसार सामुहिक प्रक्रिया के निम्नलिखित प्रकार हैं-

1. अन्तः उद्दीपन
2. अन्तः क्रिया
3. प्रेरणा या अनुगमन
4. गहनता
5. तटस्थता
6. तादाम्तीकरण
7. आत्म सावन
8. ध्रुवी करण
9. स्पर्धा
10. प्रक्षेपण
11. समाकलन
12. रूढ़िवादिता।

बेवस्टर शब्दकोष - समाज कार्य में प्रक्रिया एक क्षणिक, निरन्तर एवं परस्पर संबंधी विकासात्मक प्रकृति की मानवीय क्रिया होती है जो विस्तुत स्वरूप की एकता को जन्म देती है।

मैकमिलन के अनुसार, ''सामाजिक प्रक्रिया समस्त मानवीय संबंधो की एवं समाजकार्य का कला के रूप में अभ्यास करने का माध्यम है। इसक अनुसार प्रक्रिया के तीन तत्व होते हैं -

1. व्यक्तिगत व्यवहार
2. सामुहिक संबंध
3. अन्तर्समूह संबंध

कुक-इन्होंने सामाजिक समूह कार्य प्रक्रिया के निम्नलिखित संबंधों का उल्लेख किया है-

1. व्यक्तिगत सदस्य या सदस्यों एवं समूह के अन्य सदस्यों के मध्य अन्तः वैयक्तिक संबंध।
2. प्रत्येक सदस्य तथा समूह के सामान्य कल्याण में मौलिक।
3. प्रत्येक सदस्य तथा समूह के सामान्य कल्याण में मौलिक।
4. व्यक्तिगत सदस्यों एवं सामुहिक कार्यकर्ता के मध्य अन्तर्वैयक्तिक संबंध।

ग्रेस क्वायल के अनुसार इसके मीन तत्व हैं -

1. समूह का उद्देश्य,
2. सदस्यता के प्रति निर्णय,
3. स्वरूप का निर्धारण।

इन्होंने सामुहिक प्रक्रिया की व्याख्या निम्न अन्य प्रक्रिया के संदर्भ में किया है-

1. स्वीकृति-अस्वीकृति,
2. समूह निर्माण,
3. समूह नियंत्रण
4. दलीय भावना
5. चिंतन एवं निर्णय लेना।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि दो या दो से अधिक व्यक्ति जब समूह का निर्माण करते हैं, उनके बीच विभिन्न पाकर के संबंध व अन्तःक्रियाएँ प्ररम्भ हो जाती हैं और जब समेह के सदस्य सामुहिक कार्यकर्ता की सहायता से समूह के सामान्य उद्दश्यों की ओर अग्रसर होते हैं तो अन्तः क्रियाओं एवं संबंधों की श्रंखला उत्पन्न हो जाती है। जिन्हें कार्यकर्ता समूह निर्माण एवं सदस्यों की सन्तुष्टि के लिए निर्देशित करता है तथा यही निर्देशित अन्तःक्रिया को प्रजातान्त्रिक सामूहिक प्रक्रिया अथवा सामूहिक सेवाकार्य प्रक्रिया व्यक्ति व समूह के विकास का मौलिक साधन बन जाती है। कुक के मतानुसार निर्मित समूह नहीं लेना चाहिए वरन् समूह को कार्यक्रम की एक प्रक्रिया स्वरूप देखना चाहिए, मगर कार्यक्रम को समूह पर अध्यारोपित नहीं करना चाहिए।

सामाजिक समूह कार्यकर्ता की भूमिका (Role of Social Group Worker)- अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ ग्रुप वर्कर्स ने सामाजिक समूह कार्य में कार्यकर्ता की निम्न लिखित भूमिका बताई हैं- कार्यकर्ता समूह के लक्ष्यों, उद्देश्यों एवं ध्येय को निश्चित करने में सहायता करता है। वह संस्था के उद्देश्यों को समझने सामुहिक भावना तथा अत्मचेतना का विकास करने में सहायता प्रदान करता है। कार्यकर्ता निम्न भूमिकाओं का निर्वहन करता है।

1. पथ-प्रदर्शक के रूप में - वह सदस्यों का संस्था व समुदाय की सुविधाओं एवं अन्य स्रोतों से अवगत कराता है जिनकी एन्हे आवश्कता तो होती है, परन्तु वे जानते नहीं हैं। वह सदस्यों को अपनी भूमिका का एहसास करता है तथा आवश्यक मुद्दों को स्पष्ट करता है। वह सामुहिक अन्त:क्रिया का निर्देशन करता है।

2. विशेषज्ञ के रूप में - कार्यकर्ता आवश्यकता पड़ने पर सदस्यों को विशेष सलाह देता है। वह समूह समस्या का विश्लेषण करता है तथा उनका निदान करता है।

3. सार्थककर्ता भूमिका - कार्यकर्ता समूह सदस्यों को अपनी आवश्यकता को समझने में सहायता करता है। वह उएन क्षत्रों को बदलता है जिनसे आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है तथा सदस्य सहयोग ले सकते हैं। सभी सदस्यों के भागीकरण को बढ़ावा देता है।

4. सूचनादाता के रूप में- कार्यकर्ता समूह की सहायता, लक्ष्य निर्धारण तथा लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीको को निश्चित करने में करता है। वह संस्था से सहायता लेने में समूह की मदद् करता है।

5. अधिवक्ता के रूप में - कार्यकार्ता सदस्यों की समस्याओं को उच्च अधिकारियों के समक्ष प्रेषित करता है तथा अवश्यक सेवायें प्रदान करने की सिफारिश करता है।

6. परिवर्तक के रूप में - कार्यकर्ता सदस्यों की आदतों में परिवर्तन लाने के लिए अनेक कार्यक्रम करता है, क्योंकि आदतों के कारण ही कभी-कभी समस्या उत्पन्न होती है और परिवार व समाज मे विघटन की स्थित उत्पन्न कर देती हैं।

7. चिकित्सक के रूप में - कार्यकर्ता समूह की कुछ समस्याओं का प्रयास पहले करता है जो अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं और जिनकी जडें काफी गहरी हैं। वह समूह को विघटनात्मक कारकों से परिचित करवाता है जिनका प्रभाव सीधे पडता है।

8. सहायक के रूप में - कार्यकर्ता समूह की सहायता लक्ष्य निर्धारण तथा लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीकों को निश्चित करने में करता है। वह संस्था से सहायता लेने में समूह की मदद् करता है। कार्यकर्ता अपनी सेवाओं द्वारा सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करता है, व्यक्ति को स्वतंत्र विकास तथा उन्नति के लिए अवसर प्रदान करता है तथा व्यक्तित्व के सामान्य निर्माण के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है तथा सामाजिक संबंधो को आधार मानकर विकासात्मक एवं शिक्षात्मक क्रियाओं का आयोजन व्यक्ति की समस्याओं के समाधान के लिए करता है।

अध्याय 4

स्व-समूह कार्य की अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त
(Concept and Theories of Self Group Work)

जब सामाजिक कार्यकर्ता समूह के सदस्यों को अपने लक्ष्यों को स्वयं प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करने हेतु निरंतर प्रोत्साहित करता है तो वे एक स्व-सहायता समूह के विकास हेतु सहभागी होते हैं। प्रारम्भ में आत्मनिर्भर होने के पूर्व समूह के सदस्यों को कार्यकर्ता से निरंतर निर्देश एवं नेतृत्व प्राप्त होता है। समूह चाहे तो स्थापित होने के पश्चात् पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी हो जाये अथवा स्व-समूह के रूप में विकसित होने के पश्चात् भी कार्यकर्ता निर्देश प्राप्त कर सकता है। (टोसलैण्ड एवं हैकर 1982)।

स्व-समूह कार्य की अवधारणा (Concepts of Self Group Work)- स्व-समूह कार्य एक प्रक्रिया है, जो संबंधो पर आधारित होती है। यह संबंध उन समूह सदस्यों तथा कार्यकर्ता के मध्य स्थापित होता है। जिनके मध्य वह कार्य करता है। समूह के सदस्यों को व्यक्तिगत तथा सामूहिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्यकर्ता आपने व्यावसायिक संबंधों का उपयोग करता है। स्वसमूह कार्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि कार्यकर्ता समूह के सदस्यों के अंतर्वैयक्तिक संबंधों का विकास करने तथा उपयोग करने की कितनी योग्यता, क्षमता, बुद्धि एवं निपुणता है।

कार्यकर्ता द्वारा समूह सदस्य स्वीकृत किये जाते हैं। उनके व्यवहार को स्वीकृत न किये जाने पर भी इसमें कभी नहीं आती है। वह उनके व्यवहार को सामूहिक अनुभव के माध्यम से समूह स्तर को बनाता है। यह उनकी आक्रमणकारी भावानाओं एवं प्रवृत्तियों को दूर करता है। वे यह महसूस नहीं करते हैं कि कार्यकर्ता उनको पसन्द नहीं करता है, या उपेक्षा करता है। वे कार्यकर्ता में अपने प्रति विश्वास रखते हैं, क्योंकि वह उनकी सहायता आवश्यकता पड़ने पर करता है तथा संबंधों का उचित एवं अर्थपूर्ण ढंग से उपयोग करता है, सभी संस्कृतियों के सदस्यों को समान रूप से मानता है, तभी भाग लेने के उन्हें समान अवसर देता है।

स्व-समूह कार्य के मूल्य (Values of Self-Group Work)- समूह जब स्वत: कार्य करते हैं तो उनके कुछ उद्देश्य, सिद्धान्त और मूल्य होते हैं। मूल्य के आधार पर समूह अपने कार्यों की रूपरेखा निर्धारित करते हैं। स्व-समूह कार्य के निम्नलिखित मूल्य हैं-

1. समूह सदस्यों की एकता और महत्व पर विश्वास
2. आत्म-निर्णय का अधिकार
3. आत्म-पूर्णता
4. विकास का मुख्य आधार संबंध
5. अल्पमत विचारों का महत्व
6. व्यक्तित्व अंतरों की मन्यता व स्वीकृति
7. समूह पर संस्कृति का प्रभाव
8. व्यवहार विभिन्न कारकों का प्रतिफल
9. परिवर्तन का विरोध
10. विकास के समान अवसर।

स्व-समूह कार्य के सिद्धान्त (Theories of Self-Group Work)- स्व-समूह कार्य के लिए अधिकांशत: सामाजिलक कार्यकर्ता सर्वाधिक व्यवस्थावादी सिद्धान्त का प्रयोग करते हैं (डगलस, 1979)। सभी समूह कार्य अभ्यास के लिए इसका विस्तृत ज्ञान आवश्यक है। सामाजिक व्यवस्था सिद्धान्त समूह को एक अंत: क्रियात्मक तत्व के रूपों में समझने का प्रयास करता है। संभवत: सामूहिक प्रकार्यता हेतु इस सिद्धान्त, का विस्तृत प्रयोग एवं अनुप्रयोग किया जाता है (एण्डरसन, 1979, ओल्सन, 1968, पारसंस, 1951), के अनुसार समूह सामाजिक व्यवस्था का एक अंग होते हैं जिसके विभिन्न अनन्योश्रित सदस्य एक सम्पूर्ण के रूप में एक स्थायी व्यवस्था एवं एकरूपता बनाने का प्रयास करते हैं। समूह सदैव अपने लक्ष्य की प्राप्त करने के एवं एक स्थायी एकरूपता बनाने में परिवर्तनीय माँग का सामना करते हैं। समूह की निरंतरता बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि वे इन परिवर्तनशील माँगों की पूर्ति करने हेतु संसाधनों की गतिशीलता बनाए रखें।

पारसंस बेल्स एवं शिल्स (1953) के अनुसार, एक व्यवस्था (सिस्टम्स) के चार प्रकार्य हैं -

(अ) समाकलन/एकीकरण-सह सुनिश्चित करना कि समूह के सभी सदस्य एकबद्ध हैं,

(ब) अनुकूलन - यह सुनिश्चित करना कि समूह पर्यावरण के अनुसार अपने को ढाल लेगा,

(स) पद्धति बद्धता - यह सुनिश्चित करना कि समूह अपने मूल उद्देश्य, पहचान एवं कार्य करने के तरीके को परिभाषित करे एवं उसमें निरंतरता बनाए रखें, एवं

(ह) लक्ष्य प्राप्ति - यह सुनिश्चित करना कि समूह अपने लक्ष्य के प्रति उसमें संलग्न रहकर उसकी प्राप्ति करेगा।

समूह के लिए आवश्यक है कि वे एकरूपता बनाये रखने के लिए उपरोक्त वर्णित चार प्रकार्यों की प्राप्ति करें जिसकी जिम्मेदारी समूह नेता के साथ-साथ सदस्यों की भी है। जरमेन एवं ग्लिटरमेन (1980), सिपारिन (1980) के अनुसार समूह की अपने पर्यावरण से लगातार अन्त:क्रिया चलती रहती है, वे पारिस्थितिकी तुत्र का हिस्सा बन जाते हैं। होमंस के अनुसार, प्रत्येक समूह की एक आंतरिक एवं बाह्य व्यवस्था होती है। आंतरिक व्यवस्था के अन्तर्गत समूह अपनी प्रकार्यता के दौरान विभिन्न गतिविधयाँ अन्त:क्रिया एवं नियमन करता है। बाह्य व्यवस्था के अन्तर्गत समूह उन दशाओं के साथ साम्यता बैठाने का प्रसास करता है जो समूह के व्यापक समाज एवं भैतिक वातावरण के संबंधों से उत्पन्न होती रहती हैं।

स्व-सहायता समूह के विकास के चरण (Steps in Development of Self-Help Group)-

1. सदस्यों का चयन
2. संगठन के नियम-विनियम पर चर्चा
3. पारस्परिक सौहार्द एवं लेखा पद्धति
4. आय वृद्धि कार्यक्रम का प्रारम्भ
5. नये समूहों को सहयोग
6. सामूहिक विषयों पर चर्चा
7. समूह व सदस्यों के लिए संपत्ति का निर्माण
8. उद्देश्यों को पिस्तुत बनाना
9. नये समूह का निर्माण (फेडरेशन) संघ का निर्माण

स्व-समूह का संचालन-(Functioning of Self-Group)- औपचारिक संगठनों की तरह कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए स्वयं सहयता समूह भी अपने नियम स्थापित करते हैं। नियम किसी गैर सरकारी संगठन की मदद से बनाये जा सकते हैं या फिर समूह में आपसी तालमेल द्वारा मापदण्ड निर्धारित कर लिए जाएँ और समय के साथ प्राप्त अनुभवों के आधार पर उसमें सुधार किया जा सकता है। नियमो के संबंध में समूह के सभी सदस्यों की पारस्परिक सहमति होती है। स्वयं ने सहायता समूह में सामान्य चुने प्रतिनिधि होते हैं। अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, सचिव सामान्यत: एक निश्चित समय पर बदलते रहते हैं। गैर-सरकारी संगठनों के माध्यम से सामाजिक कार्यकर्ता उन समूहों को रिकार्ड, पुस्तकें रखना सिखाते हैं। अशिक्षित सदस्यों वाले समूहों में या तो गैर-सरकारी संगठन का सामाजिक कार्यकर्ता अथवा कोई स्थानीय व्यक्ति स्वयं सहायता समूह की ओर से देखभाल करता है।

अध्याय 5

सामाजिक समूह कार्य के प्रारूप (Models in Social Group Work)

सामाजिक सामूहिक कार्य का उद्देश्य सामाजिक समायोजन एवं विकास करना है। इस उद्देश्य की पूर्ती विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से की जाती है। भारत विकास की दिशा में प्रयासरत् हैं। परिवर्तन समान रूप से न होने के कारण अव्यवस्था एवं सांवेगिक तनाव की स्थिति प्रतीत होती है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि हमारे मान्यताएँ, मूल्य प्रतिमान, रीति-रिवाज पुराने हैं, और उनमें परिवर्तन उतनी गति से नहीं आ रहा है जितनी भौतिक जीवन में।

सामूहिक कार्य के अन्तर्गत समूह ही सेवार्थी होता है अर्थात् व्यक्ति की सहायता समूह के माध्यम से की जाती है जिससे समूह की उन्नति एवं विकास संभव होता है। कार्यकर्ता विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से समूह में उन्नति एवं विकास लाने का प्रयास करता है। व्यक्ति के लिए समूह आवश्यक होता है, अतः सामूहिक कार्य समूह-विकास द्वारा व्यक्ति के विकास एवं उन्नति में सहयोग देता है। वह समूह को इस प्रकार कार्य करने के लिए उत्साहित करता है जिससे सामूहिक अन्तःक्रिया तथा कार्यक्रम दोनों ही व्यक्ति के विकास और वांछित सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहयोग दें।

ट्रेकर के अनुसार सामाजिक सामूहिक कार्य-कार्य की एक प्रणाली है जिसके द्वारा व्यक्तियों की सामाजिक संस्थाओं के अन्तर्गत समूहों में कार्यकर्ता द्वारा सहायता की जाती है। यह कार्यकर्ता कार्यक्रम संबंधी क्रियाओं में व्यक्तियों की परस्पर संबद्ध क्रियाओं का मार्गदर्शन करता है जिससे वे एक-दूसरे से संबंध स्थापित कर सकें और वैयक्तिक, सामूहिक एवं सामुदायिक विकास की दृष्टि से अपनी आवश्यकताओं एवं योज्ञताओं के अनुसार विकास के सुअवसरों से लाभान्वित हो सकें।

सामाजिक समूह कार्य के विभिन्न प्रारूप (Different Models of Social Group Work)-सामूहिक समाज कार्य की विभिन्न मान्यताओं, कार्यकर्ता की भूमिका एवं समूह के क्रियाकलापों के आधार पर समूह समाज कार्य के प्रारूपों को चार भागों में विभाजित किया गया है। यह प्रारूप समूह के साथ कार्य करने एवं समूह में व्याप्त असन्तुलन को दूर करके एक इच्छित जीवन-स्तर पर पहुँचाने में कार्यक्रम की मदद करते हैं। इस प्रकार यह कहा जाता सकता है कि प्रारूप रणनीतियां हैं जिन्हें अपनाकर व्यवस्थित ढंग से कार्य संपादित किए जाते हैं। समूह समूह समाज कार्य के निम्न लिखित प्रारूप हैं -

(1) चिकित्सा प्रारूप **(Remedial Model)**
(2) चिन्तन प्रारूप **(Reciprocal or Model)**
(3) विकासात्मक प्रारूप एवं **(Development Model)**
(4) सामाजिक लक्ष्य प्रारूप **(Social Goal Model)**

(1) चिकित्सा प्रारूप (Remedial Model) - चिकित्सा प्रारूप मुख्यतया व्यक्ति के असामान्य व्यवहार को परिवर्तन करने पर ध्यान देता है। समाज कार्य अभ्यास का यह उपागम व्यक्ति के अंदर निहित क्षमताओं, कुशलताओं को उपयोग में लाने एवं सामाजिक सामंजस्य बिठाने में सहायता करता है। शारीरिक मानसिक, सामाजिक समस्याओं से ग्रसित व्यक्ति (सेवार्थी) की सहायता में यह प्रारूप अत्यन्त ही महत्वपूर्ण होता है।

इस प्रारूप की मुख्य विशेषता सेवार्थी के मन में व्याप्त चिन्ता, तनाव को दूर करना एवं उसको समाज की मुख्य धारा में शामिल कराना है। व्यक्ति विशेष की समस्याओं का चिकित्सात्मक ढंग से निराकरण करना,सामाजिक विषमताओं से सेवार्थी को विरक्त करना, शारीरिक, मानसिक असमर्थताओं को दूर करना इस प्रारूप के उद्देश्य हैं। इसमें समूह कार्यकर्ता अपने आनुभविक एवं विशिष्ट ज्ञान के बल पर विभिन्न क्रिया कलापों को समूह में निर्देशित करता है।

(1) इसमें कार्यकर्ता केन्द्रीय भूमिका में होता है और आवश्यकताओं का निर्धारण करता है।

(2) कार्यकर्ता एक शान्त अवलोचनकर्ता होता है। वह समाज के मूल्यों के अनुरूप क्रियाओं को निर्देशित करता है।

(3) वह एक प्रेरक के रूप में कार्य करता है, साथ ही साथ समूह के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के निर्धारण में सहायता करता है।

(4) वह एक सहायक होते हुए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में समूह का मार्ग-निर्दशन करता है।

(2) चिन्तन प्रारूप (Reciprocal or Meditating Model)- यह प्रारूप सन् 1961 में प्रकाश में आया और इसका आधार खुली व्यवस्था सिद्धान्त है। मानवीय मनोविज्ञान एवं इससे संबंधित प्रमुख पक्षों पर यह प्रारूप प्रकाश डालता है। इस प्रारूप की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

(1) मनुष्य और समाज एक-दूसरे पर आश्रित हैं और इनकी अवश्यकताओं को इस एक-दूसरे के पूरक के रूप में देखते हैं और जब इस संरचित व्यवस्था में कोई बाहरी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है तब यह संरचना विछिन्न हो जाती है, परिणामत: अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हा जाती है।

(2) संघर्ष की स्थितियों से निपटने के लिए संबंधित समूह को अन्त:क्रिया द्वारा अपनी वस्तुस्थिति को समझ-बूझकर संसाधनों का उचित ढंग से उपयोग करना चाहिए।

(3) यह समूह के सदस्यों के मध्य संबंधों को एक माध्यम का काम करता है अर्थात् हम की भावना को प्रकट करता है।

(4) इस प्रारूप के द्वारा समूह के सदस्यों में व्याप्त तनाव, चिन्ता इत्यादि का निरा-करण किया जाता है।

(5) आवश्यक लक्षणों एवं कार्यों को यह महत्व देता है जोकि सामूहिक भावनाओं पर आधारित होती है।

(6) सेवार्थी कार्यकर्ता एक साथ मिलकर संम्भावित कठिनाईयों का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं।

इस प्रारूप में सहारे अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा, क्षमता एवं विद्वता का उपयोग समूह को आवश्यक निर्देश देने में लगाता है, साथ ही साथ समूह को रक्षात्मक स्थिति में बनाये रखता है।

(3) विकासात्मक प्रारूप **(Deveplopmental Model)**- 1965 में बर्न्सटेन **(Bernstain)** के नेतृत्व में बोस्टन यूर्निवसिटी के फैकल्टी सहयोगियों द्वारा इस प्रकार का विकास किया गया। लावी **(Laway)** को इस मॉडल का मुख्य कर्ताधर्ता माना गया। इस प्रारूप में स्वतंत्रता को प्रमुखता दी गई है अर्थात् समूह को स्वतंत्र होने देना चाहिए, उस पर काई दवाव न हो। इस प्रारूप की कुछ प्रमुख विशंषताएँ इस प्रकार हैं-

(1) यह प्रारूप प्राथमिक रूप से समूह के सदस्यों की गत्यात्मकता एवं घनिष्ठता पर आधारित है।

(2) यह सामूहिक घनिष्ठता **(Intimacy)** सक्षम कार्यकर्ता के हस्तक्षेप पर आधारित होती है।

(3) अध्ययन, निदान एवं उपचार की अधारणा का विकास व्यक्ति एवं समूह के आयामों से होता है अर्थात् समूह के सदस्यों के विषय में जानकारी एवं आवश्यकताओं की पहचान के पश्चात् सामूहिक निदान तथा उपचार प्रक्रिया अपनायी जाती है।

(4) कार्यकर्ता समूह के अध्ययन, निदान एवं उपचार में अपने को वस्तुपरक रूप से सम्मिलित करता है।

(5) विकासात्मक प्रारूप समूह के विचार अनुभव, मनोभावों एवं व्यवहार निरन्तरता बनाए रखने का प्रयास करता है।

(6) कार्यकर्ता सामूहिक सदस्यों, संस्था एवं सामाजिक पर्यावरण की विभिन्न स्थितियों को सामान्य बनाये रखने का प्रयास काता है।

(4) सामाजिक लक्ष्य प्रारूप **(Social Goal Model)**- इस प्रारूप की अवधारणा मुख्यतया सामाजिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक परिवर्तन पर आधारित हैं।

व्यक्ति में सामूहिक परिस्थितियों में परिवर्तन आने से स्वत: परिवर्तन ओन लगता है। सहभागितापूर्ण कार्य सम्पादित होन से समूह के सदस्यों में उत्तरदायित्व, चेतना एवं सोमाजिक परिवर्तन की अवधारणाओं का विकास होना स्वाभाविक है और यह परिस्थितियाँ व्यक्ति को सामाजिक क्रिया हेतु प्रेरित करती हैं। सामूहिक सहभागिता एवं प्रजातांत्रिक मूल्यों पर आधारित क्रिया से व्यक्ति में सामाजिक शक्ति स्वशक्ति, सामूहिक भावना का उदय होता है, जोकि लक्ष्य प्राप्ति को और सुगम बना देता है।

विभिन्न स्तरों पर सामूहिक समाज कार्यकर्ता की भूमिका -(Role of Social Group Worker at different Levels)-सामूहिक समाज कार्य, समाज कार्य की एक ऐसी विधा है जिसमें व्यक्ति विशेष को सेवाएँ न देकर समूह की सहायता की जाती है। इसमें प्रत्येक सदस्य कार्यकर्ता के कार्यो का केन्द्र बिन्दु होता हैं, अर्थात् समूह के प्रत्येक सदस्य पर कार्यकर्ता की नजर रहती है। इस प्रक्रिया में समेह की आवश्यकताओं की पहचान से लेकर कार्यक्रम कार्यान्वयन एवं मूल्यांकन में कार्यकर्ता एक धुरी के समान कार्य करता है।

स्पष्ट है कि समूह समाज कार्य में कार्यकर्ता अपनी बातों को समूह पर नहीं आरोपित करना वरन् समुह की स्वीकृतोपरान्त अपना निर्देशन देता है। सहायक के रूप में कार्यकर्ता समूह के मध्य अन्तदृष्टि को उकसाने वाली प्रक्रियाओं पर बल देता है, साथ-ही-साथ सहभागिता हेतु समय-समय पर आवश्यक दिशा निर्देश देता है। समेह समाज कार्यकर्ता जिन विभिन्न स्तरों पर कार्य करता है, वे हैं-

1. समुदाय में सामाजिक समूह कार्यकर्ता - बोगार्डस के अनुसार, समुदाय का विचार पडोस से आरम्भ होकर सम्पूर्ण विश्व तक पहुँचता है। समूह समाज कार्यकर्ता समुदाय के निहित उद्देश्यों को पुरा करने एवं आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति अपने व्यावसायिक कौशल द्वारा सहयोग करता है।

समुदाय चूँकि एक ऐसी अवधारणा है जिसमें कार्यकर्ता अपने को स्थापित करने में समय लगा सकता है, लेकिन जितना अधिक समय कार्यकर्ता द्वारा सामुदायिक प्रक्रिया को समझने में लगेगा, उसके लिए कार्य उतना ही आसान हो जाता है। समुदाय के लोगों की अनेकानेक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कार्यकर्ता द्वारा सर्वप्रथम समूह

प्रमाण करना आवश्यक हो जाता है। तत्पश्चात् सामूहिक कार्यक्रमों को लागु किया जाना उसके लिए सुगम हो जाता है।

समुदाय के साथ कार्यकर्ता द्वारा किये जाने वाले कार्य हैं-

(1) समूह निमार्ण
(2) आवश्यकताओं एवं समस्याओं की पहचान
(3) सदस्यों का सहभागिता स्तर
(4) सदस्यों के मध्य सहयोग एवं संघर्ष की स्थिति
(5) सामूहिक सदस्यों से व्यक्तिगत सम्पर्क
(6) आवश्यकताओं एवं उद्देश्य का प्राथमिकता के आधार पर निर्धारण
(7) समूह चर्चा (लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के संबंध में)
(8) कार्यक्रम नियोजन
(9) नेतृत्व क्षमता का विकास
(10) कार्यक्रम क्रियान्वय में सहभागिता प्रोत्साहन
(11) कार्यक्रम की आवश्यक क्रिया योजना
(12) समय-समय पर फीड बैंक एवं मूल्यांकन

2. शैक्षिक क्षेत्र में सामाजिक समूह कार्यकर्ता - सामाजिक समूह कार्यकर्ता अपने अनुभव एवं निपुणता के आधार पर शैक्षिक गतिविधयों में समूह समाज कार्य प्रणाली का व्यवस्थित रूप से प्रयोग करता है। स्वास्थ्य शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, पर्यावरणीय शिक्षा इत्यादि के सन्दर्भ में समाज कार्य विधियों एवं प्रक्रियाओं का प्रयोग कार्यकर्ता द्वारा किया जाता है। कार्यकर्ता द्वारा दी जाने वाली सेवायें निम्नलिखित हैं-

(1) कार्यकर्ता व्यावसायिक ज्ञान एवं निपुणताओं के द्वारा वैज्ञानिक सोच के साथ सेवार्थी की समस्याओं का समाधान करता है। चूँकि उसके लिए आवश्यक है कि उसमें तटस्थता बनी रहे, इसके लिए वह समूह के क्रियाकलापों में भाग नहीं लेता वरन् उसे निर्देशित करता है।

(2) शैक्षिक परिवेश में सुधारात्मक एवं निरोधात्मक कार्यों पर बल देते हुए विकासात्मक दृष्टिकोण अपनाता है।

(3) शैक्षिक वातावरण में आशातीत परिवर्तन लाने हेतु परिवर्तनकारी दशाओं का अन्वेषण करके सामूहिक गतिविधियों को बल देता है।

(4) समूह के लिए आवश्यक एवं अवश्यम्भावी कार्यक्रमों के निर्माण पर बल देता है जिससे सदस्यों की व्यक्तित्व क्षमताओं एवं कुशलताओं में वृद्धि हो सके।

(5) कार्यक्रम की दिशा एवं दशा व्यक्ति उन्मुख रखते हुऐ सम्प्रेरणा एवं प्रत्यक्षीकरण की स्थिति का बोध कराता है।

(6) पाठ्यक्रम एवं विद्यालयों परिवेश में आवश्यकतानुरूप परिवर्तन हेतु प्रबुंध तंत्र को उसकी जानकारी देता है।

(7) व्यक्तित्व विकास के समुचित अवसरों को उपलब्ध कराते हुए समूह की भावनाओं एवं इच्छाओं का पूर्ण ध्यान रखता है।

(8) अवश्यकतानुरूप पर्यावरणीय दशाओं में परिवर्तन लाने, समूह के मध्य घनिष्ठता **(Intimacy)** बनाये रखने, सहभागिता हेतु प्रोत्साहित करने, चेतना का प्रसार करने,मनासामाकजक समस्याओं के समाधान करने में कार्यकर्ता प्रत्येक सदस्य की अनुमति पर कार्य करता है।

3. चिकित्सालय में सामाजिक समूह कार्यकर्ता - समूह समाज कार्यकर्ता अपने वैज्ञानिक ज्ञान एवं निपुणताओं के आधार पर चिकित्सालय में सेवार्थियों की चिकित्सा में सहायता प्रदान करता है। चिकित्सालय परिसर में दी जाने वाली कार्यकर्ता द्वारा सहायता इस प्रकार हैं-

(1) बीमारी का सामाजिक उपचार
(2) स्वास्थ्य शिक्षा
(3) सुधारात्मक एवं निरोधात्मक क्रियाकलापों पर बल
(4) सामाजिक संबंधों में स्थायित्व
(5) चिकित्सकीय समूह के साथ समूह समाज कार्य
(6) व्यावसायिक एवं नैतिक शिक्षा
(7) सामूहिक उपचार एवं
(8) सेवार्थी के अभिभावकों से प्रत्यक्ष वार्तालाप

समूह कार्यकर्ता सेवार्थी से संबंधित उन समस्त पहलुओं का अध्ययन करता है जिनके कारण समस्या उत्पन्न हुई है और इस संदर्भ में सेवार्थी को बताता भी है, साथ ही साथ आवश्यक परामर्श देने की प्रक्रिया पूर्ण करता है।

औद्योगिक संस्थानों में सामाजिक समूह कार्यकर्ता - समूह समाज कार्यकर्ता औद्योगिक संस्थानों में एवं श्रमिकों के मध्य एक माध्यम के रूप में कार्य करता है। चूँकि समाज कार्य का प्राथमिक उद्देश्य पीड़ित मानवता की समस्याओं की रोकथाम करना है, इस हेतु कार्यकर्ता संस्थान में कार्यरत कर्मचारियों की मनोसामाजिक समस्याओं का समाधान करने में सहायता करता है।

संस्थान द्वारा उपलब्ध करायी जा रही सुविधाओं के परिप्रेक्ष्य में कार्यकर्ता अवलोकन करने के उपरान्त कर्मचारियों की आवश्यकताओं की पूर्ति का भी अध्ययन करता है और उनके कल्याणार्थ कार्यों को प्रमुखता देते हुए कार्य करता है। औद्योगिक संस्थान में समूह समाज कार्य प्रक्रिया की शुरूआत कार्यकर्ता अपनी निपुणता के द्वारा अवलोकन करके करता है।

तत्पश्चात् कार्यकर्ता कर्मचारियों की अवश्यकताओं एवं समस्याओं की सूची बनाता है और समूह का निर्धारण करके कार्य प्ररम्भ करता है।

कार्यकर्ता द्वारा संस्थान में निपुणता विकास कार्यक्रम, प्रशिक्षण कार्यक्रम, सहभागिता कार्यक्रम इत्यादि का प्रयोग किया जाता है जिससे कि कर्मचारियों में जागरूकता और इनके व्यक्तित्व में परिवर्तन आ सके। कर्मचारियों की अनेकानेक समस्याओं के संबंध में कार्यकर्ता समाज कार्य की अन्य प्रणालियों, जैसे-वैयक्तिक समाज, कार्य समाज कार्य शोध, सामाजिक क्रिया इत्यादि का प्रयोग करता है और आवश्यकता पड़ने पर किसी व्यक्ति विशेष की मनोसामाजिक समस्याओं के समाधान में सलाह भी देता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम कह सकते हैं कि औद्योगिक संस्थान में कार्यकर्ता सहयोगी, अनुभवी विशेषज्ञ एवं चिकित्सक (मनोसामाजिक) के रूप में अपना योगदान देता है।

AEOI

अध्याय 6

सामाजिक समूह कार्य में कार्यक्रम नियोजन एवं विकास (Programme Planning and Development of Social Group Work)

कार्यकर्ता का प्रथम कार्य एक कार्यक्रम का निर्माण करना होता है। सामूहिक समाज कार्य में कार्यक्रम तभी अधिक उपयोगी हो सकता है जब यह कार्यक्रम व्यक्ति-केन्द्रित होता है और विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करता है। इसे समूह के सदस्यों की आवश्यकताओं और अभिरूचियों के अनुसारविकसित होना चाहिए। इसे सदस्यों की योग्यताओं के अनुसार सदस्यों द्वारा स्वयं नियोजित किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम में कार्यकर्ता को एक सहायक व्यक्ति के रूप में प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि सामूहिक समाज कार्य में कार्यक्रम की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्व दिया जाता है। कार्यक्रम के विकास की प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है और इसमें संस्था समूह, व्यक्ति और कार्यकर्ता के ज्ञान पर बल दिया जाता है, क्योंकि ये सब मिलकर कार्यक्रम संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग करते हैं।

ट्रेकर के अनुसार, ''साधारण शब्दों में, सामूहिक समाज कार्य में कार्यक्रम को किसी वस्तु या प्रत्येक वस्तु के अर्थों में लिया जाने लगा है जो समूह अपनी अभिरूचियों की संतुष्टि के लिए करता है।''

कार्यक्रम नियोजन एवं विकास - (Programme Planning and Development)-सामूहिक समाज कार्य के विकास में एक अवस्था ऐसी थी, जब कार्यक्रम को क्रियाकलापों और घटनाओं से संबधित किया जाता था। ट्रेक्र के अनुसार अब ''कार्यक्रम'' को ''एक अवधारणा माना जाता है- एक ऐसी विस्तृत अवधारणा जिसमें क्रियाकलापों, संबंधों, अन्त:क्रियाओं और वैयक्तिक एवं सामूहिक अनुभवों की एक पूरी प्रक्रिया को सम्मिलित किया जाता है और जिसका नियोजन समझ-बुझ कर किया जाता है और जिन्हें कार्यकर्ता की सहायता से व्यक्तियों और समूहों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्यान्वित किया जाता है।'

कार्यक्रम को एक प्रक्रिया माना जाता है जिसमें समूह के सदस्यों की आवश्यकताओं और समूह के सदस्यों की अभिरूचियों को कार्यकर्ता संस्था के उद्दश्यों एवं कार्यों और सामूदायिक पुष्ठभूमि में समझता है। इन आवश्यकताओं और अभिरूचियों को खाजने और समझने में वह व्यावसायिक प्रणालियों, विधियों और अपनी निपुणताओं का प्रयोग करता है। इस प्रयोग में संस्था के सदस्य, साज-सामान और माध्यम सम्मिलित हैं। इन कार्यक्रमों का क्षेत्र सामुदयिक जीवन होता है।

कार्यक्रम समूह के तत्वावधान में एक उपकरण है जिसका प्रयोग व्यक्तियों और सम्पूर्ण समूह के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। इस दृष्टि से कार्यक्रम व्यक्ति और समूह के विकास का एक माध्यम या उपकरण है और इसे एक विकासात्मक अनुभव होना चाहिए न कि कोई अध्यारोपित वस्तु। इसी प्रकार कार्यक्रम व्यक्ति एवं समूह के विकास का माध्यम है जिसे समूह की मौलिक आवश्यकताओं और अभिरूचियों से ही बनाया जाना चाहिए। समूह द्वारा किया जाने वाला यह क्रियाकलाप कार्यक्रम का एक भाग होता है और उसे कार्यान्वित करने के लिए जो कुछ भी किया जाता है, वह उस समूह का उस समय का कार्यक्रम कहलाता है।

कार्यक्रम के मूलभूत तत्व (Basic Elements of Programme)- कार्यक्रम की व्याख्या में कार्यक्रम के तीन अंगभूतों-विषयवस्तु, क्षेत्र, माध्यम एवं कार्यक्रम के सम्पादन की पद्धति का उल्लेख भी आवश्यक है। विषय वस्तु के अधिक भाग में मनोविनोद और अवकाश के समय का प्रयोग आता है। नागरिकों द्वारा समुदाय के मामलों में सहभागिता भी सामूहिक समाज कार्य का महत्वपूर्ण भाग है। कुछ संस्थाएँ घरेलू और पारिवारिक जीवन जिनमें सामाजिक और आर्थिक संबंधों की कई समस्याएँ आती हैं, पर बल देती हैं।

कार्यक्रम के माध्यम में सामाजिक उत्सव, रंगमंच (नाच-गान), मानोविनोद के कार्यक्रम, आदि आते हैं। सामूहिक कार्यक्रम की पद्धति में कार्यकर्ता द्वारा समूह के साथ कई प्रकार की क्रियाओं की एक श्रंखला आती है। कार्यकर्ता समूह को कार्यक्रम संबंधी विषयवस्तु और कार्यक्रम के सम्पादन का माध्यम निर्धारित करने में सहयोग देता है।

कार्यक्रम का प्रमुख भाग विचार विमर्श है। अत: कार्यकर्ता इस विचार-विमर्श को निर्देशित करके कार्यक्रम के निर्माण में सहायता देता है। सामूहिक समाज कार्यकर्ता कार्यक्रम के तीन पक्षों-कार्यक्रम का क्या-विषयवस्तु, कार्यक्रम का कैसे-माध्यम को, कार्यक्रम का क्यों-उद्देश्य से संबंधित करता हुआ उच्च कोटि की निपुणता का प्रयोग करता है। कार्यक्रम के इस निर्माण में सहायता करता हुआ कार्यकर्ता समूह के सदस्यों की पृष्ठभूमि, दृष्टिकोणों और आकांक्षाओं का ध्यान रखता है।

विल्सन और राइलैण्ड के अनुसार सामूहिक समाज कार्यकर्ता कार्यक्रम नियोजन और विकास का एक भाग होता है जिसे अपने उपकरणों और सामग्री का पूरा ज्ञान होता है। कार्यक्रम विषयवस्तु की उपयुक्तता, संस्था के उद्देश्य और कार्य समूह के सदस्यों की विकास संबंधी आवश्यकताएँ एवं अभिरूचियाँ, और किसी विशेष समूह और सम्पूर्ण समुदाय के मूल्य एवं आदर्श कार्यक्रम के उपकरण एवं सामग्री हैं उनके समूह कार्यक्रम प्रक्रिया में तीन मूलभूत तत्व होते हैं।

(1) सदस्य
(2) सामूहिक समाज कार्यकर्ता और
(3) कार्यक्रम विषय-वस्तु।

प्रत्येक तत्व के अपने-अपने कई अंग होते हैं। जैसे सदस्य अपनी अभिरूचियों आवश्यकताएँ, विशेष योग्यताएँ, मूल्य एवं आदर्श और अपने परस्पर संबंध रखते हैं। कार्यकर्ता-अपना व्यावसायिक ज्ञान एवं निपुणता, अपनी विशेषताएँ, सदस्यों से अपने संबंध, अपनी भूमिका, और संस्था और सम्पूर्ण समुदाय के मूल्य एवं आदर्श प्रस्तुत करता है। कार्यक्रम विषयवस्तु-सदस्यों की आवश्यकताओं और अभिरूचियों को पूरा करने की क्षमता, समूह, समुदाय और समाज के मूल्यों एवं आदर्शों को परिवर्तित करने की क्षमता रखता है।

सामूहिक समाज कार्य में समूह के कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रमों के आधार पर ही समूह की गतिविधियाँ कार्यरत रहती हैं और कार्यक्रमों के नियोजन संचालन व मूल्यांकन में सदस्य व्यस्त रहत हैं। कार्यक्रमों के कार्यान्वयन से संबंधों में दृढ़ता आती है और समूह का प्रत्येक सदस्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समूह के नियमों का पालन करता हुआ प्रयत्नशील रहता है।

सामूहिक समाज कार्य में कार्यक्रम नियोजन के मूल सिद्धाध्नतों का तो पालन किया ही जाता है, पर साथ ही इसके अन्य सिद्धान्तों का भी प्रयोग किया जाता है। समूह जो करना चाहता है, वह स्वयं निश्चित करता है।

कार्यकर्ता समूह के इस कार्य में केवल सही दिशा दिखाता है। कार्यकर्ता समूह को कार्यक्रम नियोजन में निम्न प्रकार से मदद करता है।

समूह को कार्यक्रम नियोजन के लिए प्रेरित करता है। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की यथोचित समय पर जानकारी देता है। कौन सा कार्यक्रम किस प्रकार से उपयुक्त रहेगा, इस निर्णय में समूह के कार्यक्रमों के गुण-दोष बताकर मदद करता है। इससे समेह को हितकारी कार्यक्रमों के चयन व निर्णय में सहायता मिलती है। समूह की आवश्यकताओं के बारे में समूह में चेतना जागृत करता है। समूह के सदस्य स्वयं की व समूह की आवश्यकताओं को समझ सकें और उसके अनुसार कार्यक्रम का नियोजन कर सके, इसके लिए उनकी मदद करता है। आवश्यकतानुसार कार्यक्रमों के आयोजन में लगने वाले साधनों के चयन में सदस्यों की सहायता करात है। साधन कहाँ से उपलब्ध हो सकते हैं व किस प्रकार उपलब्ध हो सकते हैं, इस प्रयास में भी समूह की सहायता करता है तथा समूह की परिस्थितियों से अवगत कराता है। समूह की स्थितिजन्य कपियां गुणो एवं शक्तियों से परिचय कराता है।

सामुहिक समाज कार्य में कार्यक्रम नियोजन में निम्नलिखित विशेष बातों का ध्यान देना चाहिए।

1. कार्यक्रम समूह द्वारा नियोजित होना चाहिए। समूह के सदस्यों को मिलकर यह बताना चहिये कि अब क्या कार्यक्रम करना है। निर्णय के लिए समूह चर्चा आवश्यक परिस्थिति होती है।

2. संस्था के नियमों, गुणों, साधनों व सीमाओं का विशेष ध्यान रखते हुए कार्यक्रम नियोजन होना चाहिए। इसके लिए कार्यकर्ता को यह चाहिए कि वह समूह को संस्था की सभी विशेषताओं से अवगत कराए।

3. कार्यक्रम निर्णय में सभी सदस्यों की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं का भी यथासंभव समावेश होना चाहिए।

4. कार्यक्रमों का स्वरूप समूह के सर्वाधिक समस्याग्रस्त भाग को लाभ पहुँचाने वाले उद्देश्यों को प्राथमिकता देने वाला होना चाहिए।

कार्यकर्ता कार्यक्रम नियाजन में निम्न प्रकार से भी सहायता करता है-

1. प्रेक्षण व अवलोकन करके समझकर ताथा कार्य करके ।

2. विश्लेषण और अभिलेखन।

3. सीमाओं का उपयोग। जिसमें तीन प्रकार की सीमायें आती हैं- (क) सामग्री व भौतिक पदार्थ, (ब) साधनों व सुविधाओं द्वारा आरोपित सीमायें और (ग) व्यक्ति के अन्दर अन्तर्निहित सीमायें।

4. घर व समुदाय संबंधी निरीक्षण, परीक्षण और परामर्श करता है।

5. अध्यापन व नेतृत्व करता है।

6. व्यक्तियों की निपुणताएँ प्राप्त करने में सहायता करता है।

7. सदस्यों को नेतृत्व करने में सहायता करता है।

8. विशेषता का उपयोग करता है। अपने विशेष ज्ञान का समूह कार्य में कार्यक्रमों में नियोजन में उपयोग करता है।

समाज कार्य में कार्यक्रम का महत्व -

1. समूह की अन्तर्क्रियाएँ कार्यक्रमों के माध्यम से ही सक्रिय रहती हैं।

2. समूह के उद्देश्यों की प्राप्ति कार्यक्रमों के द्वारा ही प्राप्त की जाती है।

3. कार्यक्रमों के प्रयोजन, नियोजन और संयोजन के लिए निर्णय की प्रक्रिया सामूहिक होती है। अतः समूह का हर सदस्य संगठन के उद्देश्यों से निर्णय के पक्ष या विपक्ष में होता है। इस परिस्थिति में किसी सदस्य को अपनी इच्छाओं का सामूहिक इच्छाओं में विलय करना पडता है और कुछ सदस्यों को अपनी इच्छाओं का दमन भी करना पडता है। इस प्रक्रिया में सदस्य मिलकर काम करना और रहना सीखते हैं।

कार्यक्रम नियोजन की विधि (Techniques of Programme Planning)- समूह के कार्यक्रम बडे, छोटे, समयानुसार, लम्बी अवधि के समय व्यतीत करने के लिए, लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए, समस्याओं को दूर करने के लिए, समूह के सदस्य के विकास के लिए और कई बार समूह कार्य संबंधी संस्थाओं के उद्देश्यों के स्वरूप नियोजित किए जाते है।

कार्यक्रम के नियोजन के लिए समूह का मिलना आवश्यक होता है। कार्यक्रम समूह के सदस्य को समय व स्थान की सूचना देता है और मिलने का संदेश भी।

समूह के सदस्यों के एकजुट हो जाने पर कार्यकर्ता सर्वप्रथम औपचारिक सम्बोधनों या किसी खास खबर के बारे में बोलकर बातचीत प्रारम्भ करता है। यह तरीका समूह में बातचीत करने का या संचार का सहज वातावरण तैयार करने के लिए अच्छा होता है।

यदि इस औपचारिक कार्यक्रम क्रिया के दौरान किसी सदस्य के व्यवहार में कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाई पडी तो उसके लिए समूह का ध्यान उसकी ओर आकर्षित करवाना चाहिए ताकि समूह के सदस्य उस कार्यक्रम प्रतिक्रिया को सहजता में परिवर्तित करने का प्रयास करें। अन्य सदस्यों के इस प्रयास से भी कार्यक्रमों का स्वरूप स्पष्ट हो सकता है। जैसे यदि कोई सदस्य उदासीन दिखाई पडा, बोलने में हचिक रहा है तो कार्यकर्ता उसे पूछ सकता है कि क्या आपको कोई तकलीफ है?

ऐसा कहकर समूह का ध्यान उस व्यक्ति की ओर आकर्षित करवाता है। सदस्य उत्सुकता दिखाते हैं जिससे उस उदासीन सदस्य की समस्या कम हो जायेगी।

कार्यक्रम की रूपरेखा में निम्नलिखित अवयवों को स्पष्टता से अंकित किया जाता है -

- कार्यक्रम की आवश्यकता ।
- कार्यक्रम के उद्देश्य।
- कार्यक्रम का प्रकार व नाम।
- कार्यक्रम के अन्तर्गत होने वाली गतिविधियाँ।
- कार्यक्रम का स्थान।
- कार्यक्रम की तारीख, समय व अवधि।
- कार्यक्रम के संचालनार्थ समितियों का गठन व काम की जिम्मेदारी का निर्णय (कौन-कौन से कार्य करेगा।)
- साधनों की सूची बनाना और साधन इकट्ठा करना।
- व्यवस्था करना ।
- अभ्यास करना।

कार्यक्रम संचालित करना।
कार्यक्रम के दौरान आने वाली अड़चनों को दूर करना।
कार्यक्रम का मूल्यांकन करना।

शिविर (Camp) यदि कई लोग एक प्रकार की परिस्थितिजन्य समस्याओं से ग्रसित है, तो उनको दूर करने के लिए प्रशिक्षण शिविर व अन्य रोकथाम शिविर आयोजन किया जा सकता है।जैसे-युवाओं को रोजगार उन्मुख बननाने के लिए रोजगार दक्षता शिविर चलाये जा सकते हैं। उसमें उन्हें तरह-तरह के कार्य सिखाये जा सकते हैं। साथ ही उन्हें रोजगार प्राप्ति के लिए उपयोगी कुशलताओं का प्रशिक्षण भी दिया जा सकता हैं। जैसे-आवेदन पत्र कैसे लिखना, किसको लिखना, किससे मिलना आदि का ज्ञान। स्वरोजगार के बारे में भी औपचारिकताओं व राजगार चलाने के लिए उपयुक्त कार्यकुशलताओं, जैसे - खर्चे का लेखा-जोखा रखना, ग्राहकों को कैसे आकर्षित करना, किस प्रकार का उत्पाद बनाना, कीमतें कैसे तय करना आदि के बारे में बताया जा सकता हैं। इसी प्रकार से स्कूल छोडें हुए बच्चों के शिविर लगाकर विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा शिविर व प्रशिक्षण लेने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

रचनात्मक कार्यक्रम (Creative Programme) - मिट्टी से खेलना, बालू के टीले का घर बनाना, कागज के एलबम या छोटे-छोटे खिलौने व घर आदि बनाना, लकडी काट कर उन्हें आकार देना, माचिस की तीलियों से आकार बनाना, कागज के फूल बनाना, पाककला की वस्तुयें बनाना, बुनना, सिलना, ड्राईग (चित्र) आदि सब रचनात्मक कार्यक्रम की गतिविधियाँ हैं। उसमें चटाई बनाना, कागज काटना, चिपकाना, टोकरी बनाना, पतंग बनाना आदि भी शामिल हो सकते हैं। चित्र घर, मानव आकार, आदि बनाने से एक ओर जहाँ कलात्मक कौशल का विकास होता है, वहीं भावनाओं की अभिव्यक्ति का साधन भी है।

सामाजिक जीवन की अडचनों व संबंधों के नकारात्मक पहलुओं को कला के माध्यम से उद्घाटित करके व्यक्ति को संतुष्ट किया जा सकता है। बाल निर्देशन केन्द्रों में इस प्रकार की गतिविधियों द्वारा बच्चों की मानसिकता का उसकी समस्याएँ व अवरोध ग्रथियों को समझने के लिए उपयोग किया जाता है। चिकित्सा पद्धति में इसका उपयोग भावनाओं के स्पष्टीकरण व कुंठाओं से मुक्ति दिलाने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

चर्चा सत्र (Discussion Session)

- चर्चा करने से व्यक्तियों में आपसी संचार बढता है, एक -दूसरे से बातचीत करने की क्षमता का विकास होता है।
- अपनी बात दूसरों के सामने रखने का मौका मिलता है जिससे व्यक्ति संतुष्ट होता है, साथ ही स्वयं को मान सम्मान व सामूहिक स्वीकृति भी मिलती है।

- अपनी गलत धारणाऍं सुधारने की परिस्थिति प्राप्त होती है।
- ज्ञान मिलता है और ज्ञान बॉटने का मौका भी मिलता है।
- निर्णायक शक्ति का विकास भी होता है।
- कार्यक्रम निर्धारण का मौका मिलता है।
- अंसतुष्टी से छुटकारा मिलता है।
- सामूहिकता की भावना में वृद्वि होती है और एक-दूसरे की बातें सुनने समझने की भावना भी बढती है।
- चिकित्सकीय चर्चा सत्रों द्वारा मनोशारीरिक व्याधियों का निदान भी संभव होता है।
- जीवन के प्रति लगाव बढता है, अपनी समस्या कम लगने लगती है।
- यह भी आभास होता है कि समस्या केवल हमें ही नहीं है अन्य लोगों को भी है। उससे मनोबल बढता है और समस्या का असर मानसिक तौर पर कम होता है। साथ ही मिलकर समस्या-समाधान के रास्ते निकाले जा सकते हैं और समस्या सुलझाने का प्रयास किया जा सकता है।

AEOI

कार्यक्रम की विशेषताएँ (Characterisics of Programme)- सामूहिक समाज कार्य के अच्छे कार्यक्रमों में निम्नलिखित विशेषताऍ होनी चाहिए-

1. कार्यक्रम में समूह के सदस्यों की आवश्यकताओं तथा रूचियों का ध्यान रखा जाना चाहिए।
2. कार्यक्रम बनाने में सदस्यों की उम्र में भिन्नता, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा आर्थिक स्थिति का ध्यान रखा जाना चाहिए।
3. कार्यक्रम में व्यक्तियों को वे अवसर और अनुभव प्रदान करने की व्यवस्था होनी चाहिए [illegible] रूचि-अरूचि का बहुत महत्व है।
4. कार्यक्रम काफी लचीला और कई प्रकार का होना चाहिए ताकि वह विभिन्न उम्र के और विभिन्न प्रकार की रूचि वाले च्यक्तियों के अनुकूल हों और भाग लेने वालों को उसमें अधिक से अधिक अवसर मिलने की संभावना हो।
5. समूह के अनुभव, ज्ञान, क्षमता और तैयारी के अनुसार कार्यक्रम का सिलसिला क्रमिक रूप से सरल से जटिल की और अग्रसर होना चाहिए।

अध्याय 7

सामाजिक समूह कार्य में कुशलता प्राप्ति (Achievment of Skills in Social Group Work)

सामाजिक समूह कार्य को समाज कार्य की एक पद्धति के रूप में कायकर्ता द्वारा उपयोग में लाया जाता है। अत: अपेक्षित है कि समूह कार्यकर्ता वृत्तिक समाज कार्य अभ्यास में कुशल एवं निपुण हो जिसके लिए उसका व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित होना आवश्यक होता है। सामूहिक समाज कार्यकर्ता का व्यावसायिक समाज कार्य प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए। समूह कार्य करने की प्राथमिक अवधि में कार्यकर्ता को अधिक अनुभव प्राप्त, समूह कार्यक्रम के निरीक्षक के अन्तर्गत कार्य करना चाहिए।

कई बार समूह कार्य की अन्तक्रियाओं की बहुलता होने के कारण नये कार्यकर्ताओं को कठिनाइयों का अनुभव हो सकता है। इसलिए यदि कार्यकर्ता अपने से अधिक अनुभवी कार्यकर्ता को समूह कार्य अभ्यास करते समय देखता है और उसका अवलोकन करता है तो वह अधिक सीख सकता है। यदि स्वयं भी वह अकेले ही समूह कार्य का अभ्यास कर रहा है, तो अनुभवी कार्यकर्ता को अवलोकन के लिए बुलाकर बाद में उसके साथ चर्चा द्वारा अपने कार्य का मूल्यांकन करके समूह कार्य में अधिक निपुणता प्राप्त कर सकता है।

इसके अलावा कार्यकर्ता समूह कार्य की रिपोर्ट लिखकर उसके आधार पर अपने पर्यवेक्षक के बारे में मूल्यांकनात्मक चर्चा कर सकता है। ऐसा करने से भी वह अधिक जिम्मेदारी व समझदारी प्राप्त कर सकता है और अपने समूह कार्य के अभ्यास को अधिक प्रभावी और उद्देश्यपूर्ण बना सकता है।

समस्याग्रस्त समूहों की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करना कार्यक्रर्ता के लिए आवश्यकता होता है। समान विशेषताओं के आधार पर निर्मित समूह अपने आप में एक प्रकार के समूह के साथ कार्य कर रहा हो, उसके बारे में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करें। विभिन्न प्रकार के समूहों के साथ कार्य करने वाली संस्थाएँ बीच-बीच में छोटे-छोटे अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाती रहती है। इनका लाभ कार्यकार्ता उठा सकते हैं और अलग-अलग प्रकार के समूहों के साथ कार्य करने में कुशल हो सकते हैं।

संस्थाएँ अपने उद्देश्यों के अनुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाती है। जैसे- बाल कल्याण संस्था द्वारा एक या दो सप्ताह का बाल व्यवहार विज्ञान का प्रशिक्षण शिविर युवा कल्याण संस्था द्वारा नेतृत्व विकास प्रशिक्षण शिविर, अस्पताल में टी०बी० या कैंसर मरीजों के साथ समूह कार्य का प्रशिक्षण शिविर या मद्यपान करने वाले मरीजों के साथ काम करने के कौशल्य के शिविर आदि।

कार्यकर्ता जिस संस्था में कार्यरत हों, उसके तत्वावधान में भी अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा सकते है। कार्यकर्ता जिस विषयों में कठिनाई अनुभव करता है, उन विषयों पर अनुभवी कार्यकर्ताओं के साथ विचार-विमर्श तथा गोष्ठियों का आयोजन भी संस्था द्वारा किया जा सकता है। कार्यकर्ता समूह कार्य के अपने अनुभवों आधार पर लेख लिख कर भी समूह कार्य अभ्यास के कुछ पक्षों के बारे में अन्त दृष्टि प्राप्त कर सकता है। समय-समय पर अपने कार्यो का विचारात्मक मूंल्यांकन करने से भी कार्य करने की नयी दिशाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

कार्यकर्ता के गुण एवं विशेषताएँ (Merits and Characteristics of Worker)- कुछ विशेष प्रकार के गुणों वाले व्यक्ति अच्छे कार्यकर्ता सिद्ध होते हैं। समूह कार्य की भूमिकाओं को बखूबी निभाने में कौशल्य के साथ-साथ व्यक्ति की अपनी विशेषताएँ भी महत्वपूर्ण होती हैं। कार्यकर्ता एक व्यक्ति होने के नाते एक विशेष प्रकार के व्यक्तित्व वाला होता है। उसकी सवयं की रूचियाँ और कार्य करने का दृटिकोण होता है। सामूहिक समाज कार्य के लिए उपयुक्त कार्यकर्ता के गुण कई बार उसके सामान्य गुणों व व्यक्तित्व के पहलुओं से भिन्न हो सकते हैं। कार्यकर्ता को इस बात का ऐहसास होना चाहिए कि उसके व्यक्तित्व का कौन-सा पक्ष कार्य में अधिक उपयोगी हो सकता है या कौन-सा पक्ष समूह के विकास कार्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। सामान्य रूप से बहुत शान्त या बहुत क्रोधी व्यक्ति कार्यकर्ता बनने लायक नहीं होते है, ऐसा कहना ठीक नहीं होगा। क्योंकि सामान्य व्यक्ति की भूमिका में उपर लिखे दोनों गुणों का प्रक्षेपण अपने सामान्य संबंधियों के सामने धारकों के लिए सामान्य बात होगी ।

एक मानव होने के नाते उसे पूरा अधिकार व छूट रहती है कि वह अपने सहज व्यक्तित्व के साथ लोगों के साथ पेश आये। इन गुणों वाले व्यक्ति जब कार्यकर्ता की भूमिका में होते हैं तो इन्हीं गुणों का उपयोग समझदारी से समूह के लिए जो उपयुक्त होता है, उस प्रकार से करते हैं। समाज कार्य प्रशिक्षण द्वारा इस बात का प्रयास किया जाता है कि कार्यकर्ता अपने सामान्य व्यक्तित्व के गुणों का ढंग से इस प्रकार से उपयोग करना सीख जायें जिससे कि लाभार्थी का सेवा संबंधी उद्देश्य पूरा हो। प्रशिक्षण के दौरान मानव व्यवहार संबंधी ज्ञान, एवं सहायता करने के अभ्यास द्वारा व्यावसायिक कार्यकर्ता में अपेक्षित गुणों का विकास किया जा सकता है और किया जाता रहा है।

कार्यकर्ता की निपुणता (Skills of worker)

1. समूह के साथ भाग लेने में निपुणता-
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता में समूह के प्रति अपनी भूमिका निर्धारित करने, उसकी व्याख्या करने, उसे ग्रहण करने और उसे परिवर्तित करने की निपुणता होनी चाहिए।
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता में समूह के सदस्यों को सामूहिक क्रियाओं में भाग लेने, अपने बीच में से नेतृत्व को ढूँढने और अपनी क्रियाओं के विषय में उतरदायित्व स्वीकार करने में सहायता देने की कुशलता होनी चाहिए।
2. समूह की भावनाओं से निपटने में निपुणता-
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता में समूह के प्रति अपनी भावनाओं कों नियंत्रित करने की निपुणता होनी चाहिए और उसे प्रत्येक नवीन परिस्थितियों को उच्चकोटि की विषयनिष्ठता, भविष्यात्मकता से अध्ययनकरना चाहिए।
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता में समूह को अपनी सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार की भावनाओं को व्यक्त करने में सहायता देने की कुशलता होनी चाहिए। कार्यकर्ता में सामूहिक एवं अन्तसामूहिक संघर्ष की परिस्थिति का विश्लेषण करने में समूह को सहायता देने की कुशलता होनी चाहिए।
3. कार्यक्रम के विकास में निपुणता-
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता में सामूहिक चिंतन का मार्ग प्रदर्शित करने की निपुणता होनी चाहिए जिससे उसकी अभिरूचियॉ और आवश्यकताएँ प्रकट हो सकें और समझी जा सकें।
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता में समूहों को ऐसे कार्यक्रमों का विकास करने में सहायता देने की निपुणता होनी चाहिए जिसके माध्यम से समूह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहते हों।
4. उद्देश्यपूर्ण संबंध स्थापित करने में निपुणता-
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता में समूह में स्वीकृति प्राप्त करने और समूह से एक सकारात्मक व्यावसायिक आधार पर संबंध स्थापित करने की निपुणता होनी चाहिए।
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता में निपुणता होनी चाहिए कि वह समूह के सदस्यों को एक-दूसरे को स्वीकार करने और सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति में समूह के साथ सहयोग करने में सहयोग दे सके।
5. समूह की परिस्थिति का विश्लेषण करने में निपुणता-
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता में समूह के स्तर को जानने, उसकी आवश्यकताओं को ज्ञान करने और समूह जितनी जल्दी आगे बढने को तैयार है, निर्धारित

करने के लिए समूह के विश्वास के स्तर को समझने की निपुणता होनी आवश्यक है।

- सामूहिक समाज कार्यकर्ता में इस बात की निपुणता होनी चाहिए कि वह समूह के अपने विचारों को व्यक्त करने, उद्देश्यों का निर्माण करने लक्ष्य का स्पष्टीकरण करने और समूह के रूप में अपनी शक्तियों और कमजोरियों को समझने में सहयोग कर सके।

6. संस्था और सामुदायिक साधनों के प्रयोग में निपुणता-
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता में उन विभिन्न सामुदायिक सहायक साधनों का पता लगाने और उनके विषय में समूह को जानकारी कराने की निपुणता होनी चाहिए, जिनका प्रयोग कार्यकमों की प्राप्ति के लिए किया जा सकता है।
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता में समूह के उन सदस्यों जिनकी आवश्यकातायें समूह के माध्यम से पूरी नहीं हो पाती, विशिष्ट सेवाओं का प्रयोग करने में सहायता देने की निपुणता होनी चाहिए।
7. मूल्यांकन में निपुणता-
   - सामूहिक समाज कार्यकर्ता द्वारा समूह के साथ कार्य करते समय विकास संबंधी क्रिया के अभिलेखें का प्रयोग और समूह को उन्नति प्राप्त करने में ज्ञान, प्रबोध और सिद्धान्तों का चेतन प्रयोग इस विधि से किया जाना चाहिए जिससे व्यक्तियों और समूहों के व्यवहार में उचित परिवर्तन आ जाए।

फिलिप ने सामूहिक समाज कार्य से कार्यकर्ता में अपेक्षित निम्नलिखित दक्षताओं का सुझाव दिया है।

1. संस्था के कार्यों के प्रयोग में निपुणता।
2. वर्तमान वास्तविकता के प्रयोग में निपुणता।
3. भावनाओं के संचारण में निपुणता।
4. सामूहिक संबंधों की उतेजना एवं उपयोग में निपुणता।

सामाजिक समूह कार्य में कार्यकर्ता का भूमिका और कार्य- (Role and Work of Worker in Socizl Group Work) -कार्यकर्ता समूह कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति में समूह की मदद सामूहिक समाज कार्य के सिद्धान्तों एवं प्रणालियों का उपयोग सामाजिक संस्था के तत्वावधान में संस्था की नीतियों का पालन करते हुए करता है। सामूहिक समाज कार्यकर्ता तभी कार्य कर सकता है जब वह समूह कार्य पद्धति का अर्थ, उद्देश्यों प्रणालियों एवं दक्षताओं से परिचित हो। समाज कार्य प्रशिक्षण द्वारा उसे इन चीजों का ज्ञान तो होता है। किन्तु बदलती परिस्थितियों, बदलते मूल्यों, धारणाओं एवं उनके प्रभावित प्रणालियों का स्वरूप समाज कार्य व अन्य विषयों के अन्तर्गत हुई खोजों की जानकारी द्वारा अनुमानित किया जा सकता है। अतः कार्यकर्ता

का मुख्य कार्य होता है कि वह समूह कार्यो संबंधी दिन-प्रतिदिन नये स्थापित तथ्यों से अवश्यकता होने के लिए प्रयासरत् रहे।

समूह के प्रत्येक सदस्य हर दूसरे पर अन्त:क्रिया द्वारा प्रभावित होने है। इन अन्त:क्रियाओं को उपयुक्त दिशा की और उन्मुख करना कार्यकर्ता का कार्य है। जब एक सदस्य दूसरे की मदद स्वीकृति पाने के लिए करता है, तो दोंनो ही सदस्य लाभान्वित होते है ।

कई विकास कार्य में लगी संस्थाएँ सामूहिक समाज कार्य के द्वारा समस्यओं से निपटने में प्रयासरत् हैं। जैसे-महिला बचत योजना, पंचायती राज प्रशिक्षण शिविर, व्यावसायिक प्रशिक्षण शिविर, उद्योगकर्ता विकास शिविर आदि कार्यक्रमों के संचालन में समूह कार्य का बहुतायत में उपयोग हो रहा है । ऐन्डरसन (1979) का मानना है कि सामाजिक प्रतियोगिता के विकास का उद्देश्य रखने वाले व्यक्तियों के लिए समूह महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होता है। खास कर ऐसे व्यक्तियों के लिए जो निम्नलिखित अनुभवों से गुजर रहे हों-अलगाव निराशा, शोषण, वर्तमान मानवीय संबंधों के संदर्भ में दूसरों द्वारा न समझ जाना एवं परिवर्तित हो रही ऐसी व्यवस्थाओं में अपर्याप्तता का अनुभव जिन व्यवस्था के वे स्वयं एक भाग हों। इस प्रकार की भावनाओं से ग्रस्त व्यक्तियों तक पहुँचना और उन्हें उनके कष्टदायी दायरों से बाहर निकाल कर समूह कार्य द्वारा उनका मनोबल बढाना कार्यकर्ता का कार्य होता है । इस प्रकार की भावनाओं से ग्रसित व्यक्ति कई बार इतने निराश रहते हैं, कि उन्हें क्या करना चाहिए यह सूझता नहीं है। कार्यकर्ता ऐसे लोगों को ढूँढ करके उनसे, सम्पर्क कर उन्हें समूह कार्य द्वारा सहायता पहुँचाने का प्रयास करता है।

अपने अनुभव के द्वारा कार्यकर्ता का उद्देश्य दूसरे समूहों और विस्तृत समुदाय के साथ ऐसे संबंध स्थापित करना है जो उत्तरदायी नागरिकता, समुदाय के सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक या अन्य सामाजिक समूहों के बीच परस्पर सामंजस्य और प्रजातांत्रिक उद्देश्यों की और अपने समाज की निरन्तर प्रगति में भागीदारी लाने में योगदान करते है ।

इस प्रकार के नेतृत्व के पीछे जो पथ-प्रदर्शन का उद्देश्य है, वह प्रजातांत्रिक समाज की सामान्य मान्यताओं पर आधारित है। जैसे-प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रतापूर्वक अपनी क्षमताओं के उपयोग के अवसर देना, दूसरों की प्रशंसा एवं आदर करना और अपने उतदायित्व को ग्रहण करना।

सामूहिक समाज कार्य अभ्यास के पीछे वैयक्तिक एवं सामूहिक व्यवहार का ज्ञान और सामाजिक स्थितियों एवं सामुदायिक संबंधों का ज्ञान हो। इस ज्ञान के आधार पर सामूहिक समाज कार्यकर्ता उस समूह जिसके साथ वह कार्य करता है, को नेतृत्व प्रदान करता है जो सदस्यों की अपनी पूर्ण क्षमताओं का उपयोग करने और सामाजिक से रचात्मक सामूहिक क्रियाकलापों का सृजन करने के योग्य बनाता है ।

वह दोनों ही कार्यक्रम संबंधी क्रियाकलापों के प्रति और समूह के अंदर के व्यक्तित्व की और समूह और उसके आसपास के समुदाय के बीच परस्पर क्रिया के प्रति सजग रहता है ।

सामूहिक समाज कार्यकर्ता समूह के साथ अपने संबंध को कार्यक्रम को उपकरण के रूप में समझने के अपने ज्ञान का और वैयक्तिक और सामूहिक के विषय में अपने ज्ञान का चेतन रूप से प्रयोग करता है और व्यक्तियों एवं जिनके साथ वह कार्य करता है, के प्रति और उन विस्तृत सामाजिक मूल्यों के अपने उतरदायित्व को पहचानता है ।

विल्सन और राइलैण्ड के अनुसार व्यक्ति समूह में कई उद्वेश्यों की पूर्ति के संगठित होते हैं: जैसे-

(1) सुरक्षा,
(2) शिक्षा,
(3) अन्वेषण या साहसिक कार्य,
(4) उपचार,
(5) उन्नति,
(6) परामर्श या सलाह,
(7) प्रशासन,
(8) सहयोग,
(9) एकीकरण,
(10) नियोजन।

सामूहिक समाज कार्यकर्ता समूह के माध्यम से इनकी पूर्ति में सहायता

सामूहिक समाज कार्यकर्ता समूह के समूह के बीच होने वाली अन्तर्क्रिय प्रक्रिया के माध्यम से कार्य करता है। समूह का प्रत्येक सदस्य दूसरे सदस्य तरीकों से प्रभावित करता है।

विल्सन और राईलैण्ड ने सामूहिक समाज कार्यकर्ता के कार्यो में निम्न को विशिष्ट कार्य माना है-

(1) समूह के साथ बैठक,
(2) व्यक्तियों के साथ विचार-विमर्श जिसमें साक्षात्कार विधि का प्रयोग जैसे- समूह में सदस्य के निबंधन के समय साक्षात्कार, आकस्मिक साक्षात्कार, द्वारा साक्षात्कार और सदस्यों के घरों में मुलाकात करना,

AEOI

(3) प्रतिवेदन और अभिलेख लिखना,

(4) सामुदायिक कार्यो में संस्था का प्रतिनिधित्व करना।

जब कार्यकर्ता को कार्यक्रम संबंधी विषयवस्तु का पूरा ज्ञान होता है, सदस्यों का और उनकी स्वीकृति प्राप्त होती है और समूह की स्थिति में अन्तर्क्रिया की प्रक्रिया द्वारा उत्पन्न संबंधों के रचानात्मक प्रयोग करने की कुशलता होती है, तभी वह समूह को निर्धारित सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करने में सहायता दे सकता है ।

कार्यकर्ता को सामूहिक जीवन की गतिशीलता का पूरा ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि समूह एक ऐसा माध्यम होता है जिसके द्वारा

(1) व्यक्ति व्यक्तिगत एवं सामाजिक संतूष्टि और अपने उद्वेश्यों की प्राप्ति करते हैं।

(2) व्यक्तिगत एवं सामाजिक आदर्श बदले जाते हैं ।

(3) समाज में नियंत्रण बनाए रख जाता है ।

(4) समाज अपने रस्मों, रिवाजों, आदेर्शो और मूल्यों को हस्तांतरित करता है ।

समूह में नेतृत्व विकास की प्रक्रिया (Process of Development of Leadership in Group)-नेतृत्व समूह का एक प्राकृतिक प्रमुख तत्व है। नेतृत्व के द्वारा ही समूह अपने विकासात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करता है। नेतृत्व का अर्थ व्यक्ति के उस गुण से संबंधित होता है जो वह समूह के अन्य सदस्यों को स्वयं आगे बढकर मार्ग दिखाने वाला होता है। नेतृत्व शक्ति प्रत्येक व्यक्ति में होती है, किन्तु किसी में कम और किसी में अधिक दिखाई पडती है।

समूह प्रत्येक व्यक्ति की नेतृत्व शक्ति को संचालित करने की योग्यता रखता है। आत्मनिर्णय के लिए समूह कार्य समूह प्रक्रिया द्वारा सदस्यों को प्रेरित करता है। आत्मनिर्णय की प्रक्रिया में व्यक्तित नेतृत्व की शक्ति भी संलग्न रहती है। स्वनिर्णय को शक्ति स्वसंचालन को प्रेरित करती है और दूसरों पर निर्भर होने से बचाती है। इस अर्थ में आत्मनिर्णय नेतृत्व शक्ति का भाग होता है ।

सामान्यत: नेतृत्व का अर्थ व्यक्ति के उस कार्य से लिया जाता है जो वह समूह के अन्य सदस्यों के हित के लिए इस अपेक्षा से उठाता है कि अन्य सदस्य उसके साथ उस हितकारी कार्य में सहभागी होंगे और उसका अनुसरण करेंगे। इन अर्थो में नेतृत्व दो तरफा होता है। इसमें नेता समूह के अन्य सदस्यों द्वारा प्रदर्शित प्रतिक्रियाओं के आधार पर ही स्वयं को सफल व असफल समझ सकता है। दूसरी ओर अन्य सदस्य भी अपने लिए लाभकारी कार्यो को चाहते हुए भी कर नहीं पाते हैं जब उन्हें नेतृत्व का सहारा नहीं मिल पाता है ।

नेता का अनुसरण करने के लिए भी आत्मनिर्णायक शक्ति का उपयोग होता है। कोई व्यक्ति यदि स्वयं में सक्षम है तो नेता की राह नहीं देखगा। उसे जो चाहिए

उसके बारे में वह स्वयं अपने आप निणर्य ले लेगा और उसे प्राप्त करने में प्रयास हो जाएगा।

कई समूहों में चर्चा के कार्यक्रम के दौरान कुछ देर प्रारम्भ में शांति रहती है फिर एक व्यक्ति के बोलने पर एक-एक करके सभी बालने लगते है। कई बार ऐसा भी होता है कि एक साथ ही दो तीन लोग बोलते हैं। कई बार एक ही व्यक्ति अपनी बात अधिक जोर देकर बोलता है। इन परिस्थितियों में ''नेतृत्व'' चर्चा प्रारंम्भ करने वाले सदस्य में अधिक होगा ऐसा समझा जा सकता है ।

कई बार एक ही समूह में कई बराबरी के नेतृत्ववान व्यक्ति भी हो सकते है। इन परिस्थिति में नेतृत्व का संघर्ष भी हो सकता है। न केवल दो या तीन नेतृत्व गुणधारक सदस्यों में बल्कि अन्य सदस्यों में भी कुछ एक-दूसरे को मानेंगें और कुछ इस उलझन में पड जायेंगें कि किसकों मानें।

अच्छे नेतृत्व के गुण (Merits of Good Leader-ship) - अच्छा नेता सक्षमकर्ता होता है । वह समूह के कार्यो में सहायता करता है। वह अन्य लोगों के विचारों का आदर करता है । वह व्यक्तियों को अपनी सहायता से परावलंबी नहीं स्वावलबी बनाता है। समूह बौद्धिक रूप में उससे मार्गदर्शन प्राप्त करता है। यह सब तभी सम्भव है जब कि वह सदा वस्तुनिष्ठ और नमनशील रहे और उसका व्यवहार लोकतांत्रिक हो और वह समूह को अधिकतम जिम्मेदारी सौंपता हो। उसके व्यक्तित्व का गठन स्वस्थ होना चाहिए और समूह के सदस्यों के प्रति उसका व्यवहार सदा सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए । उसे समूह की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का ज्ञान होना चाहिए ।

यह आवश्यक नहीं कि एक ही व्यक्ति हर परिस्थिति में नेतृत्व प्रदान कर सके। एक व्यक्ति खेल के मैदान में अधिक दृढ निश्चयी प्रतीत हो सकता है, पर वही व्यक्ति एक मजदूर संघ में दूसरे नेता की खोज करता है जिसका वह अनुसरण कर सके। नेतृत्व शक्ति एक आवश्यकता होती है। सामूहिक समाज कार्य नेतृत्व को प्रोत्साहित करता है।

समूह कार्यकर्ता एवं नेतृत्व(Group Worker and Leadership)-

(अ) नेतृत्व के विभिन्न पहलुओं नेतृत्व के लक्षण, गुण आवश्यकता एवं नेतृत्व विकसित करने वाले उपायों से अवगत कराता है ।

(ब) समूह की अन्त:क्रिया के आधार पर सदस्यों की नेतृत्व शक्तियों का ध्यान आकर्षित करता है ।

(स) सदस्यों को कार्यक्रमों के प्रयोजन, नियोजन व संचालन का उतरदायित्व लेने के लिए प्रेरित करता है व उसका मनोबल बनाये रखने में मदद करता है और उन्हें उत्साहित करता रहता है ।

(द) कार्यक्रमों में उतरदायित्वों के विभाजन की ओर समूह को अग्रसर करता है ।

ताकि प्रत्येक सदस्य कार्य सम्पादन के प्रति उतरदायित्व का अनुभव करें और सहयोगी हो।

- संघर्षमय स्थिति से उबरने में समूह की मदद करता है, और
- साधारणत: प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यवहार एवं कार्यो के प्रति स्वयं को उतरदायी अनुभव करे, इसके लिए कार्यकर्ता समूह के सभी सदस्यों में नेतृत्व विकास की दृष्टि से व्यक्तिकरण के सिद्धान्त का उपयोग, करता है। विकासात्मक सिद्धान्तों द्वारा प्रभावित युग में प्रत्येक व्यक्ति को स्व: नेतृत्व की भावना का आभास होना उसके सुखी समायोजन के लिए आवश्यक है ।

प्रत्येक व्यक्ति स्व: नेतृत्व संचालन में कुछ महत्वपूण मरीकों का दपयोग करता है, जो इस प्रकार है-

1. दूसरों से संबंध बनाता है ।
2. निर्णय लेता है । आत्मनिर्णायक शक्तियों का अनुमान लगाता है औ उनका विकास करता है व उपयोग भी करता है ।
3. स्वयं की इच्छानुसार कार्य सम्पादित कर लेता है ।
4. दूसरों को अपने विचारों से अवगत कराता है और उसकी अच्छइयों में दूसरों को क्या लाभ है यह बताता है ।
5. संघर्षो या कठिनाइयों को निबटाता है ।
6. बाहरी या अन्य समूह के संबंधी की मदद से समूह विशेष में अपना नेतृत्व सम्पादित करता है ।
7. दबावयुक्त समूहों की रचना का प्रयास करता है ।

AEOI

अध्याय 8

सामूहिक प्रक्रियाएँ
(Group Processsses)

सामाज में व्यक्ति एक-दूसरे पर निर्भर तथा आश्रित होता है। पारस्परिक अन्त:क्रिया समूह तथा व्यक्ति के लिए इतनी आवश्यक है कि इसके बिना व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है, तथा सामूहिक कार्य समाप्त हो जाएगा। समूह तथा व्यक्ति एक दूसरे से विभिन्न तरीकों से संबंधित है। संपूर्ण समाज विभिन्न प्रकार के पारस्परिक संबंधों पर आधारित है ।

व्यक्ति और समूह एक दूसरे से स्थिति **(Status)**, भूमिका **(Role)** तथा प्रक्रिया **(Process)** द्वारा संबंध स्थापित करते है। यहाँ पर हमारा तात्पर्य केवल प्रक्रिया के आधार पर संबंध स्थापन से है। 'प्रक्रिया' शब्द को समाजशास्त्र में सामान्य वैज्ञानिक अर्थ में लिया गया है जिसका तात्पर्य गतिशील कार्य अथवा कार्य की तारतम्यता अथवा पुनरावृति से है।

समाज का संपूर्ण कार्य सामाजिक प्रक्रियाओं द्वारा पूरा होता है। 'सामाजिक प्रक्रिया' दो शब्दों से मिलकर बना है-सामाजिक तथा प्रक्रिया, अर्थात् समाज से संबधित वे प्रक्रियाएँ जिनके द्वारा सामाजिक अन्त:क्रिया संभव होती है। प्रक्रिया का अर्थ है वे क्रियाएँ, जो सदैव चलती रहती है ।

सामूहिक प्रक्रिया से तात्पर्य वे क्रियाएँ हैं जो समूह में सदैव विद्यमान रहती है और सामूहिक अस्तित्व को प्रभावित करती है । इन क्रियाओं के माध्यम से व्यक्ति एक दूसरे से संबंध स्थापित करते हैं तथा अत:क्रिया पर वास्तविकता एवं प्रगति की ओर अग्रसर होते हैं। सभी के समूहों में कुछ प्रक्रियाएँ सदैव विद्यमान रहती है जिसके परिणाम स्वरूप अन्त:क्रिया संभव होती है ।

यह अन्त:क्रिया संगठनात्मक तथा विघटनात्मक दोनों प्रकार की हो सकती है। ऐसा कोई समूह अथवा समाज नहीं है जो पूर्णत: संगठित हों।

प्रक्रिया का अर्थ (Meaning of Process)- प्रक्रिया का तात्पर्य उन क्रियाओं से है जो सदैव गतिशील रहती हैं और प्रत्येक संबंधित व्यक्ति इनसे प्रभावित होता है ।

बेबस्टर्स शब्दकोष के अनुसार, प्रक्रिया एक ऐसी घटना है जिसमें समय-समय पर निरंतर परिवर्तन होता है। उदाहरण के लिए, विकास प्रक्रिया या क्रियाओं की तारतम्यता या निश्चित रूप से उद्देश्य प्राप्त करने वाले कार्य।

वैने मैकमिलन **(Wayne Mcmillan)** ने सामाजिक प्रक्रियाँ की मौलिक प्रकृत्ति की ओर इंगित करते हुए लिखा है कि सामाजिक प्रक्रिया या पारस्परिकता प्राप्त करने की घटना तथा पारस्परिक बनने की विशेषता सभी संबंध में है तथा यह वह माध्यम है जिसके द्वारा समाज कार्य की कला को व्यवहार में लाया जाता है। विशेषीकरण का कोई रूप क्यों न हों, सामाजिक वैयक्तिक कार्य, सामाजिक सामूहिक कार्य तथा सामुदायिक संगठन की आवश्यकता के कार्य सामाजिक प्रक्रिया द्वारा संपन्न किए जाते है।

वैने मैकमिलन के विचार से प्रत्येक सामाजिक प्रक्रिया में तीन तत्व पाए जाते हैं-

व्यक्तिगत व्यवहार,
सामूहिक संबंध, और
अन्तसमूह संबंध ।

जब हम सामूहिक प्रक्रियाओं का वर्णन करते हैं तो प्रजातांत्रिक शब्द स्वत: आ जाता है। सामूहिक प्रक्रियाएँ यद्यपि प्रजातांत्रिक तथा निरंकुश दोनों स्थितियों में काम करती हैं। परतु अनुभव से यह ज्ञात हुआ है कि विकास और उन्नति में प्रजातांत्रिक ढगों के विषय में कुछ परिचर्चा करनी आवश्यक प्रतीत होती है, क्योंकि सामाजिक प्रक्रियाएँ उसी पर निर्भर होती है जो समूह की उन्नति एवं विकास में योगदान देती हैं।

- प्रजातंत्र का यह प्रथम मौलिक उद्देश्य है कि वह व्यक्ति में स्वयं तथा समूह के सदस्य के रूप में पूर्ण क्षमता का विकास करता है, समूह में खो नहीं जाता और न ही वह अपने आप को समूह के हित के लिए बलिदान करता है। व्यक्ति की विशिष्टता की वृद्धि सहयोगी क्रियाओं द्वारा होती है ।
- वर्तमान समय में समुदाय, राष्ट एवं विश्य सहयोगिक सामूहिक व्यवहार की प्रविधियों का अभ्यास एवं ज्ञान चाहते है । इस प्रकार के प्रयास में सभी व्यक्ति एवं समूह समस्या के समाधान का प्रयास करते हैं।
- शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को समाज में स्थान दिलाना होता है। ऐसा केवल क्रियाओं में भाग लेकर ही संभव होता है और प्रजातांत्रिक प्रक्रियाएँ ही इसका आधार हैं।
- कार्यात्मक संबंधों में सुधार लाकर ही प्रजातांत्रिक जीवन जीने का संतोषजनक रूप से प्रयास किया जा सकता है।
- व्यक्ति में सामूहिक भावना का विकास तथा अन्तर्निर्भरता प्रजातांत्रिक आधार पर ही आती है ।

प्रजातांत्रिक सामूहिक प्रक्रियाएँ हो व्यक्ति को उद्देश्य प्राप्त करने का प्रदान करती हैं। व्यक्ति समूह द्वारा लक्ष्य प्राप्त करना सीखता है ।

समूह का अर्थ एवं प्रकृति (Meaning and Nature of Group) - जब कई व्यक्ति किसी कार्य में एक साथ भाग लेते हैं, तो उसे समूह कहते है। परतु समूह इन व्यक्तियों की समस्त विशेषताओं का योग नहीं होता है। बर्ड के विचार से समूह की सबसे विशिष्ट विशेषताएँ अन्त:क्रिया द्वारा उत्पन्न होती हैं।

लेविन के अनुसार-

समूह व्यक्तियों के ऊपर नही है,
यह व्यक्तियों का योग नही है,
यह एक गतिशील पूर्णता है,

इसमें जो भी विशेषता होती है वह व्यक्तियों के योग से भिन्न होती है। किसी भी समूह के अस्तित्व के दो मौलिक आधार है-

सदस्यों के व्यवहार में आत्मनिर्भरता,
सदस्यों का समूह के साथ तादात्मीकरण ।

अन्तर्निभरता यसमूह के लिए आवश्यकता है । सामूहिक सदस्य समूह के साथ अपना संबंध 'हम भावना' के साथ स्थापित करते हैं। उनमें हम की भावना होती है। व्यक्तियों के एक साथ एकत्र होने से समूह का निर्माण नहीं होता है। व्यक्ति अपनी इच्छा से किसी सामान्य लक्ष्य या कार्य के लिए समूह का निर्माण करते है।

समूह के संगठन, उद्वेश्य, लक्ष्य तथा उसकी विशेषताएँ व्यक्तियों के योग से भिन्न होती हैं। व्यक्ति समूह में जिस प्रकार का व्यवहार करता है, वह समूह के पृथक् वैसा व्यवहार नहीं करता है ।

प्रभावकारी समूह की विशेषताएँ (Characteristics of Effective Group) - समूह में आन्तारिक संबंध, सहयोग तथा अन्तनिर्भरता के द्वारा उत्पन्न होते हैं जिसमें अनेक विशेषताएँ पायी जाती है। बाक्सटर तथा कासिडी में प्रभावात्मक कार्य-समूह की निम्नलिखित विशेषताएँ बतायी हैं-

समूह में पारस्स्परिकता होती है। समूह में लोग एक साथ ही रहना पसंद करते हैं। प्रत्येक अपनी पूर्ण क्षमता के अनुसार योगदान देता है। उस पर कोई विशेष नियंत्रण नहीं होता।

सदस्य एक दूसरे पद विश्वास करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का अपने लिए तथा समूह के लिए विशेष महत्व होता है। सभी व्यक्ति समूह के मूल्यों से परिचित होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का संबंध समान उद्देश्य के लिए होता है। यह समूह के सगंठन को मजबूत बनाता है ।

- समूह सामाजिक को स्वीकार करता है। बिना किसी दबाव के सदस्य समूह के निर्णय और क्रिया पर विश्वास रखते है। यद्यपि निर्णय सदैव एक मत से नहीं होता है। परतु निर्णय पूर्ण रूप से किसी व्यक्ति से दूर नहीं रहता है। चूँकि निर्णय बिना किसी शक्ति के या दबाव के होता है, अत: प्रत्यक व्यक्ति इसमे भाग लेता है। सदस्य ऐसे नियत्रण से भी बँधे होते है, जिन्हें वे स्वंय मिलकर बनाते है ।
- समूह के सामान्य मूल्य होते है। वह प्रत्येक सदस्य को भली प्रकार से जानने का अवसर देता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से सोचने एवं संतुष्टि प्राप्त करने का अवसर प्राप्त करता है।

सभी समूह उपरिलिखित स्तर पर नहीं पहुँच पाते है। यह एक आदर्श है जिसको कि सामूहिक जीवन के लिए पाना आवश्यक होता है। वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति अनेक समूहों का सदस्य होता है। अत: और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति इस प्रकार की प्रक्रियाओं का अनुभव करे जिससे सामूहिक एकता प्राप्त कर सके।

सामूहिक प्रक्रिया का अर्थ (Mening of Group Process) -सामूहिक प्रक्रिया वे साधन या तरीके हैं जो समूह द्वारा उपयोग में लाए जाते है। सामान्य समस्याओं के समाधान के लिए विचार करना, वार्तालाप करना, नियोजन करना तथा मूल्यांकन करना आदि सामूहिक प्रक्रिया के अंतर्गत आते है।

सामूहिक प्रक्रियाओं का उद्देश्य या लक्ष्य समूह उत्पादकता से है जिसका तात्पर्य कुछ ऐसे कार्य करना है जिन्हें एक अकेले व्यक्ति द्वारा सम्पन्न करना संभव नहीं है।

सामूहिक प्रक्रिया की विशेषताएँ (Characteristics of Group process)- प्रक्रियाएँ करने के अनेक तरीके हैं, जिनके द्वारा हम किसी कार्य को करते हैं तथा जिनका उपयोग उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए होता है। सामूहिक प्रक्रियाओं की विशेषताएँ प्रभावात्मक प्रयोग के लिए निम्न प्रकार से वर्णित की जा सकती है-

सामूहिक पर्यावरण-सामूहिक पर्यावरण का तात्पर्य समूह की मौलिक भावनाओं तथा सांवेगिक लाभ से है। इसके अंतर्गत समूह का जीवन एक -दूसरे के प्रति संवेगों का योग, कार्य तथा संगठन, समूह, एक इकाई तथा बाहा वस्तुओं के प्रति संवेग आते है। जब उचित प्रजातांत्रिक तथा प्रयोगाशात्मक पर्यावरण, दण्ड स्परूप, शत्रुतापूर्ण या विरोधी, प्रतिस्पर्धा, निरंकुशात्मक पर्यावरण के साथ स्थान पर होता है तो प्रजातांत्रिक प्रक्रियाएँ होती है। किसी उद्देश्य की प्राप्ति में समूह कितनी सफलता प्राप्त करता है यह न केवल समूह क्रिया की निपुणता पर बल्कि उस पर्यावरण पर भी निर्भर होता है जिसको समूह उत्पन्न करता है। लेविन तथा उनके साथियों ने एक क्रिया अनुसंधान का प्रयोग किया। उन्होंने व्यक्तियों की अन्त:क्रिया को निरंकुश,

प्रजातांत्रिक तथा यथेष्टाचारिकतात्मक पर्यावरण में अध्ययन किया और परिणामस्वरूप यह पाया कि प्रजातांत्रिक पर्यावरण सामूहिक उत्पादन के लिए अधिक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है।

- समूह लक्ष्य निर्धारित करता है-सामूहिक प्रक्रियाओं का मुख्य लक्षण यह है कि समूह में ही लक्ष्यों को निर्धारित किया जाता है। समूह बिना उद्देश्य के नहीं होते है। समूह उन्हीं लक्ष्यों पर प्रयास करता है जिनका वह निर्माण करता है।

  समूह सदस्य जहाँ होते है, वहीं से क्रिया प्रारंभ होती है और उसकी गति उतनी ही होती है जितनी कि चलने के लिए तैयार होते हैं। उद्देश्य में परिवर्तन समूह की आवश्यकता के अनुरूप होता है।

- समूह का एक कार्य नेतृत्व करना है-समूह -प्रक्रियाओं में नेतृत्व किसी बाह्य व्यक्ति का कार्य नहीं है वरन् समूह में ही उत्पन्न होता है। नेता के चुनाव का उतरदायित्व समूह के सदस्यों पर होता है। समूह में प्रत्येक व्यक्ति नेता और अनुयायी होता है यदि समूह प्रजातांत्रिक आधार पर कार्य करता है तो प्रत्येक सदस्य को नेतृत्व का कार्य दिया जाता है।

  समूह का उद्देश्य नेतृत्व का विकास करना भी होता है। वह प्रत्येक सदस्य का समूहिक क्रियाओं को सम्पन्न कराने का विकास होता है। नेतृत्व समूह में होता है, समूह पर नहीं होता है।

- सभी क्रियाएँ सहयोगात्मक होती हैं-लक्ष्यों व साधनों को प्रणाली के रूप में सहकारिता पर निर्भर होना आवश्यक होता है। समूह की शक्ति सहयोग पर आधारित होती है। व्यक्ति बहुत समय तक एक साथ काम कर सकते है, परंतु आवश्यक नहीं कि उनमें सहयोग की भावना उत्पन्न ही हो। प्रजातांत्रिक समूह में एकता समूह के लक्ष्यों को निर्धारित तथा स्वीकृत करके प्राप्त की जाती है। उद्देश्यों पर वाद-विवाद होता है, योजना बनाई जाती है, निर्णय लिया जाता है और समूह द्वारा किया संचालित की जाती है। प्रत्येक सदस्य कार्य के कुछ भाग को पूरा करने का दायित्व निभाता है।

- प्रत्येक व्यक्ति ऐच्छिक रूप से भाग लता हैं-प्रजातांत्रिक समूह में प्रत्येक सदस्य की अपनी बात या विचार समूह उद्देश्यों को निश्चित करने, सोचने की स्वतंत्रता होती है। प्रत्येक सदस्य को भाग लेने का समान अवसर होता है। उसके मत, विचार तथा कार्य का आदर किया है।

- सदस्यों में अन्त:क्रिया होती है-जब सदस्य एक स्थान पर मिलकर समान कार्य करने हेतु प्रयास करते हैं, तो उनमें अन्त:क्रिया का होना स्वाभाविक

हो जाता है। अन्त:क्रिया सामूहिक प्रक्रियाओं में प्रजातांत्रिक उद्देश्य, साधन निर्देशन, क्रियाएँ और मूल्यांकन में सदस्यों के स्वाभाविक भाग लेने से उत्पन्न होती है । उद्देश्य, समूह द्वारा निश्चित किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के साथ कार्य करता है। प्रत्येक सदस्य अपने दृष्टिकोण को रखने योजना की प्रस्तुत करने, बिना किसी दबाव के विचार रखने के लिए स्वतंत्र होता है ।

- सामूहिक मनोबल तथा अनुशासन 'हम' भावना पर केन्द्रित होता है-समूह-मनोबल से तात्पर्य समूह की वह स्थिति जहाँ पर समूह के उद्देश्य एवं लक्ष्य वैयक्तिक उद्देश्यों के साथ एकत्रित एवं स्वीकृत किए जाते हैं, जहाँ साधनों में, नेतृत्व में क्रियाओं में सहयोग एवं एकीकरण होता है। सामूहिक अनुशासन से तात्पर्य सदस्यों की अन्तर्प्रवृतियों को सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु नियंत्रित करने से है। यह स्वयं निर्देशित एवं अनुशासित एवं होता है। लक्ष्य व ज्ञान इसका आधार होता है।

  सामूहिक मनोबल तथा अनुशासन में मुख्य रूप से दो कारक होते है, ये हैं-

  1. सांवेगिक सुरक्षा तथा मौलिक आवश्यकताओं की संतुष्टि, जो समूह में आपसी संबंधों से उत्पन्न होती है ।
  2. 'में' भावना से 'हम' भावना का होता। सदस्य स्वार्थ को छोडकर समूहार्थी हो जाते है ।

- समूह का प्रत्येक परिवर्तनकारी सदस्य होता है - प्रत्येक सदस्य समूह के दूसरे सदस्यों को प्रभावित करता है। उनकी आवश्यकताओं में परिवर्तन लाने तथा समस्या का निदान करने हेतु वे एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। वे क्रिया, मूल्यांकन को भी प्रभावित करते हैं।

  प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार तथा क्रियाओं में परिवर्तन आता रहता है। सामूहिक प्रक्रियाओं में सामाजिक परिवर्तन निहित होता है। सदस्यों की इच्छाओं, विश्वासों, मनोवृतियों, ज्ञान तथा निपुणताओं में परिवर्तन आता है। समूह का महत्वपूर्ण सदस्य बनने के लिए प्रत्येक सदस्य को परिवर्तनकारी होना आवश्यक होता है।

सामूहिक क्रियाओं का विश्लेषण (Analysis of Group Activity)-

माइल ने सामूहिक क्रियाओं को निम्नलिखित प्रकार से विश्लेषित किया है-

- मानसिकता में समरूपता प्राप्त करने के लिए लोगों की बैठक।
- वार्तालाप की प्रविधियाँ जो जीवन तथ्यों, विचारों, विश्वासों, मनोवृतियों को उत्पन्न करती हैं, पूर्वाग्रहों को प्रकट करती हैं तथा मनोवृति में परिवर्तन लाती हैं।

- निर्णय लेने तथा सामूहिक नियोजन को उत्पन्न करने की प्रविधियाँ
- श्रम का विभाजन, जिससे समूह में निहित विशेष योग्यता का उपयोग हो सकता है ।
- समूह द्वारा विचारों तथा क्रियाओं का अभिलेख करना।

सामूहिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण यह प्रकट करता है कि समूह उत्पादकता की प्राप्त करने तथा व्याधियों को दूर करने के लिए क्या करना चाहता हैं यह संकेत प्रविधियों के लिए विकास के लिए आधार प्रदान करता है।

समूह की प्रभावशीलता निम्नलिखित तथ्यों पर निर्भर करती है-

- सामूहिक विचार- कोई समूह एक ही प्रकार से नहीं सोचता है लेकिन विचार समूह सदस्यों द्वारा ही उत्पन्न होता है और उनके सम्मिलित विचारों से जो सर्वोत्तम विचार उत्पन्न होता है, उसे सामूहिक विचार कहते हैं। ये विचार रचनात्मक होते हैं ।
- सामूहिक नियोजन-समूह नियोजन में आवश्यक होता है, क्योंकि इससे समूह के सदस्यों तथा उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से समझा जाता है और उद्देश्यों को स्पष्ट किया जाता है। इससे लक्ष्य के साधनों के तरीको के विषय में सोचना संभव होता है जिससे उद्देश्य की प्राप्ति होती है। समूह का नियोजन तभी संभव होता है जब सदस्य एक सामान्य उद्देश्य पर सहमत होते हुए सामूहिक प्रयास करते हैं।
- सामूहिक मूल्यांकन-मूल्यांकन के वल समूह की उत्पादकता का नहीं बल्कि उन प्रक्रियाओं का भी होता है जिनके द्वारा समूह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करता है। मूल्यांकन का संबंध (1) नेतृत्व के मूल्याकंन, (2) सामूहिक प्रक्रियाओं के मूल्यांकन, (3) व्यक्ति में परिवर्तन के मूल्यांकन, तथा (4) सामूहिक क्रियाओं के मूल्यांकन से होता है।
- सामूहिक वार्तालाप-समूह में वार्तालाप होना आवश्यक होता है, जिसमें समूह के सदस्यों के विचारों एवं दृष्टिकोणों को स्पष्टता से समझ जा सके। इसके द्वारा संघर्ष को दूर किया जाता तथा अंतरों को समाप्त किया जाता है।
- सामूहिक क्रिया -जब समूह प्रजातांत्रिक आधार पर कार्य करता है और प्रत्येक सदस्य समूह के कार्यो एवं निर्णयों में अधिक से अधिक भाग लेता है तो सामूहिक क्रिया सम्पन्न होती है।
- सामूहिक निर्णय-सामूहिक क्रिया निर्णय चाहती है। विचार, वार्तालाप तथा नियोजन अनेक मूल्यवान सुझाव प्रस्तुत करते है लेकिन क्रिया को प्रारम्भ करने से पहले क्रिया की योजना का चुनाव आवश्यक होता है। यह सामूहिक निर्णय कहलाता है।

सामूहिक प्रक्रिया के प्रमुख चरण (Main Steps in Group Process)

-सामूहिक प्रक्रियाएँ पूर्ण स्थिति में कार्य करती हैं। प्रत्येक स्थिति, जिसका समूह सामना करता है, भिन्न होती है। अत: कोई एक रास्ता या विधि सामूहिक प्रक्रियाओं की नहीं होती है। प्रक्रियाऐं समूह की प्रकृति, उद्देश्य, साधनों, बाधाओं तथा लक्ष्यों पर निर्भर होती है। सामूहिक प्रक्रिया के निम्नलिखित चरण हैं -

(1) सामूहिक चिन्तन एवं वार्तालाप-सामूहिक चिन्तन का तापर्य समूह की कार्य करने की बुद्धि, कुशलता, सामूहिक उद्देश्यों को स्थिर करने तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयोग किए गए साधनों से होता है। सामूहिक चिन्तन एवं वार्तालाप की प्रमुख प्रविधियाँ निम्नलिखित हैं-

1. प्रत्येक सदस्य को चिन्तन करना चाहिए।
2. सामूहिक वार्तालाप विवाद नहीं होता है। हमारा उद्देश्य व कार्य सच्चाई को प्राप्त करना है।
3. संक्षिप्त कथन ही होना चाहिए, भाषण की आवश्यकता नहीं होती है।
4. कोई ऐसा वाक्य नहीं कहना चाहिए जो स्वयं को स्पष्ट न हो। कभी-कभी लोग कुछ शब्द प्रयोग करते हैं और आशा करते हैं कि सभी उन्हें जानते है।
5. दूसरों को बोलने का समय देना चाहिए।
6. वार्तालाप में अल्पसंख्यक लोगों का भी पूर्ण प्रतिनिधित्व हो।
7. अगर कोई बात समझ में नहीं आती है या जिसको स्वीकार नहीं कर सकते हैं, उसको स्पष्ट करना चाहिए ।
8. जब कोई वार्तालाप प्रभावात्मक हो तो उदाहरणों से उसको स्पष्ट करना चाहिए।
9. सभी समूह का आदर करते है, क्योंकि उसका अनुभव व्यक्ति के अकेले के अनुभव से अधिक मूल्यवान होता है ।
10. प्रत्येक वार्तालाप के लिए समय निश्चित होना चाहिए ।

(2) सामूहिक नियोजन- सामूहिक नियोजन इस प्रश्न का उतर देता है कि हम किस प्रकार कोई कार्य करेंगे या करते है । यह सामूहिक चिन्तन के लिए पथ- प्रदर्शक होता है। सामूहिक नियोजन के अंतर्गत निम्नलिखित कदम उठाए जाते हैं

(1) समस्या की स्पष्ट परिभाषा तथा वास्तविक लक्ष्यों का निर्धारण करना।
(2) लक्ष्य प्राप्ति के लिए कार्य के साधनों का चुनाव करना।
(3) कार्य को समस्या की ओर अग्रसारित करना।

सामूहिक नियोजन निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित होता है-

1. प्रत्येक सदस्य को भाग लेने का अवसर दिया जाए।

2. समूह का नियोजन सदस्य की आवश्यकताओं और रूचियों के अनुरूप हो ।
3. नियोजन तथ्यों पर आधारित होना चाहिए।
4. निंरतर मूल्यांकन तथा नियोजन से अच्छी योजनाएँ उभर कर सामने आनी चाहिए।
5. नियोजन में नमनीयता होनी चाहिए।
6. इसमें सामूहिक नियंत्रण अवश्य हो ।
7. नियोजन में उन उपलब्ध साध्नों का उपयोग होना चाहिए जो समस्य के लिए उपयुक्त हों ।
8. नियोजन के लिए अभिलेख आवश्यक होता है ।
9. नियोजन में शक्ति या दबाव का प्रयोग नहीं होनी चाहिए ।

सामूहिक नियोजन में निम्नलिखित प्रविधियों का प्रयोग किया करता है-

1. समूह समस्या को परिभाषित करता है और लक्ष्य निर्धारित करता है ।
2. समस्य का विश्लेषण असंतोष को खोजने, कारणों में संबधें को जानने, तारतम्यता के समझने एवं संपूर्ण का महत्व समझने के लिए किया जाता है।
3. समूह निर्धारित करता है कि क्या मूल्य का स्तर चुने हुए क्रियात्मक पथ को नियंत्रित कर सकता है ।
4. समूह समस्या से संबंधित ऑकडे तैयार करता है।
5. ऑकडों का वर्गीकरण करता है जिससे वह मूल्य-स्तर निर्धारित कर सके तथा समस्या को परिभाषित कर सके।
6. कार्य के मार्य का निर्धारण करता है।

(3) सामूहिक निर्णय-कार्य करने के मार्ग के निर्धारण के उपरांत विशेष क्रियाओं का निर्धारण आवश्यक होता है। यह सामूहिक निर्णय को प्रेरणा देता है। सामूहिक निर्णय आवश्यक होता है। क्योंकि-

1. दबाव-निर्णय से समूह-निर्णय अधिक लाभाकारी होता है ।
2. सामूहिक निर्ण में क्षमताओं का विकास निश्चित समय पर होता है ।
3. बिना सामूहिक निर्णय के समूह -सदस्य भाग नहीं ले सकते है ।
4. जब सदस्य निर्णय में भाग लेते हैं तो अपना निर्णय समझकर कार्य करते है ।
5. सामूहिक निर्णय व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रोत्साहन देता है ।
6. सामूहिक निर्णय द्वारा व्यक्ति की विचार-पद्धति तथा सांस्कृतिक आदतों में परिवर्तन आसानी से लाया जा सकता है ।

(4) सामूहिक क्रिया-

1. प्रभावात्मक सामूहिक क्रिया समूह के एकमत होने पर आधारित होती है । वह उन व्यक्तियों की आवश्यकताओं के कारण उत्पन्न होती है जो इसमें शामिल हो रहे है ।
2. यह समूह-सदस्यों का उतरदायित्व है कि वह सामूहिक निर्णय पर कार्य करें
3. प्रभावात्मक समूह निर्णय पर पहुँचने की कमी या अयोग्ता, व्यक्तियों की क्षमताओं के प्रयोग में असफलता, स्त्रोतों को प्रयोग में लाने की अक्षमता तथा मूल्यांकन में असमर्थता का विरोध करता है ।
4. सामूहिक निर्णय तथा सामूहिक क्रिया दोनों संबंधित होते हैं। एक के बिना दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं है ।
5. प्रजातांत्रिक समूह में व्यक्तियों तथा क्रियाओं में परिवर्तन आसानी से आ सकता है ।

AEOI

अध्याय 9

सामाजिक समाज कार्य में कार्यकर्ता की भूमिका (Role of Worker in Social Group Work)

सामाजिक कार्यकर्ता समूह की आवश्यकता एवं सामूहिक स्थितियों की जरूरत के अनुरूप अनेक प्रकार की भूमिका पूर्ण करता है । निम्न प्रमुख भूमिकायें है ।

(अ) समूह के साथ (With Group)-

1. सार्थकता की भूमिका- कार्यकर्ता समूह-सदस्यों को अपनी आवश्यकताओं एवं समस्याओं को समझने में सहायता प्रदान करता है । वह उन स्त्रोतों की जानकारी देना है जिनसे आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है तथा सदस्य सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। वह समूह निर्माण के लिए व्यक्तियों में अपनी वर्तमान स्थिति के प्रति असंतोष उत्पन्न करता है जिससे वे परस्पर सहयोग एवं संयुक्त प्रयास के लिए एकत्रित होते हैं। वह सर्वसम्मति के आधार पर समूह का निर्माण करता है । वह सदस्यों में अपनी समस्याओं के समाधान करने की शक्ति का विकास करता है तथा कार्यक्रमों के चयन की योग्यता का विकास करता है । वह सभी सदस्यों के भागीकरण को बढावा देता है ।

2. पथ-प्रदर्शक के रूप में- वह सदस्यों को संस्था व समुदाय की सुविधाओं एवं अन्य स्रोतों से अवगत कराता है, जिनकी उन्हें आवश्यकता तो है परन्तु उन्हें उसकी जानकारी नहीं है। वह सदस्यों की अपनी भूमिका का एहसास कराता है तथा आवश्यक मुद्वों पर प्रकाश डालता है। आवश्यकता पडने पर प्रत्यक्ष रूप से समूह को सहायता करता है। वह सामूहिक अन्त:क्रिया का निर्देशन करता है।

3. अधिवक्ता के रूप में-कार्यकर्ता सदस्यों की समस्याओं को उच्च अधिकारियों के समक्ष रखता है तथा आवश्यक सेवायें प्रदान करने की सिफारिश करता है। वह संस्था की नीतियों, कार्यक्रमों व योजनाओं में परिवर्तन करने की भी सिफारिश करता है।

4. विशेषज्ञ के रूप में-कार्यकर्ता सदस्यों को आवश्यकता पडने पर विशेष सलाह देता है। वह समूह समस्या का विश्लेष्ण करता है तथा उसका निदान करता है। समूह को विधिवत् तथा अधिक प्रभावकारी होने के लिए उपयुक्त तरीकों की जानकारी प्रदान करता है। वह संस्था व समूह के कार्यक्रमों का मूल्यांकन करता है।

5. चिकित्सक के रूप में - कार्यकर्ता समूह की कुछ समस्याओं का प्रयास पहले करता है जो अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं और जिनकी जड़ें काफी गहरी हैं। वह समूह को उन शक्तियों से परिचित करवाता है जो विघटनात्मक हैं तथा जिनका प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पडता है। वह समूह को इस प्रकार से प्रेरित करता है। जिससे सदस्य स्वयं परिवर्तन की माँग करते हैं। सदस्यो के अहं को सुदृढ़ करता है।

6. परिवर्तक के रूप में - कार्यकर्ता सदस्यों की आदतों में परिवर्तन लाने के लिए अनेक प्रयास करता है, क्योंकि कभी-कभी आादतों के कारण ही समस्या उठ खडी होती हैं और परिवार व समाज में विघटन उत्पन्न कर देती हैं। कार्यकर्ता सदस्यों के कार्य करने के तरीकों में भी परिवर्तन लाने का प्रयास करता है, क्योंकि जब तक कार्य करने के ढंगों में बदलाव नहीं आयेगा, तब तक समूह का किसी भी प्रकार से विकास संम्भव नहीं है। वह सदस्यों की मनोवृत्तियों में भी परिवर्तन लाने के कार्यक्रम प्रस्तुत करता है इस प्रकार से सारांश में कहा जा सकता है कि कार्यकर्ता सामाजिक व्यवस्था को गदलने का बृहद् उद्देश्य रखता है।

7. सूचनादाता के रूप में - कार्यकर्ता समूह-सदस्यों को संस्था से क्या-क्या सुविधायें प्राप्त हो सकती हैं और वे उनमें क्या लाभ उठा सकते हैं, की जानकारी देता है अत: उन्हे भी विस्तार से समझता है।

8. सहायक के रूप में - कार्यकर्ता समूह की सहायक लक्ष्य निधारण तथा लक्ष्यों को प्रापत करने के तरीकों को निश्चित करने में करता है। वह संस्था से सहायता लेने में समूह की मदद करता है। कार्यक्रमों के निर्धारण तथा उनका चयन करने में वह सहायता करता है। समूह में सामूहिक चेतना तथा सामूहिक भावना विकसित करने के लिए समूह की सहायता करता है। वह सदस्यों को उनकी क्षमताओं एवं योग्यताओं से अवगत कराता है, जिससे वे अत्म मूल्यांकन करने में समर्थ होते हैं तथा उन्हीं के अनुरूप कार्यक्रम चलाने का निर्णय लेते हैं। वह उन आन्तरिक समस्याओं की ओर अमूह को इंगित करता है जिनके कारण समूह अपने अभिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने में विलम्ब लगा रहा है। वह इन समस्याओं के समाधान में समूह की सहायता प्रदान करता है। वह समूह संगठन को सुदृढ़ बनाने तथा प्रत्येक सदस्य को उत्तरदायित्व ग्रहण करने में सहायता प्रदान करता है। वह समूह के साथ कार्य का स्तर निर्धारित करता है तथा नियंत्रण के साधनों को प्रभावकारी बनाता है। वह समुदाय में उपनब्ध स्रोतों से परिचय करवाकर सहायता दिलाता है एवं अन्य संस्थाओं से सम्पर्क करवाता है।

(ब) प्राथमिक कार्यकर्ताओं का अधीक्षण **(Supervising the Primary Worker)**- सामूहिक कार्यकर्ता समूहों की सहायता करने के पश्चात् कार्यकर्ताओं की ओर अपना ध्यान आकृष्ट करता है। वह यहाँ पर अधीक्षक की भूमिका निभाता है, जिसके द्वारा ध्यान आकृष्ट करता है। वह यहाँ पर अधीक्षक की भूमिका निभाता है, जिसके द्वारा समूह की अप्रत्यक्ष ढंग से सहायता प्रदान करता है उसका कार्य

कार्यकर्ताओं में निपुणता एवं दक्षता का विकास करना है। वह उनमें की वृद्धि करता है तथा नये-नये तरीकों को समझता है और निपुणताओं को विकसित करता है। अधीक्षक अपने तथा दूसरे व्यक्तियों के विषय में और सामाजिक स्थिति तथा संस्था के कार्यों के विषय में अपने ज्ञान एवं समझ के आधार पर कायकर्ताओं की सहायता कार्य को पूर्ण करने तथा उन उद्देश्यों को प्राप्त करेन में करता है जिसके लिए संस्था संगठित की गई है।

वह कार्यकार्ताओं के कार्यों का अवलाचन करता है तथा सिद्धांतों, निपुणताओं प्रविधियों एवं अहं के उचित प्रयोग करने पर बल देता है। उनमें अक्षमताओं को देखता है तथा उनको दूर करने का प्रयास करता है जिससे वह समूह के साथ अपने संबंध का भली भाँति प्रयोग कर सकें। उनमें स्वयं समझने की शक्ति का विकास करता है। तथा उन मनावृत्तियों, व्यवहारों तथा विचारों में परिवर्तन लाता है जो समूह के उचित संबंध-स्थापन में बाधक होते हैं। उनकां निर्धारित भूमिका पर सदैव चलने की सलाह देता है और जहाँ कही वे विचलित होते हैं, वहाँ उनकी अपने ज्ञान अनुभव तथा बुद्धि द्वारा सहायता करता है।

अधीक्षक शिक्षात्मक आवश्यकताओं तथा कार्यकर्ता के उद्देश्यों पर विशेष ध्यान देता है। कार्यकर्ताओ में ऐसी योग्यताओं का विकास करता है जिससे वे स्वयं उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होते हैं तथा स्वतंत्र इच्छा से समूह के साथ कार्य कर सकते हैं। नवीन परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं में भूमिका निभाने की योग्यता का विकास करता है। वह कार्यकर्ता के उन कारणों का पता लगाता है जिससे वह किसी सदस्य से अप्रसन्न या परेशान रहता है। वह कार्यकर्ता को व्यवहार का उचित अर्थ समझने में तथा अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखकर समूह सदस्यों की भावनाओं पर प्रभावात्मक नियंत्रण रखने में मदद करता है।

अधीक्षक के रूप में वह कार्यकर्ता को समूह के प्रति अपनी सकारात्मक एवं नकारात्मक भावनाओं को वयक्त करने का अवसर प्रदान करता है। वह एसी स्थिति उत्पन्न करता है जहाँ पर कार्यकर्ता अपनी इन भावनाओं को व्यक्त करने में सुरक्षा महसूस करता है। वह न केवल व्यक्त करने का अवसर देता है बल्कि इन भावनाओं की वास्तविकता का पता लगाता है। वह कार्यकर्ता के कार्यों का मूल्यांकन भी साथ ही करता चलता है।

अधीक्षक कार्यकर्ताओं की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया को समझता है, विकास के स्तरों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है तथा जहाँ पर प्रतिगमन होता है, वहाँ पर वह स्वयं सहभागिता करता है। अतः वह कार्यकर्ता को धीरे-धीरे, रूक-रूक कर नयी शिक्षा, कला, निपुणता, ज्ञान, क्षमता इत्यादि प्रदान करता है। कभी-कभी कार्यकर्ता कोई कार्य न पुरा होने पर अपने में हीन भावना उत्पन्न करलेता है। ऐसी स्थिति में अधीक्षक बहुत

ही सावधानी से कार्यकर्ता के विचारों को ठेस न पुहँचाते हुए सहायता करता है। चुँकि कार्यकर्ताओं में भिन्नता होती है, अत: वह प्रत्येक कार्यकर्ता का अध्ययन करता है और उनके स्तर के अनुसार कार्य करने में उनकी सहायता करता है।

वह कार्यकर्ताओं में सामूहिक कार्य के दर्शन का विकास करता है। वह उनकी अपनी सीमाओं को समझने में सहायता करता है। वह उनकी सहायता करता है जो सहयता चाहते हैं तथा उनकी भी जो कार्य को समझ नहीं पाते हैं।

(स) सामूहिक कार्य प्रदान करने वाली संस्थाओं एवं विभागों का प्रशासन **(Administration of Institution and Department of Social Work)**- सामाजिक सामूहिक कार्य का तीसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र प्रशासन हैं। इसके अन्तर्गत वह सामाजिक संस्थाओं का संगठन इस आधार पर करता है जिसके सेवार्थियों को अधिक से अधिक लाभ पहुँचा सके। उसका उद्देश्य सामूहिक क्रियाओं को उचित प्रकार से सम्पन्न करना तथा बाधाओं को दूर करना है। प्रशासकीय सेवाओं का संबंध सामाजिक सेवा को लाभप्रद तरीकों द्वारा समूहों तक पहुँचाना है। कार्यकर्ता यहाँ पर नियोजन, संगठन, कर्मचारियों के चयन तथा उनके नियंत्रण, निर्देशन, सहयोग अभिलेख, तथा बजट क्रियाओं में भाग लेता है।

नियोजन द्वारा वह भविष्य के कार्यक्रमों का निर्धारण करता है तथा अपनी सीमाओं को ध्यान में रखकर उद्देश्य निर्धारित करता है। वह इस प्रकार से नियोजनकरता है जिससे समय पडने पर परिवर्तन हो सके तथा सभी सदस्य एवं कर्मचारी उसको अपना सकें। संगठन के कार्य में वह औपचारिक संरचना की रचना करता है जिससे संस्था के सभी सदस्य एक-दूसरे से कार्यात्मक संबंध स्थापित कर सकें। प्रत्येक कर्मचारी का कार्य स्पष्ट होता है तथा कार्यक्रम की प्रक्रिया व्यवस्थित रूप से सम्पन्न होती है।

संगठन एवं प्रशासन चाहे जितना उपयुक्त क्यों न हो नियोजन सीमाओं के अंतर्गत क्यों न हो, परन्तु यदि कर्मचारीगण कार्य-कुशल नहीं हैं तो कोई भी संस्था उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकती। उद्देश्य की पूर्ति समय पर नही होगी तो कार्यान्वयन उचित ढंग से नहीं हो सकेगा कार्यकर्ता का कार्य यहाँ पर संस्था के लिए अनुभवी, शिक्षित, योग्य कर्मचारी को चयन करना होता है। वह उनका नियंत्रण भी करता है तथा कार्यक्रम का निर्देशन भी करता है। इस कार्य के अंतर्गत निर्णय लेना, उत्तरदायित्व का बँटवारा करना तथा शक्ति का विकेन्द्रीकरण आता है। वह कर्मचारियों के साथ इन कार्यों को सम्पन्न करता है। वह कर्मचारियों में सहयोग की भावना उत्पन्न करता है। वहाँ पर उसका उद्देश्य संस्था के कार्य की पूर्ति हेतु प्रशासन में ऊपर से नीचे तक मधुर संबंध बनाए रखना होता है। उसका अन्य महत्वपूर्ण कार्य अभिलेखनल करना है, क्योंकि सभी व्यक्ति यह जानना चाहते हैं कि संस्था क्या कर रही है, किस दिशा में प्रयत्नशील है तथा वह अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में कहाँ तक सफल हो रही? प्रशासकीय नियंत्रण के लिए

भी अभिलेखन एक आवश्यक यंत्र है। लेखा-जोखा तैयार करना भी एक आवश्यक कार्य है। यह संस्था के कार्यक्रम के कार्यान्वयन तथा मूल्यांकन के लिए जरूरी है

(ब) सामाजिक सामूहिक कार्य-सेवाओं को प्रदान करने वाली संस्थाओं के लिए सामुदायिक नियोजन **(Community Planning for Social Group Work)**- कार्यकर्ता संस्था के लिए सामुदायिक नियोजन करता है जिससे उसकी उपयोगिता बढ़ती है तथा उसकी जरूरतों का पता चलता है। वह समुदाय की अवस्थाओं जैसे शिक्षा, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय, सांस्कृतिक तथा अन्य विभिन्नताओं के आधार पर कार्यक्रम का नियोजन करता है। वह समुदाय के रीति-रिवाजों का भी ध्यान रखता है। वह समुदाय में समूह-निर्माण की आवश्यकता एवं उपयोगिता संबंधी जन-जागृति को बढ़ावा देता है। वह समुदाय के विशिष्ट व्यक्तियों के समूह से संपर्क स्थापित करता है और इस प्रकार उनका सहयोग प्राप्त करता है। समूह के हित में वह सांस्कुतिक एवं सामाजिक मूल्यों का परिमार्जन करता है। कार्यकर्ता के लिए सामुदायिक नियोजन वह साधन है जिसके द्वारा संस्थाएँ, व्यक्ति समूह तथा संगठन ऐच्छिक रूप से समुदाय की समस्याओं का अध्ययन करता है और उन पर शोध-कार्य करता है, तत्पश्चात् सेवाओं की उपयोगिता तथा उपयुक्तता का पता लगाकर संस्था को अवगत कराता है और नवीन सेवाओं का विकास करता है।

सारांश में, सामूहिक कार्यकर्ता अपनी संवाओं द्वारा सामाजिक लक्ष्यों कों प्राप्त करता है, व्यक्ति को स्वतंत्र विकास तथा उन्नति के लिए अवसर प्रदान करता है तथा व्यक्तित्व के सामान्य निर्माण के लिए अनूकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है। वह सामाजिक संबंधो को आधार मानकर विकासात्मक एवं शिक्षात्मक क्रियाओं का आयोजन व्यक्ति की समस्याओं के समाधान के लिए करता है और इस प्रकार उसके सर्वांगीण विकास के लिए प्रयत्नशील रहता है।

अध्याय 10

सामाजिक समूह कार्य में समूह की भूमिका
(Role of Group in Social Group Work)

समूह की अवधारणा (Concepts of Group-समूह व्यक्ति तथा समुदाय को सामाजिक-आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से सशक्त करने का माध्यम है। समूह व्यक्तियों अथवा समुदाय के बीच विकसित किया गया एक आधार मंच है जो सामूहिक क्रियाओं एवं प्रयासों को उत्पन्न करता है। इस आधार पर एक विकास प्रक्रिया की शुरूआत होती है जिससे वैयक्तिक, परिवार एवं समुदाय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों अवसर प्राप्त होते हैं।

सामान्य रूप से समूह के दो स्वरूप होते हैं- प्रथम स्वरूप वह हैं जिसमें लोग अपनी तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा करने लिए सामूहिक रूप से प्रयास करते हैं, जैसे-वस्तियों में किए जाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्वच्छता एवं सफाई से संबंधित कार्य इत्यादि। इस प्रकार संगठन निर्माण हेतु आवश्यकता स्वयं उत्पन्न होती हैं। इनमें लम्बे समय तक सामूहिक प्रयासों को जारी रखने हेतु आवश्यक व्यवस्था एवं प्रक्रियाओं का अभाव होता है।

समूह का दूसरा स्वरूप के अन्तर्गत समुह को एक स्थाई रणनीति एवं पद्धति के रूप में विकसित किया जाता है। इसका उद्देश्य तात्कालिक एवं दीर्घकालिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। इस प्रकार समूहों का उद्भव एक प्रक्रिया के रूप में होता है। यह तात्कालिक एवं दीर्घकालिक दोनों प्रकार की समस्याओं एवं मुद्दों का हल करने हेतु संगठित होते हैं।

समूह की आवश्यकता (Need of Group)-किसी समुदाय में निरंतर विकास जरूरी है। अत: यह आवश्यक है कि समुदाय के विकास एवं समुदाय की समस्याओं के समाधान हेतु सभी सदस्य अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझकर सामूहिक सहभागिता निभाएँ। समूह एक ऐसा आधार है, जो व्यक्ति के प्रयासों, रूचियों एवं आवश्यकताओं को सामूहिक प्रक्रिया के रूप में संगठित एवं संचालित करता है। समूह की आवश्यकताएँ निम्नलिखित हैं -

1. समूह के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता एवं ज्ञान और अनुभव में समुचित विकास होता है।
2. समूह संगठन एक छोटे प्रकार की कार्यशाला है, जिसमें सीखने और समझने की प्रक्रिया से आत्मनिर्भरता एवं क्षमताएँ विकसित होती हैं।
3. समूह में प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार योगदान देते हैं। समूह में व्यक्ति अपने विकास हेतु जुड़कर विकास के मार्ग पर अग्रसर होते हैं।
4. समूह में कार्य करने से समय, धन और शक्ति तीनों की बचत होती है।
5. समूह में कार्य करने से समय, धन और शक्ति तीनों की बचत होती है।

समूह गठन की प्रक्रिया (Process of Group Formation) - किसी भी समूह का गठन विभिन्न व्यक्तियों द्वारा निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। विभिन्न विचारधारा एवं क्षमता वाले व्यक्तियों को जोडने की प्रक्रिया ही समूह गठन की प्रक्रिया होती है। अत: आवश्यक है कि समूह के गठन से पूर्व समूह के सदस्यों के मध्य विस्तार से सभी मुद्दों पर विचार-विमर्श होना चाहिए, जिससे समुह के गठन एवं संचालन हेतु एकमत से निर्णय लिया जा सके। जल्दबाजी में अथवा स्वार्थों से प्रेरित होकर किए गए समूह का गठन सॅल नहीं होता और जल्द ही ऐसे समूह समाप्त हो जाते हैं।

समूह गठन की प्रक्रिया विभिन्न चरणों में योजनाबद्ध तरीके से विस्तृत विचार-विमर्श के बाद किया जाना चाहिए। समुह गठन की प्रक्रिया के समय कुछ निम्न बिन्दुआं पर भी ध्यान देना आवश्यक है-

समूह गठन हेतु व्यक्तियों अथ्वा वर्गों का चयन- समुदाय में सभी प्रकार के व्यक्ति पाए जात हैं। कुछ अधिक सम्पन्न होते हैं, कुछ आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं, कुछ शिक्षित होते हैं तों कुछ अशिक्षित भी होते हैं, कुछ अनुभवी एवं प्रौढ़ होते हैं तो कुछ नवयुवक होते हैं। अत: समूह गठन की प्रक्रिया के आरंभ से ही यह प्रयास किया जाना चाहिए कि समूह गठन की प्रक्रिया में समान क्षमता, समान विचारधारा एवं आर्थिक व मानसिक रूप से समान व्यक्तियों को समूह के सदस्य के लिए चयनित किया जाए, क्योकि समान समस्याओं एवं मुद्दों वाले व्यक्ति आसानी से संगठित हो जाते हैं एवं उनका संगठन सफल एवं स्थायी होता है। इसलिए उचित होगा कि समान विचारधारा, सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि एवं उद्देश्यों वाले व्यक्तियों को ही समूह में सम्मिलित किया जाए।

समूह गठन एवं सदस्यता प्राप्ति -

(1) सदस्यों की संख्या,

(2) सदस्यता हेतु मापदंड,

(3) सदस्यता शुल्क का निधारण
(4) सदस्यता समाप्ति की परिस्थितियाँ
(5) सदस्यो केकर्तव्य एवं अधिकार
(6) समूह के पदाधिकारियोंका चयन
(7) पदाधिकारियों के अधिकार एवं कर्तव्य
(8) पदाधिकारियों का कार्यकाल
(9) पदाधिकारियों को पदच्युत करने की परिस्थितियाँ
(10) समूह की बैठक हेतु स्थान एवं समय का निर्धारण।

समूह गठन का प्रस्ताव - समुदाय में चयनित किये गये नए सदस्यों को एक बैठक का आयोजन कर समूह गठन के आशय का एक प्रस्ताव बनाया जाना चाहिए। इस प्रस्ताव में समूह में सम्मिलित किए जाने वाले सदस्य, समूह के उद्देश्य, क्रियाकलाप एवं नियमावली पर चर्चा होनी चाहिएं यह प्रस्ताव इस बात का प्रतीक होगा कि सभी व्यक्ति स्वेच्छा से सामुहिक होकर, समुदाय की उन्नति के लिए कार्य करने को तत्पर है।

समूह प्रबंधन - समूह के गठन का उद्देश्य समूह के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना होता है। जिसके लिए समूह के कार्य-कलाप एवं गतिविधियों का संचालन सामूहिक रूप से नियमित किया जाना चाहिए। इस प्रकार किसी भी समूह का क्रिया कलाप एवं गतिविधियों का नियकमत संचालन ही समूह प्रबन्धन कहलाता है। समूह प्रबन्धन के अंतर्गत समूह के सदस्य अपने क्षमता एवं संसाधनों से सामूहिक क्रियाकलापों एवं गतिविधयों के लिए प्रबंध करते हैं, जिससे समूह अपने लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होता है।

किसी भी समूह की सफलता समूह के प्रबन्ध पर निर्भर करती है। समूह के प्रबन्ध के लिए कुछ आधारभूत तत्व होते हैं जो समूह की क्रियाकलापों में गतिशीलता लाने में सहायक ही नहीं होते वरन् समूह को स्थायित्व भी प्रदान करते हैं

समूह प्रबन्ध के लिए निम्न लिखित आध्धरभूत तत्व हैं-

(1) समानता - यद्यपि किसी भी समूह में अलग-अलग सोच, क्षमता, वर्ग, के व्यक्ति समूह के सदस्य हाते हैं, परन्तु उनके मध्य आपस में समानता का व्यवहार किया जाना चाहिए। इस प्रकार समानता का व्यवहार रखें जाने से समूह के सदस्य समूह के हित में एक समान योगदान देने के लिए तत्पर हो सकते हैं। इसके साथ इस बात की भी संभावना नहीं रहती है कि समूह का अमुक सदस्य अधिक प्रभावशाली है और उसे अधिक क्रियाशील होना चाहिए। या कोई सदस्य अधिक लाभ प्राप्त कर रहा है। समूह संचालन के अन्तर्गत कार्यो के वितरण एवं दायित्वों का निर्वाहन लगभग बराबर रहना चाहिए।

(2) एकता - मात्र किसी भी समूह का गठन करना ही महत्वपूर्ण नहीं होता है बल्कि समूह का सफल प्रबन्धन महत्वपूर्ण होता है। जिस पर समूह का अस्तित्व निर्भर होता है। अत: समूह कके सॅल प्रबन्ध के लिए समूह के सदस्यों के बीच एकता होनी चाहिए। यदि समूह के सदस्यों के मध्य आपस में एकता नहीं होगी तो वे एकजुट होकर समूह के संचालन/क्रियान्वयन में हिस्सा नहीं ले सकते हैं और समूह को प्राप्त होने वाले फलदायी परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं।

(3) अपनत्व की भावना - किसी भी समूह के प्रबन्धन में समूह के सभी सदस्य अपनी-अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हैं इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि समूह के सदस्यों के मध्य आपस में अपनत्व की भावना होनी चाहिए। इस प्रकार अपनत्व की भावना हाने से समूह के सदस्य आपस में एक-देसरे से अधिक से अधिक सहयोग कर सकते हैं ।

(4) पारदर्शिता - किसी भी समूह के सफल प्रबंध के लिए यह बहुत आवश्यक होता है कि समूह के क्रियाकलापों में पारदर्शिता अपनाई जाए। जैसे-समूह की आर्थिक स्थित समूह की व्यवस्था, समूह का संचालन आदि कई महत्वपूर्ण कार्य होते हैं। जिनमें पारदर्शिता रहती है। समूह के सदस्यों के मध्य किसी भी अनावश्यक संदेह शंका की संभावना समाप्त हो जाती है।

AEOI

अध्याय 11

सामाजिक समूह कार्य में संस्था की भूमिका (Role of Institution in Social Group Work)

सामाजिक सामूहिक कार्य के तीन प्रमुख भाग हैं -

1. कार्यकर्ता 2. समूह एवं 3. सामाजिक संस्था

इन तीनों भागों का मुख्य उद्देश्य लगभग समान है। सामाजिक संस्था द्वारा ही कार्यकर्ता समूह को संवा प्रदान करता है। अत: उसके उद्देश्य एवं समूह के उद्देश्य संस्था की प्रकृति पर निभर होते हैं। कार्यकर्ता को जिस सीमा तक संस्था के विषय में ज्ञान होता है, वह अपनी सेवाओं को समूह के साथ उसी तक सम्पन्न करता है। समाज कार्य दर्शन-संस्था, कार्यकर्ता एवं समूह को प्रभावित करता है। चूंकि कार्यकर्ता संस्था का कर्मचारी होता है। अत: चह सामाजिक सामूहिक कार्य की निपुणताओं का उपयोग संस्था प्रतिनिधि के रूप में करता है। समुदाय में उसकी सेवाओं को आवश्यक माना जाता है तथा संस्था उन सेवाओं को प्रदान करने का साधन मानी जाती है।

सामूहिक समाज कार्य में संस्थाओं का योगदान (Contribution of Institutions in Social Group Work) - सामाजिक सामूहिक कार्य का विकास सामाजिक संस्थाओं द्वारा ही हुआ है,अत: सामाजिक सामूहिक कार्य सामाजिक कल्याणकारी संस्थाओं में उपयोग में लाया जाता है। इन संस्थाओं के स्वरूप अलग-अलग हो सकते हैं, परन्तु उद्देश्य लगभग समान होते हैं। उदाहरण के लिए, चरित्र निर्माण कार्य, सामूहिक कार्य, खाली समय का कार्य, मनोरंजनात्मक तथा शिक्षणात्मक कार्य एवं युवा संबंधी संवाएँ। इन क्षत्रों से संबंधित संस्थाएँ सामाजिक सामूहिक कार्य प्रणाली का उपयोग करती है। इन संस्थाओं के अतिरिक्त अब नयी-नयी संस्थाएँ सामजिक सामूहिक कार्य का उपयोग अपने व्यवहार में करने लगी हैं, जिनमें चिकित्सालय, बालरक्षा संस्था, राज्य सुरक्षा, गृह सुरधारात्मक, भवन विकास योजना, मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, पारिवारिक जीवन शिक्षा संस्थाएँ कुछ प्रमुख हैं। सामाजिक व्यवस्थापन गृह सामुदायिक केन्द्र बालक बालकाओं के क्लब, ब्वाय स्काउट्स, गर्ल स्काउट्स, बाई॰ एम॰ सी॰ ए॰ तथा वाई॰ डब्ल्यू॰ सी॰ ए॰ आदि ऐसी संस्थाएँ है जो साामजिक सामूहिक

कार्य प्रक्रिया का उपयोग करती हैं श्रम कल्याण केन्द्र, बालं संस्थाएँ, विद्यालय इत्यादि भी सामूहिक कार्य प्रणाली का उपयोग करने लगे हैं।

समाज कार्य प्रणालियों के विकास के लिए यह सत्य है कि पहले सेवाओं की आवश्यकता महसूस हूई, इसके पश्चात् इन आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए संस्थाओं का निर्माण हुआ। जब वे कार्य करने लगीीं तो इनकी कार्य पद्धति का अध्ययन किया गया तथा जो पद्धति उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुकूल एवं वांछनीय हुई, उसके उपयोग पर बल दिया गया। सामूहिक कार्य पद्धति सबसे अधिक अनुकूल सिद्ध हुई। इस प्रकार सामाजिक सामूहिक कार्य का विकास हुआ। सामाजिक सामूहिक कार्य की उत्पत्ति चूँकि ऐच्छिक सामाजिक संस्थाओं में हुई। इसकी उत्पत्ति वाली संस्थाएँ प्रारम्भ में बच्चों तथा किशोरों के लिए प्रयत्नशील थी। अतः यह भी समझा जाता है कि सामाजिक सामूहिक कार्य बच्चोंतथा किशारों के लिए ही उपयुक्त है, युवकों के लिए नहीं। इसके अतिरिक्त चूँकि सामाजिक संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन प्रदान करना है, अतः कुछ लोग सामूहिक कार्य को मनोरंजन का साधन समझते हैं। वास्तव में सामाजिक कार्य एक मूल्यवान तरीका है जो ऐच्छिक तथा अनैच्छिक संस्थाओं के लिए, सभी आयु के सदस्यों के समूहों के लिए तथा न केवल मनोरंजन के लिए वरन् सभी प्रकार के कार्यों के लिए उपयुक्त हैं।

संस्था के कार्य की विशेषता कार्यकर्ता के मानव व्यवहार के ज्ञान तथा समूह सदस्यों की अन्तःक्रिया को प्रभावित करने वाली शक्ति पर निर्भर करती है। उसकी कुशलता भी महत्वपूर्ण होती है। वह जिस प्रकार से सदस्यों को स्वतंत्र रूप से सामूहिक क्रिया में भागलेने का अवसर देता है, सामूहिक प्रक्रिया का निर्देशन करता है एवं उन पर अपने अधिकार का उपयोग करता है, इत्यादि बातों पर संस्था के कार्य तथा प्रणाली निर्भर होते हैं। कार्यकर्ता समुदाय के मूल्यों के अनुसार समूह कार्य के स्तर को निर्धारित करता है। यदि मूल्य स्तर निम्न होते हैं तो वह भागीकरण के निपुण निदेर्शन द्वारा सामूहिक चेतना का विकास करता है तथा निम्न स्तर के स्थान पर उच्च मूल्यो की स्थापना करता है। इस प्रकार सम्पूर्ण समुदाय लाभान्वित होता रहता है। वह इन क्रियाओं को समूह चयन के माध्यम से संपादित करता है। वह सुझावों तथा निर्देशनों द्वारा रूचिकर क्रियाओं से समुदाय को अनुभव कराता है। जिससे नये मूल्य विकसित होते हैं।

सामाजिक संस्थाओं के प्रकार एवं सामाजिक समूह कार्य (Type of Social Institutions and Social Group Work) -सामाजिक संस्थाओं को चार प्रमुख भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है -

1. वे संस्थाएँ जिनका उद्देश्य सेवाथियों को वैयक्तिक तरीके से अथवा समूहों द्वारा सेवा प्रदान करना होता है। इस प्रकार के अन्तर्गत समाज कल्याण विभाग, परिवार एवं बाल कल्याण दत्तक संस्थाएँ, वाई॰ डब्ल्यू॰ सी॰ ए॰ इत्यादि आते है।

2. वे संस्थाएँ जो सामाजिक सामूहिक कार्य सेवाओं के अतिरिक्त अन्य प्रकार की सेवाऐ भी प्रदान करते हैं। इनमें रेड क्रॉस सोसायटी व्यवस्था गृह मनोरंजन गृह तथा अन्य संबंधित संस्थाएँ आती हैं।

3 तीसरे प्रकार के अन्तर्गत वे संस्थाएँ आती हैं जो उपचारात्मक कार्य करती हैं जैसे- अस्पताल, क्लीनिक, स्कूल, न्यायालय, बाल न्यायालय, प्रोबेशन एण्ड पैरोल ऑफिस, व्यावसायिक पुनर्वास सेवाएँ इत्यदि।

4. चौथे प्रकार के अन्तर्गत उन संस्थाओं का वर्णन किया जा सकता है जो प्रत्यक्ष रूप से लोगों को सेवाएँ नहीं प्रदान करतीं, परन्तु अन्य सामाजिक संस्थाओं की सहायता करती हैं, जैसे - सामूदायिक कल्याण परिषद्, समाज कल्याण, सामुदायिक ट्रस्ट इत्यादि।

सामाजिक संस्थाओं के कार्य एवं उद्देश्य (Aims and Work of Social Institutions) - सामाजिक संस्थाओं के प्रकार के आधार पर उनके अलग-अलग कार्य एवं उद्देश्य होते हैं। कुछ संस्थाएँ कुछ विशेष आयु वाले सेवार्थियों को सेवा प्रदान करती हैं, जैसे बच्चों की संस्थाएँ तथा कुछ लैंगिक आधार पर सेवाएँ करती हैं जो संस्थाएँ खाली समय की सेवाएँ प्रदान करती है, उनकी क्रियाएँ लगभग समान होती हैं, परन्तु उन क्रियाओं का प्रयोग एक जैसे तरीके से नहीं करतीं। कुछ संस्थाएँ एक विशेष क्रिया पर केन्द्रित होती हैं। उनका उद्देश्य क्रियाओं का इस प्रकार से संगठनकरना होता है जिससे भाग लेने वालों को आनन्द मिल सके तथा हतोत्साह, तनाव और मनोवैज्ञानिक असंतोष को दूर किया जा सके एवं शारीरिक, मानसिक विकास सम्भव हो। ऐसा करने का उद्देश्य यह होता है कि इनमें भाग लेने वाले सामाजिक मनोवृत्ति का विकास करते हैं तथा सामूहिकता व सहकारिता की शक्ति एवं भावना का विकास होता है।

कुछ संस्थाएँ आत्मनिर्भरता, तथा सहकारिता आदि गुणों पर विशेष बल देती हैं। बालक बालिकाओं में इन गुणों के विकास के लिए अनेक कार्यक्रमो का नियोजन करती हैं। उनके उद्देश्यों के पीछे यह सिद्धान्त होता है कि ये गुण स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होते हैं तथा उनका विकास संस्था के कार्यक्रमों में भाग लेकर होता है। बच्चों को सामूहिक क्रियाओंके संचालन तथा नियोजन में साथ-साथ अवसर प्रदान किया जाता है। उनका निर्देशन, व्यक्तिगत सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकोस के लिए किया जाता है। सामूहिक कार्य इन संस्थाओं में सामूहिक नियोजन तथा क्रियाओं के संचालन में सहयोग पर अधिक महत्व देता है। अन्य प्रकार की संस्थाएँ सामाजिक समस्याओं से संबंधित हांती हैं। वे अपने सदस्यों को सामाजिक जीवन में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रेरित करती हैं।

सामाजिक सामूहिक कार्यप्रणाली को उपयोग में लाने के लिए संस्था को यह देखना होता है कि वह किस प्रकार के कार्य सम्पादित करने जा रही है तथा यह विश्वास करती है कि सामाजिक सामूहिक कार्य पद्धतति उन कार्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होती

हैं। वे संस्थाएँ, जो प्रजातांत्रिक मूल्यो पर आधारित होती हैं सामाजिक सामूहिक कार्य प्रणाली का उपयोग अपनी कार्य पद्धति में कर सकती हैं।

सामूहिक समाज कार्य में संस्था की विशेषताएँ (Characteristics of Institution in Social Group Work)- सामूहिक समाज कार्य में अनेक तरह की संस्थाएँ योगदान देती हैं तथा उनके उद्देश्य भी भिन्न-भिन्न होते हैं, अत: उनकी विशेषओं में भी भिन्नता पायी जाती है। परन्तु सभी सेस्थाओं की कुछ विशेषताएँ एक समान भी होती हैं, जो निम्नलिखित हैं-

1. सामाजिक संस्थाओं का उद्देश्य व्यक्तियों तथा सामाजिक विकास को साधन के रूप में प्रयुक्त करना होता है। जिससे प्रजातांत्रिक समाज कायम हो सके। यद्यपि इन संस्थाओं की मनोवृत्ति व्यक्तियो की विकासात्मक सहायता में भिन्न-भिन्न हो सकती हैं, जैसे कुछ संस्थाएँ नागरिक भागीकरण पर बल देती हैं तथा कुछ समाजीकरण व सहकारिता पर, कुछ संस्थाओं का स्वरूप धार्मिक होता है तथा कुछ का विकासात्मक। परन्तु इन सभी संस्थाओं का मुख्य कार्य सामुदायिक जीवन के लिए व्यक्ति और उसका विकास होता है।

2. सामाजिक संस्थाएँ उन व्यक्तियों के लिए कार्य करती हैं जो स्वत: अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छा के कारण ऐच्छिक रूप से भाग लेते हैं। उनका संस्था से संबंध स्थापित करने का उद्देश्य उनकी आवयकताओं की सन्तुष्टि होता है। सामाजिक सामूहिक कार्य संस्थाएँ किसी व्यक्ति को अपने कार्यक्रम में भाग लेने के लिए बाध्य नहीं करतीं। उनको केवल उद्देश्यों, कार्यक्रम में भाग लेने अवगत करा देतीं हैं। व्यक्ति यदि उचित समझता है और उसके अहम की सन्तुष्टि होती है, तो वह भाग लेता है अन्यथा नहीं। भाग लेने की दर तथा स्थिति में अन्तर होता है। कुछ लोग अस्थायी रूप से संस्था के सदस्य बनते हैं तथा कुछ स्थयी रूप से भाग लेती हैं, लेकिन संस्था की सेवा बिना दबाव या बाध्यता के प्रदान की जाती है।

3. सामाजिक संस्थाएँ व्यक्तायों के लिए समूहों द्वारा कार्य सम्पादित करती हैं अर्थात् समूह द्वारा ही व्यक्ति सेवा प्राप्त करते हैं। समूह ही वह साधन है जिसके माध्यम से संस्था अपने कार्यों को व्यक्तियों तक पहुँचाती है। सेवा की मुख्य इकाई समूह होता है। वह व्यक्तियों के लिए संस्था से सम्पर्क करने का प्राथमिक साधन है। समूहों में भी अन्तर होता है। उनके उद्देश्य, संगठन, तरीके तथा ध्येय भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, परन्तु प्रत्येक संस्था सामूहिक भागीकरण पर विशेष जोर देती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योकि संस्थाओं का दर्शन व्यक्ति विकास को सामूहिक अनुभव द्वारा प्रात करता है अर्थात् सेस्था का विश्वास है कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सामाजिक एवं सामूहिक अनुभवों पर निर्भर होता है।

4. सामाजिक संस्थाएँ समूह के साथ अनौपचारिक रूप से कामकरती हैं। समूह सदस्यों तथा सामूहिक कार्यकर्ता के मध्य संबंध स्थापित होते हैं। चूँकि ऐच्छिक की प्रधानता होती है, अत: ये संबंध उद्देश्यपूर्ण होते हैं और धीरे-धीरे इनमें प्रगाढ़ता आती है तथा उद्देश्य पूर्ति के लिए आवश्यक कारण बन जाते हैं। आपसी संबंध के द्वारा ही समूह अपनी क्रियाओं की सदस्यों तक पहुँचाते है। तथा उन्हें लाभान्वित करते हैं। यह सदस्य की इच्छा पर निर्भर होता है कि समूह के साथ किस सीमा तक संबंध स्थापित करे। चूंकि इससे स्वयं उनकी आवश्यकताओं की संतुष्टि होती है, अत: वे इन संबंधों में घनिष्ठता लाते रहते हैं।

5. सामाजिक समूहिक कार्य अधिकांशत: उस समय किया जाता है जब व्यक्ति आर्थिक तथा अन्य क्रियाओं से निवृत्त होता है। अत: इस प्रकार की सेवाएँ मनोरंजनात्मक सेवाएँ समझी जाती हैं, उद्यपि इनका अर्थ व्यक्तियों के लिए भिन्न-भिन्न हाकता है।

6. सामाजिक संस्थाओं में दो प्रकार के अधिकारी होते है- एक ता वे जो संस्था के वेतन भोगी होते हैं तथा दूसरे वे जो ऐच्छिक कार्यकर्ता होते हैं। यद्यपि प्रत्येक संस्था कुछ सीमा तक ऐच्छिक प्रयत्नों पर निर्भर होती हैं, परन्तु सामाजिक सामूहिक कार्य की संस्थाएँ मुख्य रूप से ऐच्छिक प्रयत्नों पर बल देती हैं।

7. इन संस्थाओं में व्यक्तिगत, सहयोगिक तथा संयुक्त प्रयत्न पर जोर दिया जाता है।

8. सामाजिक संस्थाएँ वैसे तो वर्तमान उपयोग के लिए सेवाएँ प्रदान करती तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं, लेकिन दीर्घकालीन उद्देश्य, भविष्य निर्माण करना होता है।

सामाजिक कार्य में संस्था के अंग (Organs of Institutions in Social Work) - संस्था के चार मुख्य अंग हैं- 1. बोर्ड समूह, 2. कर्मचारी समूह, 3, सेवार्थी समूह, और 4. सामूदायिक समूह।

मोटे तौर पर इनका संगठन निम्नांकित है-

1. बोर्ड समूह

अधिकारी समिति।
वित्त समिति।
कार्यक्रम समिति।
जनसम्पर्क समिति।
व्यावसायिक सलाहकार समिति।
वैयक्तिक कार्य समिति।

सामूहिक कार्य समिति।
स्वास्थ्य समिति।

2. कर्मचारी समूह

पूरे समूह के व्यवसायिक कर्मचारीगण -
वैयक्तिक सेवा कार्य से संबंधित कर्मचारी।
सामूहिक कार्य से संबंधित कर्मचारी।
ऐच्छिक कार्यकर्ता -
सामूहिक कार्य के ऐच्छिक कार्यकर्ता।
ऐच्छिक चिकित्सक।
लिपिक कर्मचारी।
मेन्टीनेन्स कर्मचारी।

3. सेवार्थी समूह

वैयक्तिक सेवा चाहने वाले सेवार्थी।
सामूहिक कार्य सेवा चाहने वाले सेवार्थी।

4. सामुदायिक समूह - यह वह समूह है जिसके लिए संस्था का संगठन किया जाता है, जैसे - अस्पताल में रोगी समूह, जेल में अपराधी समूह इत्यादि।

सामाजिक समूह कार्य में संस्था की भूमिका (Role of institution in Social Group Work) - सामूहिक कार्यकर्ता के लिए संस्था के कार्य वे सकारात्मक क्षेत्र हैं जिनका उपयोग वह समूहों के साथ अपने कार्य में करता है। इससे कार्यकर्ता को कार्य का स्पष्ट ज्ञान होता है, तथा अन्य अवयवों और इकाइयों की जानकारी होती है समूह सदस्यों तथा कार्यकर्ता में हताशा की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है। परिणामों का मूल्यांकन ठीक प्रकार से होता है लेकिन संस्था के कार्यों में गतिशीलता होनी चाहिए। जैसे - जैसे सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन हो, उसी प्रकार संस्था के कार्यों में भी परिवर्तन हो, अन्यथा संस्था समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ नहीं हो सकेगी। अत: संस्था को नियमानुसार परिवर्तन करने की क्षमता अवश्य होनी चहिए।

संस्था समूह का निम्न सेवाएँ प्रदान करती है-

1. संस्था का मुख्य कार्य समूहों को इस तथ्य से अवगत कराना होता है कि वे क्यों संगठित किऐ गए हैं तथा किस दिशा में कार्य के लिए प्रयत्नशील होंगे। स्पष्ट उद्देश्यों का ज्ञान होना न केवल समूहों के लिउ लाभप्रद होता है बल्कि इससे संस्था को भी सहायता मिलती है।

2. संस्था समूह को जीवन के मूल्य, विश्वाास तथा दर्शन समझाती है जिसका ज्ञान लम्बे अनुभव के पश्चात् होता है। इसका तात्पर्य यह है कि सामूहिक कार्य

को सम्पन्न करने में किन-किन मूल्यों को ध्यान में रखना होगा, उसका दर्शन क्या होगा, तथा किन विश्वासों पर कार्य होगा। ये सभी आवश्यक तत्व मानवतावादी विचार पर आधारित होते हैं।

3. समूह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति अनेक माध्यमों से करते हैं। ड्रामा, खेलकूद, वार्तालाप कक्षाएँ, व्यावसायिक प्रशिक्षण इत्यादि अनेक माध्यम होते हैं। कार्यप्रणाली की उपलब्धि के अनेक यंत्रों की आवश्यकता होती है। संस्था कार्यक्रम से संबंधित सामग्री का प्रबन्ध करती है। इसके अतिरिक्त संस्था कार्यक्रमों का भी निर्धारण करती है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि संस्था समूहों को इस बात से अवगत करोती है कि कार्यक्रम का स्वरूप किस प्रकार हो सकता है। तथा सेवार्थियों के लिए वह कैसे लाभप्रद होगा। वह उच्च स्तर के कार्यक्रमों के निर्धारण की सलाह देती है जो समूह समुदाय तथा समाज के लिए मूल्यवान होते हैं।

4. संस्था उन कार्यक्रमों को सम्पादित करती है जो समूह को सहायता करने के लिए तैयार होते हैं, क्योंकि उनके बिना व्यावसायिक सेवा असम्भव है। सामाजिक सामूहक कार्यकर्ता संस्था का कर्मचारी होता है। वह व्यावसायिक ज्ञान, निपुणता सिद्धान्त, प्रविधि आदि का उपयोग समूह के साथ करता है। समूह के लिए कार्यकर्ता का होना अत्यन्त आवश्यक होता है, क्योकि समूह जिन उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहता है, उनको प्राप्त करने में व्यावसायिक कार्यकर्ता ही सहायता कर सकता है।

5. समूह की मान्यता के लिए समुदाय की स्वीकृति अवश्यक होती है। जब तक किसी सेवा के लिए समुदाय तैयार नहीं होगा, उसका प्रारम्भ ही नहीं किया जा सकता। इसमें अतिरिक्त स्तर को मूल्यवान बनाने के लिए भी समर्थन आवश्यक होता है।

6. संस्था नियंत्रित पर्यावरण संबंधी स्थिति प्रदान करती है जिसमें समूहों को कार्य करने का सुअवसर प्राप्त होता है।

7. यह वह तरीका प्रदान करती है सिका पूर्व परीक्षण हो चुका होता है, इस प्रकार समूह संगठनात्मक दुष्परिणामों से बचा रहता है।

अध्याय 12

सामाजिक समूह कार्य में टीम नर्माण (Team Building in Social Group Work)

सामाजिक संस्थाओं में उन समूहों के साथ सामूहिक समाज कार्य के तरीके का उपयोग किया जा सकता है जो व्यक्तियों की मान्य आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए संगठित किए जाते हैं और वे इस प्रकार से संगठित होते हैं जिससे उनके सदस्य अपने उत्तरदायित्व को अधिकाधिक रूप से स्वीार करते हैं तथा उत्तरदायित्व पूरा करने के लिए मानसिक, सांवेगिक तथा शारीरिक रूप से तत्पर होते हैं। सामूहिक समाज कार्य के समूह की विशेषताओं पर ही निर्भर नहीं होता है, कार्यकर्ता तथा संस्था भी आवश्यक कारक है।

प्रारंभिक अवस्था में समूह के लिए संगठन बहुत ही सरल तथा औपचारिक होना चाहिए समूह की संरचना सदस्यों की आवश्यकताों तथा रूचियों पर आधारित होनी चाहिए, तभी वे समूह के साथ अपनापन महसूस करेंगे तथा कार्यक्रम को अपना कार्यक्रम समझेंगे। धीरे-धीरे संगठन जटिल होता जाएगा तथा सामूहिक समाज कार्य-प्रणाली का उपयोग बढ़ता जाएगा।

कार्यक्रम प्रारंभिक अवस्था में समूह-सदस्यों को केवल मनोवैज्ञानिक आधार पर समूह के समझने में सहायता करता है। मुख्य रूप से यदि संस्था तथा कार्यकर्ताओं का उद्देश्य समूह को आत्म-कार्यात्मक बनने में सहायता करना है तो सामूहिक समाज कार्य-प्रणाली का उपयोग किया जाता है।

टीम निर्माण के विभिन्न स्तर (Different Levels in Team Building)- एक समूह एक गतिशील इकाई हैं। इनमें निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। कार्यकर्ता समूह-सदस्यों की इच्छाओं एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्यक्रमों का आयोजन करता है जिससे वे उद्देश्य प्राप्त करने की दिशा में प्रयास करते हैं। अत: समूह कई स्तरों से गुजरता है। कार्यकर्ता समूह के साथ वर्तमान विकास के स्तर में कार्य प्रारंभ करता है तथा समूह की इच्छाओं व योग्यताओं के मधुर संबंधों के आधार पर तीव्र गति सें आगे बढ़ता है।

समूह विकास के स्तर होते हैं -

(1) प्रारंभिक स्थिति में प्रथम बार व्यक्ति एक साथ एकत्रित होते हैं।

(2) दूसरी अवस्था में सदस्यों में कुछ सामूहिक भावना का विकास होता है संगठन का रूप निश्चित होता है तथा कार्यक्रम निश्चित किए जाते हैं।

(3) शर्तों एवं नियमों का विकास होता है, उद्देश्य विकसित होते हैं तथा घनिष्ठता बढ़ती है।

(4) घनिष्ठ सामूहिक भावना का विकास होता है तथा उद्देश्य की प्राप्ति होती है।

(5) रूचियों में कमी आ जाती है तथा सामूहिक भावना में भी कमी आती है।

(6) अन्त में समाप्ति का स्तर आता है और सूह को विघटित कर दिया जाता है।

सामाजिक समूह कार्य में टीम निमार्ण की भूमिका (Role of Team Building in Social Group Work) -

(1) मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना - प्रारंभ में सामूहिक समाज कार्य मनुष्य की आर्थिक आवश्यकताओं से संबधित था। वे ही क्रियाएँ न्यायोचित समझी जाती थीं जिनसे समूह की आर्थिक समस्या का समाधान होता था। परन्त धीरे-धीरे अनुभव किया जाने लगा कि अन्य आवश्यकताएँ भी महत्वपूर्ण हैं और उनकी पूर्ति भी उतनी ही आवश्यक हैं, जैसे-प्रेम की आवश्यकता, सुरक्षित महसूस करने की आवश्यकता तथा प्रसन्नता प्राप्त करने की आवश्यकता आदि।

(2) स्वीकृति प्रदान करना - प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसे समूह में, समाज में स्वीकृत किया जाए, उसे उचित स्थान मिले और कार्य करने के उचित अवसर देकर समाज उसे अंगीकार करे। जब समाज और समूह किसी व्यक्ति की स्वीकृति प्रदान नहीं करते तो वह अपना मानसिक संतुलन खो देता है जिससे वह समाज-विरोधी गतिविधियों का शिकार हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह समाज की नियम कानून इत्यादि की परवाह किए बिना अपनी इच्छा पूर्ति के लिए अवैध और अनूचित ढंग अपनाता है। वह अनेक प्रकार के मानसिक रोगों का शिकार हो जाता है।

डॉ॰ नाथन ऐकमेन तथा मेरी जोहोडा **(Dr. Nathan Ackerman and Maree Johoda)** ने मनोविश्लेषण तथा अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि रोगियों में आत्मसम्मान की कमी होती है और वे एकांतता से पीकडत होते हैं। वे स्वयं अपने स्वीकृत करते और दूसरों से रूष्ट होते हैं।

सामूहिक समाज कार्य में व्यक्ति को उचित स्थान प्रदान किया जाता है। समूह में संबंध स्थापित होते हैं और समूह के सदस्य परस्पर एक-दूसरे को इसका आवश्यक अंग समझते हैं। इसीलिए उन रोगियों को समूह से अधिक लाभ होता है जो मानसिक समस्याओं से ग्रस्त होते हैं।

(3) आत्मनिर्भरता का विकास करना-आत्म निर्भरता भी व्यक्ति के विकास लिए आवश्यक है। जब तक वह स्वयं अपना कार्य नहीं कर सकता या उसके समान होने के बारे में कोई निर्णय नहीं ले सकेगा, तब तक व्यक्ति अपना विकास नहीं कर सकता। सामूहिक कार्य में व्यक्ति को इस क्षमता के विकास के लिए उचित अवसर प्राप्त होता है। उसे अपना कार्य पाने से लेकर इसकी पूर्ति का निर्णय होने तक पूर्ण स्वतंत्रता रहती है। समूह के लिए वह अपनी क्षमताओं का खुलकर प्रयोग कर सकता है और उनका विकास कर सकता है।

(4) सामंजस्य स्थापित करना - व्यक्ति समूह में रहता है तथा उसी का इच्छानुसार कार्य करता है। अत: समाज के साथ सामंजस्य होना नितान्त आवश्यक होता है। सामूहिक अनुभव के द्वारा व्यक्ति को सामंजस्य स्थापित करने की कुशलता प्राप्त होती है। सामूहिक कार्य द्वारा कार्यकर्ता व्यक्ति की उन कमियों का पता लगाता है जिसके कारण सामंजस्य स्थापित करने में विफल होता है। ये कारण निम्न हो सकते हैं-

1. व्यक्ति मेंबहुत अधिक शासन करने की इच्छा होती है।
2. व्यक्ति का निष्क्रिय होना तथा अपनी स्थिति को अस्वीकार करना।
3. दूसरे पर निर्भर होने की प्रवृत्ति।
4. अपने उत्तरदायित्व को पूरा न कर पाना।
5. प्रत्युत्तर का नकारात्मक होना।
6. दूसरों की सत्ता को स्वीकार ना करना।
7. केवल अपने एि ही साधनों का प्रयोग करना।
8. काल्पनिक लोक में विचरण करना।

सामूहिक समाज कार्य द्वारा व्यक्ति की इन कमियों को दूर कर सामान्य गुणों का विकास किया जाता है। सामूहिक समाज कार्यकर्ता समूह के अनुभव एवं कार्यक्रमों द्वारा व्यक्ति का समूह के साथ सामंजस्य स्थापित करता है और इस प्रकार व्यक्ति समाज में सामंजस्य स्थापित करने में सफल होता है।

(5) समग्र का भाग होने की इच्छा पूर्ति करना - व्यक्ति की सदैव यह इच्छा रहती है कि वह समाज का एक आवश्यक अंग बन सके और उसकी क्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग ले सके। सामूहिक समाज कार्य-अनुभव द्वारा वह इस समग्र का भाग पहले बनता है जिसका कि वह यह रूप है और धीरे-धीरे उसकी महत्ता प्राप्त करने की इच्छा की पूर्ति होती है।

(6) आत्मविश्वास का विकास करना- व्यक्ति में आत्मविश्वास का होना अति आवश्यक है। इसके बिना न ता स्वयं कोई कार्य कर सकता है और न जोखिम उठाने के लिए तैयार हो सकता है। सामूहिक समाज कार्य द्वारा व्यक्तियों में इस गुण

का विकास किया जाता है। जब समूह के प्रत्येक सदस्य को अलग-अलग कार्य प्रदान किया जाता है तो उसे पूर्ण करने की क्षमता उसमें स्वत: विकसित होने लगती है और आत्मविश्वास पैदा हाने लगता है। यह केवल अनुभव के द्वारा होता है।

(7) व्यक्ति को हत्व देना-प्रत्येक व्यक्ति की यह आन्तरिक इच्छा रहती है कि उसका कुछ महत्व हो और वह भी समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करे। इच्छा की पूर्ति समूह में रहकर तथा संबंधों के स्थापित होने पर ही संभव है। यह समस्या वृद्धावस्था में और भी जटिल हो जाती है। बच्चों के साथ भी यह समस्या रहती है। परिवार में उचित स्थान न पाने से बच्चे असामाजिक व्यवहार करने लगते हैं सामूहिक समाज कार्य द्वारा बच्चों की विरोधी शक्तियों, शंका और डर की भावनाओं को स्पष्ट किया जाता है और रचनात्मक भावानाओं का विकास किया जाता है। प्रत्येक सदस्य का कार्य अलग-अलग होता है। व्यक्ति में आम्तविश्वास की भावना जाग्रत होती है।

(8) व्यक्तित्व का विकास करना - व्यक्ति पर पर्यावरण एवं वंशानुक्रमण दोनों का प्रभाव पडता है। जीवन के प्रारंभिक समय में वंशानुक्रमण का प्रभाव अधिक पड़ता है, परन्तु बाद में पर्यावरण ही व्यक्ति के विकास में अपना प्रभाव डालता है। सामूहिक समाज कार्य का मूल उद्देश्य व्यथ्क के लिए अवसर उपलब्ध कराना होता है जिससे उसके व्यक्तित्व का सर्वोत्तम विकास हो सके।

(9) प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास करना - समानता-समा अवसर, स्वतंत्रता तथा उन्नति के समान अवसर प्रजातंत्र के मूलभूत सिद्धांत हैं। सामूहिक समाज कार्य में इन सभी सिद्धांतों क प्रयोग किया जाता है। समूह में सदस्यों को भाग लेने के अवसर मिलते हैं। स्वयं को निर्णय लेने का अधिकार भी होता है। कार्यक्रम को सम्पन्न करने की विधि की भी स्वतंत्रता हांती है। विकास का मार्ग केवल समूह कार्यकर्ता द्वारा निर्देशित होता है।

(10) मनोसामाजिक समस्याओं को दूर करना - सामूहिक समाज कार्य का प्रयोग मानसिक रोगियों के साथ भी किया जाता है। समूह में केवल वे ही सदस्य भाग लेते हैं जो मनोसामाजिक समस्याओं से ग्रसित होते हैं, लोगों में मिल नहीं सकते या विमुख रहते हैं। सामूहिक समाज कार्यकर्ता उनमें मैत्रीपूर्ण सद्भावना का विकास करता है। परस्पर निर्भर क्रियाओं में रोगी अपने को सुरक्षित महसूस करता है। जब वह यह देखता है कि उससे भी अधिक लोग पीडित हैं तो उसे कुछ संतोष मिलता है। वह यह अनुभव करता है कि उसकी कठनाइयाँ उसकी असफलताओं के कारण ही नहीं हैं। रोगी में ऐसी भावना उत्पन्न हो जाने पर उसमे समूह से संबंध स्थापित करने की इच्छा जागृत होती है तथा चिन्ताएँ कम होती हैं। उसमें आत्मविश्वास का विकास होता है और समस्याओं में कमी आती है।

कुपोषण

कुपोषण शरीर की ऐसी कमजोर अवस्था है जब मानव शरीर को नियमित समय अनुसार सन्तुलित व पौष्टिक आहार नहीं मिल पाता ऐसी अवस्था में शरीरिक कमजोरी बढ़ जाती है और रोगों से लडने की शक्ति कम हो जाती है। ऐसी अवस्था का पाया जाना कुपोषण कहलाता है। साधारण शब्दों में, पूर्णरूप से सन्तुलित आहार न मिलने से पैदा हुए शारीरिक विकार को ही कुपोषण का नाम दिया जाता है। प्राय: अज्ञानता तथा असावधानी के कारण नए जन्म बच्चे से लेकर नौ साल के बच्चे तक कुपोषण का शिकार हो जाते हैं। इसका दुश्प्रभाव बच्चों के वजन व लम्बाई पर पडता है। आज भारत की जनसंख्या प्रतिदिन बढती जा रही है जिस कारण हमारे देश के बच्चों में अल्प पोषण की समस्या बढती जा रही हैं हमारे देश में प्रतिदिन कई बच्चों को पेट भर भोजन नही मिल पाता। कुपोषण व अल्पपोषण के कई विशेष कारण है जैसा अज्ञानता अनपढता, निर्धनता, भोजन सम्बन्धीा चुनाव, भोजन सम्बन्धी अनियमितता तथा धार्मिक प्रवृति आदि।

इन सभी कारणों का वर्णन इस प्रकार हैं :-

1 अज्ञानता तथा अनपढता :- भारत वर्श में 70 प्रतिशत लोग गांवों में निवास करते है और उनका गुजारा प्राय: मजदूरी व खेतीबाडी से होता है। इस कारण यह लोग अशिक्षित व अज्ञानी रह जाते है। इन्हें इस बात का ज्ञान नहीं होता कि सन्तुलित आहार किसे कहा जाता है । पेट भरने के लिये उन्हें जैसा भोजन मिल पाता है वे खाकर गुजारा कर लेते हैं। फलस्वरूप उनका शरीरिक व मानसिक विकास पूरी तरह से नहीं हो पाता ओर वें कुपोषण का शिकार हो जाते हैं। उचित पोषण के अभाव में बच्चों की रोगों से लडने की क्षमता में कमी आने के कारण उत्पन्न विकार कुपोषण कहलाता है।

2 गरीबी :- गरीबी के कारण भी आम आदमी बच्चों के शारीरिक व मानसिक क्रियाओं के लिये बच्चों को पोशक तत्वों से भरपूर भोजन नही खिला पाता और गरीबी के कारण ही उपयुक्त मात्रा में भोजन न मिलने के कारण अधिकतर बच्चे कुपोषण का शिकार हो जाते हैं। गर्भावस्था के दौरान माताओं के भोजन में आवश्यक पोषण की कमी से बच्चे की वृद्धि, विकास में असमानता कुपोषण कहलाती है।

3 भोजन सम्बन्धि चुनाव :- आजकल बच्चे फास्ट फूड की तरफ बढते जा रहे हैं। समय इतना तेजी से चल रहा है कि किसी आदमी के पास धन कमाने के अलावा कुछ ओर सोचने का समय नहीं है। इसके फलस्वरूप वह अपने शारीरिक विकास के लिये भोजन का सही चुनाव नहीं कर पाते। कम समय में जो भी भोजन उन्हें मिल जाये वे उसी से गुजारा करते है। आधुनिकता की होड में माता-पिता भी बच्चों को वही खिलाना पसन्द करते है जो आजकल प्रचलित है। उन्हें अच्छा व पौष्टिक आहार खाने की आदत नहीं डाली जाती फलस्वरूप कुपोषण उनके उपर सिर चढ कर बोलने लगता है।

4 अनियमित रूप से भोजन का सेवन :- जरूरत से ज्यादा व कम भोजन भी कुपोषण का कारण है। ज्यादा भोजन मोटापे का कारण बनता है इससे पाचन क्रिया बिगड जाती है शरीर में कई विकार पैदा हो जाते है। जरूरत से कम भोजन का सेवन भी हानिकारक होता है। पौष्टिक तत्वों की कमी के कारण शरीर में खून की कमी हो जाती है बच्चा कई बिमारियों का शिकार हो जाता है।

5 धर्मिक अन्धविश्वास :- कई बार धार्मिक अन्धविश्वास भी इस रोग का कारण बन जाता है। कुछ लोगों में मांस, मछली व मांसाहारी भोजन का सेवन करना बुरा माना जाता है परन्तु अल्पज्ञान के कारण उन पौष्टिक तत्वों का जो कि मांसाहारी भोजन में पाए जाते हैं वे दूसरे भोजन से उनकी भरपाई नहीं कर पाते जिस कारण ऐसे परिवार पोषक तत्वों से वंचित रह जाते है ओर कुपोषण का शिकार हो जाते हैं।

कुपोषण के लक्षण/स्वास्थ्य पर पडने वाले प्रभाव

1 मांस की मात्रा में कमी और वजन में गिरावट :- कुपोषण के कारण मानव शरीर का भार कम होने लगता है और शरीरिक कमजोरी बढती जाती है।

2 शारीरिक और मानसिक थकान :- कुपोषण के कारण व्यक्ति का शरीर कमजोर हो जाता है जिस कारण वह कोई भी कार्य ज्यादा समय तक नहीं कर सकता। उसे थकावट अनुभव होने लगती है। इस प्रकार कुपोषण से पीडित व्यक्ति की शारीरिक व मानसिक थकावट जल्दी होने लगती है।

3 शरीरिक बनावट का बदलना :- कुपोषण से ग्रस्त व्यक्ति की बैठने और खडा होने की मुद्रा बिगड जाती है जिसके परिणामस्वरूप शरीर में कई प्रकार के रोग हो जाते है और उचित विकास रूक जाता है।

4 एकाग्रता का अभाव :- कुपोषण से व्यक्ति की एकाग्रता में कमी आ जाती है वह ध्यानाचित होकर कार्य नहीं कर पाता। वह बेचेनी, घबराहट, अनिद्रा, चिन्ता, खून की कमी आदि समस्याओं का शिकार और क्रान्तिहीन हो जाता है।

5 रोगों से लडने की क्षमता कम होना :- कुपोषण के कारण व्यक्ति में आन्तरिक व बाहरी रोगों से लडने की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए वह वातावरण से प्रभावित होकर मोसमी बिमारियां जैसे जुखाम, सिर दर्द, खांसी, भारीपन, आदि बिमारियों का जल्दी शिकार हो जाता है।

6 शारीरिक विकार उत्पन्न होना :- कुपोषण के कारण शरीर में कई बिकार पैदा हो जाते है जिससे दांत व आंख कमजोर होने लगती है।

7 आलस्य का अनुभव :- कुपोषण से ग्रस्त व्यक्ति उसे अपने शरीर में आलस्य का अनुभव होने लगता है।

8 हड्डियों तथा मांसपेशियों पर प्रभाव :- कुपोषण के कारण शरीर का रंग पीला पड जाता है और मांसपेशियां ढीली हो जाती है। हड्डियां कमजोर होने के कारण टेढी-मेढी हो जाती है।

9 शारीरिक और मानसिक विकास :- कुपोषण के कारण व्यक्ति बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है। उसका शारीरिक और मानसिक विकास भी उचित ढंग से नहीं हो पाता।

10 संदवेनशील होना :- कुपोषण के परिणामस्वरूप व्यक्ति छोटी-छोटी बातों के लिये भी संवेदनशील प्रवृति का हो जाता है।

'कुपोषण दूर करने के उपाय'

कुपोषण को दूर करने के उपाय इस प्रकार है :-

1 माता-पिता को शिक्षित करना :- कुपोशण जैसे विकार को दूर करने के लिये यह अत्यन्त जरूरी है कि माता-पिता पूर्णत: शिक्षित हो जिससे वे इस विकार से बाहर आकर पौष्टिक आहार के महत्व को समझकर अपना तथा बच्चों के स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान दे सकें। इसके लिये उन्हें विशेष क्लासों का प्रयोग करना चाहिए जहां उन्हें रेडियों, फिल्मों, चार्ट व पिक्चर के माध्यम से पौष्टिक व सन्तुलित आहार के बारे में बताया जाये।

2 स्वास्थ्य परीक्षण :- कुपोषण से बचने के लिये हमें समय-समय पर अपनी व बच्चों के स्वास्थ्य सम्बन्धि जांच करवानी चाहिए जिससे उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जानकारी प्राप्त होती रहे।

3 स्वास्थ्य सम्बन्धी स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा भाषण, सैमिनार :- हमें कुपोषण से बचने के लिये स्वयं व अपने बच्चों को ऐसे भाषण प्रोग्राम व सेमीनार में लेकर जरूर जाना चाहिए जहां पर स्वास्थ्य विशेषज्ञों व डॉक्टरों द्वारा कुपोषण से बचने के उपाय बताएं जाते है। उन्हें इस बात का ज्ञान अवश्य करवाना चाहिए कि हमारे आहार में पदार्थो व तत्वों का महत्व अधिक है।

4 दोपहर का भोजन :- दोपहर के समय का भोजन वह भोजन है जो स्कूलों द्वारा आधी छुट्टी में दिया जाता है इसलिए स्कूलों में बच्चों को सन्तुलित भोजन देने की व्यवस्था होनी चाहिए। कुछ बच्चे स्कूल से घर की दूरी अधिक होने के कारण आधी छुट्टी का भोजन साथ नहीं ला पाते और जो ला पाते है उनका भोजन संन्तुलित नहीं होता। फलस्वरूप भूख के कारण सिरदर्द, चक्कर आना, खून की कमी जैसे विकार पैदा हो जाते है। इसके लिये स्कूलों में ही सन्तुलित भोजन की व्यवस्था होनी चाहिए।

5 सफाई सम्बन्धी ज्ञान :- स्कूल में सभी अध्यापकों द्वारा बच्चों को शारीरिक बिमारियों से बचने के लिये सफाई व स्वच्छता का ज्ञान देना चाहिए जैसे हाथ धोना इत्यादि। अध्यापक द्वारा बच्चों को इस बात का ज्ञान देना चाहिए कि घरों में पडा खाना दूषित हो जाने पर हैजा, डायरिया जैसी बिमारियों का कारण बनता है। इसलिए हमेशा ढका हुआ साफ सुथरा भोजन ही खाना चाहिए।

6 भोजन नियमित समय पर लेना :- हमेशा भोजन सम्बन्धि आदतों में इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि हमें भोजन ठीक समय पर करना चाहिए। हमारा भोजन सादा, साफ और मिर्च मसालों से रहित होना चाहिए। कुपोषण जैसे विकार से बचने के लिए हमें भोजन में अनाज, दाल, दूध, हरी सब्जियां चीनी, गुड आदि से बना सन्तुलित भोजन ही करना चाहिए।

7 अच्छे भोजन पर बल :- हमें व हमारे बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य के लिये इस बात पर विशेष बल देना चाहिए कि हमारा दैनिक आहार सन्तुलित और ठीक प्रकार से बनाया गया स्वादिष्ट हो। हमें ऐसा भोजन करना चाहिए जिसमें सभी महत्वपूर्ण तत्व शामिल हों।

विटामिन

1विटामिन A

रोग : रंतौधी (स्वश्न तंत्र कमजोर होना)

लक्षण : 1 आँखों में धुंधलापन

2त्वचा का खुश्क होना

बचाव : दुध, मक्खन, हरी सब्जियाँ

2 विटामिन B

रोग : वेरी-वेरी (हृदय रोग)

लक्षण : 1 हड्डियों का कमजोर होना।

2 कार्य करने की क्षमता कम होना ।

बचाव : दाल, चावल, बादाम, अण्डे, खमीर, सब्जियाँ, अनाज

3 विटामिन C

रोग : स्कर्तो

लक्षण : 1 दांत व मंसूडों का कमजोर होना।
2 शरीर में अकडन व जोडों में दर्द होना या शरीर में दाग धब्बे पडना।

बचाव : नांरगी, खट्टे पदार्थ, फल, खरबूजा, आलू, स्टोब्रेरी

4 विटामिन D

रोग : रिकेट्स (पीलीया)

लक्षण : 1 हड्डिया का कमजोर होना।
2 रक्त चाप बढना, खून में कोलेस्ट्राल का अधिक होना

बचाव : अण्डे का पीला भाग, मछली का तेल, धुप की सिकाई

5 विटामिन E

रोग : एनिमिया (बालो का झडना)

लक्षण : 1खून की कमी होना, पेट में कीडे होना

बचाव : गाजर, चुकन्दर, सेब, दूध, अनार, काजू।

6 विटामिन K

रोग : रूधिर का थक्का (रक्त से संबन्धित रोग)

लक्षण : 1 घाव का जल्दी ठीक न होना
खाया पीया भोजन न पचना

बचाव : मांस, दूध, दही, पनीर, अनाज, सब्जियाँ

7 प्रोटीन की कमी से

रोग : क्वासीयोरकर मरासमस

लक्षण : 1 पैरों का कमजोर होना, पेट का बाहर निकलना
ताप व ऊर्जा में कमी आना

बचाव : मांस, मछली, अण्डे, दूध, मेवे, दाल, फल, सोयाबीन

AEOI